पैसा आधारित ऑनलाइन गेम गंभीर सामाजिक मुद्दा : वैष्णव
-12

जीएसटी सुधारों पर राज्यों से बनाएंगे आम सहमति
- 12

रूस ने दिलाया भरोसा, भारत पर ट्रंप के लगाए प्रतिबंधों से निपटने में सक्षम
- 13

सौरभ चौधरी और सुरुचि इंदर सिंह की जोड़ी ने जीता कांस्य
- 14

आज का मौसम

33.5⁰ अधिकतम तापमान

25.5⁰ न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 05.44

सूर्यास्त 06.40

अमृत विचार

अयोध्या

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

भाद्रपद कृष्ण पक्ष त्रयोदशी 12:45 उपरांत चतुर्दशी विक्रम संवत 2082

गुरुवार, 21 अगस्त 2025, वर्ष 4, अंक 9, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 6 रुपये

ब्रीफ न्यूज

मोदी करेंगे विकास कार्यों का लोकार्पण

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शुक्रवार को बिहार और पश्चिम बंगाल का दौरा करेंगे और 18,200 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास करेंगे। प्रधानमंत्री कार्यालय के अनुसार मोदी शुक्रवार को सुबह लगभग 11 बजे बिहार के गया में आयोजित कार्यक्रम में लगभग 13,000 करोड़ रुपये की कई विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन करेंगे। उसी दिन शाम को कोलकाता में नवनिर्मित खंडों पर मेट्रो ट्रेन सेवाओं को हरी झंडी दिखाएंगे। कोलकाता में 5,200 करोड़ रुपये से अधिक की कई विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन करेंगे।

29 इनामी नक्सलियों ने किया आत्मसमर्पण

दंतेवाड़ा। छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा और नारायणपुर जिलों में बुधवार को 55 .5 लाख के इनामी 29 नक्सलियों ने पुलिस व सुरक्षा बलों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। दंतेवाड़ा जिले में 21 नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया। इनमें से 13 पर कुल 25 लाख 50 हजार का इनाम घोषित था। सभी आत्मसर्पित माओवादी अपने-अपने क्षेत्र में नक्सली बंद सप्ताह के दौरान रोड खोदना, पेड़ काटना, नक्सली बैनर, पोस्टर एवं पाम्प्लेट लगाने जैसी घटनाओं में शामिल रहे हैं। वहीं बस्तर अंचल में कुल 30 लाख के इनामी आठ नक्सलियों ने बुधवार को पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण किया। इनमें छह पुरुष और दो महिला शामिल हैं।

सज्जन की याचिका पर 24 सितंबर को सुनवाई

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने 1984 के सिख विरोधी दंगों के मामले में सुनाई गई सजा के खिलाफ कांग्रेस के पूर्व नेता सज्जन कुमार और पार्टी के पूर्व पार्षद बलवान खोखर द्वारा दायर याचिकाओं पर सुनवाई 24 सितंबर तक के लिए स्थगित कर दी। न्यायमूर्ति जे .के . माहेश्वरी और न्यायमूर्ति विजय बिश्नोई की पीठ ने बुधवार को मामले की सुनवाई टाल दी क्योंकि सीबीआई की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता पेश नहीं हो सके। जुलाई 2024 में उच्चतम न्यायालय ने सीबीआई से खोखर की राहत के अनुरोध वाली याचिका पर जवाब देने को कहा था। दिल्ली हाईकोर्ट ने 2018 में खोखर की उम्रकैद बरकरार रखी थी।

गंभीर अपराधों में पीएम-सीएम को हटाने का विधेयक लोस में पेश, जेपीसी को भेजा

विपक्षी दलों के सदस्यों ने किया सदन में हंगामा, गृहमंत्री शाह पर फेंके कागज

नई दिल्ली, एजेंसी

लोकसभा ने बुधवार को दूरगामी परिणामों वाले एक संविधान संशोधन विधेयक समेत तीन विधेयकों को संसद की संयुक्त समिति को विचारार्थ भेज दिया। इन विधेयकों को पेश किए जाने और अन्य मुद्दों पर विपक्षी दलों के सदस्यों के हंगामे के बीच सदन की बैठक चार बार के स्थगन के बाद गुरुवार 11 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने विपक्ष के विरोध और हंगामे के बीच सदन में संविधान (130वां संशोधन) विधेयक, 2025, संघ राज्य क्षेत्र शासन (संशोधन) विधेयक, 2025 और जम्मू कश्मीर पुनर्गठन (संशोधन) विधेयक 2025 पेश किए। बाद में उनके प्रस्ताव पर सदन ने तीनों विधेयकों को संसद की संयुक्त समिति को भेजने का निर्णय लिया। समिति में लोकसभा के 21 और राज्यसभा के 10 सदस्य होंगे और यह अपनी रिपोर्ट अगले संसद सत्र के प्रथम सप्ताह के अंतिम दिन तक पेश करेगी। संविधान (130वां संशोधन) विधेयक, 2025 में प्रधानमंत्री, मंत्रियों और मुख्यमंत्रियों को गंभीर अपराध के आरोपों में पद से हटाने का प्रावधान है। विपक्ष के सदस्यों ने विशेष रूप से इस विधेयक को पेश किए जाने पर जोरदार विरोध दर्ज कराया। विपक्ष की ओर से एआईएमआईएम के असदुद्दीन ओवैसी, कांग्रेस के मनीष तिवारी और केसी वेणुगोपाल, आरएसपी के एनके प्रेमचंद्रन और सपा के धर्मेंद्र यादव ने विधेयकों को पेश किए जाने का विरोध किया।

प्रेमचंद्रन ने कहा कि तीनों विधेयकों को सदन में पेश करने की सरकार को इतनी हड़बड़ी क्यों है? इस पर गृह मंत्री शाह ने कहा कि प्रेमचंद्रन जल्दबाजी की बात कर रहे हैं, लेकिन इसका सवाल इसलिए नहीं उठता क्योंकि मैं इन विधेयकों को संसद की संयुक्त समिति को सौंपने का अनुरोध करने वाला हूं। संयुक्त समिति लोकसभा और राज्यसभा में पक्ष और विपक्ष के सदस्यों को मिलाकर बनेगी और इस पर विचार करके विधेयक को आपके सामने लाएगी। कांग्रेस सांसद वेणुगोपाल ने कहा कि भाजपा के लोग कह रहे हैं कि यह विधेयक राजनीति में शुचिता लाने के लिए लाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि क्या मैं गृह मंत्री से पूछ सकता हूं कि जब वह गुजरात के गृह मंत्री थे, उन्हें गिरफ्तार किया गया था तब क्या उन्होंने नैतिकता का ध्यान रखा था? गृह मंत्री ने जवाब में कहा कि मैं रिकॉर्ड स्पष्ट करना चाहता हूं। मैंने गिरफ्तार होने से पहले नैतिकता के मूल्यों का हवाला देकर इस्तीफा भी दिया और जब तक अदालत से निर्दोष (साबित) नहीं हुआ, तब तक मैंने कोई संवैधानिक पद स्वीकार नहीं किया। मैं तो चाहता हूं कि नैतिकता के मूल्य बढ़ें। हम ऐसे निर्लज्ज नहीं हो सकते कि हम पर आरोप लगें और हम संवैधानिक पद पर बने रहें। इस दौरान कुछ सदस्यों को गृह मंत्री के सामने कागज फाड़कर फेंकते हुए देखा गया। एसआईआर के मुद्दे पर सदन की बैठक दो बार स्थगित हुई।

ऑनलाइन गेमिंग विधेयक लोकसभा में पारित

लोकसभा ने ऑनलाइन गेमिंग को विनियमित करने एवं शैक्षणिक और सामाजिक ऑनलाइन खेलों को बढ़ावा देने वाले एक विधेयक को पारित कर दिया तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि समाज में एक बहुत बड़ी बुराई आ रही है जिससे बचने के लिए इस विधेयक को लाया गया है। बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के मुद्दे पर विपक्ष के सांसदों के हंगामे के बीच ऑनलाइन खेल संवर्धन और विनियमन विधेयक, 2025 को सदन में पारित कराने के लिए रखते हुए वैष्णव ने कहा कि 'ऑनलाइन मनी गेम' आज समाज में बड़ी चिंता का विषय बन गया है और कई ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें इसकी लत लग जाती है तथा जिंदगी भर की बचत (ऑनलाइन) गेम में उड़ा देते हैं।

संसद ने दी आईआईएम संशोधन विधेयक को मंजूरी

संसद ने गुवाहाटी में भारतीय प्रबंध संस्थान (आईआईएम) की स्थापना के प्रावधान वाले एक विधेयक को बुधवार को मंजूरी दे दी और शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि केंद्र सरकार ने इसके लिए 550 करोड़ रुपये के आर्थिक अनुदान की व्यवस्था की है तथा संस्थान में मौजूदा शैक्षणिक सत्र से ही दाखिला शुरू हो जाएगा। राज्यसभा ने आज भारतीय प्रबंध संस्थान (संशोधन) विधेयक, 2025 को चर्चा एवं शिक्षा मंत्री के जवाब के बाद ध्वनिमत से पारित कर दिया। लोकसभा इसे मंगलवार को ही पारित कर चुकी है। उच्च सदन में विधेयक पर चर्चा एवं पारित किए जाने के दौरान कई विपक्षी दलों के सदस्य अनुपस्थित थे। विपक्षी सदस्यों ने बिहार में एसआईआर के मुद्दे पर चर्चा की अनुमति नहीं दिए जाने के विरोध में सदन से वाकऑउट किया।

ओडिशा में अग्नि-5 बैलिस्टिक मिसाइल का सफल परीक्षण

नई दिल्ली/बालासोर, एजेंसी

- सभी परिचालन और तकनीकी मापदंडों पर खरी उतरी

भारत ने अपनी सामरिक सैन्य क्षमताओं का प्रदर्शन करते हुए बुधवार को मध्यम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल अग्नि-5 का सफल परीक्षण किया। रक्षा मंत्रालय ने बताया कि ओडिशा के चांदीपुर स्थित एकीकृत परीक्षण रेंज से अग्नि-5 का परीक्षण किया गया और यह मिसाइल सभी परिचालन एवं तकनीकी मापदंडों पर खरी उतरी। बयान के मुताबिक, मध्यम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल अग्नि-5 का 20 अगस्त को ओडिशा के चांदीपुर स्थित एकीकृत परीक्षण रेंज से सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया। परीक्षण में मिसाइल सभी परिचालन और तकनीकी मापदंडों पर खरी उतरी। यह परीक्षण सामरिक बल कमान के तत्वावधान में किया गया।

रक्षा सूत्रों ने बताया कि रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने 11 मार्च 2024 को इसी परीक्षण रेंज से मल्टीपल इंडिपेंडेंटली टार्गेटेबल री-एंट्री व्हीकल तकनीक का इस्तेमाल करके अग्नि-5 का सफल परीक्षण किया था। विभिन्न दूरमापी और रडार केंद्रों से इस पूरे परीक्षण पर नजर रखी गई और यह मिसाइल सभी निर्धारित मापदंडों पर खरी उतरी। भारत ने पहली बार अग्नि-5 मिसाइल का सफल परीक्षण 19 अप्रैल 2012 को चांदीपुर स्थित एकीकृत परीक्षण रेंज से किया था। तब इस मिसाइल को हिंद महासागर में एक निर्दिष्ट बिंदु पर प्रक्षेपित किया था। यह मिसाइल अधिकतम 600 किमी की ऊंचाई पर जा सकती है और करीब 5,000 किमी तक मार कर सकती है।

उपराष्ट्रपति चुनाव

नई दिल्ली में बुधवार को राजग के उपराष्ट्रपति प्रत्याशी सीपी राधाकृष्णन ने निर्वाचन अधिकारी को नामांकन पत्र सौंपा, इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह, गृहमंत्री अमित शाह और अन्य वरिष्ठ नेता मौजूद रहे।

राजग प्रत्याशी राधाकृष्णन ने दाखिल किया नामांकन

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति पद के लिए राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के उम्मीदवार सीपी राधाकृष्णन ने बुधवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह और अन्य वरिष्ठ नेताओं की उपस्थिति में उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। नामांकन पत्र दाखिल करने गए राधाकृष्णन के साथ राजग के वरिष्ठ नेता और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी मौजूद थे। प्रधानमंत्री ने राज्यसभा महासचिव पीसी मोदी को नामांकन पत्रों के चार सेट सौंपे, जो उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए निर्वाचन अधिकारी हैं। नामांकन पत्रों के चार सेट में मोदी, सिंह, शाह और जदयू नेता राजीव रंजन सिंह मुख्य प्रस्तावक हैं। उपराष्ट्रपति पद के संभावित उम्मीदवार के नामांकन पत्र पर 20 निर्वाचकों द्वारा प्रस्तावक और 20 अन्य निर्वाचकों द्वारा अनुमोदक के रूप में हस्ताक्षर करना आवश्यक होता है।

जन सुनवाई के दौरान दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता पर हमला

जानलेवा हमले में सीएम के हाथ, कंधे और सिर में चोटें आईं

- राजकोट निवासी आरोपी गिरफ्तार हत्या के प्रयास का केस दर्ज

नई दिल्ली, एजेंसी

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता पर बुधवार को सुबह सिविल लाइंस स्थित उनके कार्यालय पर आयोजित जन सुनवाई कार्यक्रम के दौरान एक व्यक्ति ने हमला कर दिया। मुख्यमंत्री कार्यालय ने इस हमले को मुख्यमंत्री की हत्या की सुनियोजित साजिश का हिस्सा बताया। पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, राजकोट (गुजरात) निवासी 41 वर्षीय आरोपी सकरिया राजेशभाई खिमजीभाई को हिरासत में लिया गया है और उससे खुफिया ब्यूरो (आईबी) और दिल्ली पुलिस की संयुक्त टीम पूछताछ कर रही है।

उन्होंने बताया कि हमला सुबह करीब सवा आठ बजे हुआ। पीडब्ल्यूडी (लोक निर्माण विभाग) मंत्री प्रवेश वर्मा ने बताया कि मुख्यमंत्री के हाथ, कंधे और सिर में चोटें आई हैं। जांच से जुड़े एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि यह एक गंभीर हमला था और जानलेवा भी हो सकता था।

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और आरोपी सकरिया राजेशभाई खिमजी।

हमलावर पर गुजरात में दर्ज हैं पांच मामले

हमलावार पर गुजरात में पांच आपराधिक मामले दर्ज हैं, जिनमें चाकू से हमले के दो और आबकारी अधिनियम के तीन मामले शामिल हैं। आरोपी के पास कोई हथियार नहीं था। उसके पास एक बैग था जिसमें कपड़े और कुछ कागज थे। पुलिस ने हमले के सिलसिले में हत्या के प्रयास के आरोप में एक प्राथमिकी दर्ज की है। पुलिस उपायुक्त (उत्तर) राजा बंठिया ने बताया कि सिविल लाइंस थाने में उस पर कथित तौर पर हमला करने और लोक सेवक को उसके कर्तव्य निर्वहन में बाधा डालने का भी मामला दर्ज किया गया है। सूत्रों ने बताया कि खिमजीभाई दो दिन पहले दिल्ली आया था और उत्तरी दिल्ली के सिविल लाइंस में रुका था।

हमले से पहले की मुख्यमंत्री आवास की रेकी

आधिकारिक सूत्रों ने शालीमार बाग स्थित गुप्ता के आवास से मिले सीसीटीवी फुटेज का हवाला देते हुए कहा कि मुख्यमंत्री पर हमला एक सुनियोजित साजिश का हिस्सा था। सीसीटीवी फुटेज से साफ पता चलता है कि हमलावर ने हमले की तैयारी 24 घंटे पहले से शुरू कर दी थी। सीसीटीवी फुटेज में बुधवार को आरोपी मुख्यमंत्री आवास की ओर जाते हुए दिख रहा है। वीडियो में आरोपी परिसर की रेकी करता, मुख्यमंत्री आवास के दृश्य रिकॉर्ड करता दिख रहा है। वह एक दिन पहले अपने दौरे के दौरान फोन पर बात करता हुआ दिख रहा है।

बीएसए व वित्त लेखाधिकारी समेत सात के खिलाफ एफआईआर के आदेश

संवाददाता, गोंडा

अमृत विचार: तरबगंज के रामपुर टेंगरहा स्थित भैया चंद्रभानदत्त स्मारक लघु माध्यमिक विद्यालय में नियुक्ति पाकर चर्चा में आई जिले की अनामिका शुक्ला का मामला एक बार फिर से सुर्खियों में है। उस मामलें में सीजेएम ने जिले के बीएसए व वित्त लेखाधिकारी समेत सात लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने का आदेश दिया है।

वर्ष 2020 में अनामिका शुक्ला प्रकरण सामने आया था। इसमें अनामिका शुक्ला के नाम पर प्रदेश के 25 कस्तूरबा गांधी विद्यालयों में नौकरी करने की बात सामने आई थी। अनामिका ने आरोप लगाया था कि जालसाजों ने उसके अभिलेख का दुरुपयोग कर प्रदेश के विभिन्न जिलों में अनामिका के नाम पर 25 महिलाओं को नौकरी दिलवाई, जबकि वह खुद बेरोजगार है। इस पर तरबगंज के रामपुर टेंगरहा स्थित भैया चंद्रभानदत्त स्मारक लघु माध्यमिक विद्यालय के प्रबंधक ने सामने आकर कि अनामिका को वर्ष 2017 से यह सहायक अध्यापक के वेतन का भुगतान किया जा रहा है और अब तक अनामिका को कई करोड़ रुपये का वेतन भुगतान किया जा चुका है। जांच के बाद नगर कोतवाली क्षेत्र के आवास विकास कालोनी के रहने वाले प्रदीप पांडेय ने एडेड स्कूलों में फर्जी नियुक्ति करने और अनामिका शुक्ला को लेखा कार्यालय की तरफ से फर्जी वेतन भुगतान करने का आरोप लगाते हुए सीजेएम कोर्ट में वाद दायर किया था। इस मामले को गंभीरता से लेते हुए मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट अमित कुमार द्वितीय ने नगर कोतवाली पुलिस को जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, वित्त लेखाधिकारी बेसिक, बेसिक शिक्षा विभाग के पटल लिपिक सुधीर सिंह, पटल लिपिक अनुपम पांडेय, भैया चंद्रभान दत्त स्मारक लघु माध्यमिक विद्यालय रामपुर टेंगरहा के प्रबंधक व प्रधानाचार्य तथा अन्य अज्ञात के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर मामले की जांच का आदेश दिया है। साथ ही 10 दिन के प्रकरण से संबंधित रिपोर्ट भी तलब की है।

अनामिका शुक्ला प्रकरण

- अनामिका के नाम पर प्रदेश के 25 कस्तूरबा गांधी विद्यालयों में नौकरी करने की बात आई थी सामने

अनामिका को अपने विद्यालय में अस्थायी नियुक्ति देने की बात कही। प्रबंधक ने उसे नियुक्ति पत्र भी दिया था, लेकिन वेतन भुगतान के संबंध में स्थिति स्पष्ट नहीं की गयी। बाद में जांच पड़ताल के दौरान पता चला

नफरती भाषण मामले में अब्बास अंसारी को राहत

विधि संवाददाता, प्रयागराज

- इलाहाबाद हाईकोर्ट ने ट्रायल कोर्ट द्वारा दी गई सजा पर लगाई रोक

अमृत विचार : इलाहाबाद हाईकोर्ट ने पूर्व विधायक और मुख्तार अंसारी के बेटे अब्बास अंसारी को हेट स्पीच (नफरती भाषण) मामले में राहत देते हुए ट्रायल कोर्ट द्वारा दी गई सजा पर रोक लगा दी है। न्यायमूर्ति समीर जैन द्वारा दिए गए इस फैसले के बाद अब्बास की विधानसभा सदस्यता बहाल होने का रास्ता लगभग साफ हो गया है। अब मऊ की सदर विधानसभा सीट पर उप चुनाव नहीं होगा।

वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव में सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी से मऊ सदर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र से विधायक रहे अब्बास अंसारी ने चुनावी सभा के दौरान राज्य सरकार के अधिकारियों को सपा के सत्ता में आने पर परिणाम भुगतने की धमकी दी थी। जिसके बाद उन पर हेट स्पीच और आचार संहिता उल्लंघन का मुकदमा दर्ज हुआ। मऊ की एमपी-एमएलए कोर्ट ने अब्बास को दो साल कैद की सजा सुनाई थी, दो हजार रुपये का जुर्माना भी लगाया था। इसी फैसले के कारण एक जून को विधानसभा सचिवालय ने मऊ सदर सीट को रिक्त घोषित कर दिया था यानी उनकी विधायकी खत्म हो गई थी।

चिकित्सा के यूजी और पीजी कोर्स में बढ़ेंगी 8000 सीटें

नई दिल्ली। इस शैक्षणिक सत्र में देश में चिकित्सा के स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में कुल 8,000 सीट बढ़ाए जाने की उम्मीद है और इसके मद्देनजर चिकित्सा महाविद्यालयों का मूल्यांकन किया जा रहा है। राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान आयोग (एनएमसी) के प्रमुख डॉ. अभिजात शेठ ने यह जानकारी दी। इस वर्ष जुलाई में सीबीआई द्वारा केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय, राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान आयोग (एनएमसी) के अधिकारियों, बिचौलियों और निजी चिकित्सा महाविद्यालयों के प्रतिनिधियों के एक नेटवर्क का भंडाफोड़ किया था। सीबीआई द्वारा जांच शुरू किए जाने के बाद एनएमसी ने सीट की संख्या बढ़ाने या नए पाठ्यक्रम शुरू करने की प्रक्रिया पर रोक लगा दी थी।

- एनएमसी प्रमुख ने दी जानकारी

खाद संकट

सीमावर्ती जिलों में चौकसी बढ़ी, खाद तस्करों और माफिया पर नजर

खाद की कालाबाजारी पर सख्ती, योगी बोले- भंडारण न हो

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- मुख्यमंत्री ने उर्वरक की ओवररेटिंग करने वालों को भी दी चेतावनी

अमृत विचार : राज्य सरकार ने फिर साफ किया है कि प्रदेश में कहीं भी उर्वरकों की दिक्कत या कमी नहीं है। वहीं, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने किसानों से अपील की कि खाद का भंडारण न करें। जितनी आवश्यकता है, उतना खाद लें, जब-जब आवश्यकता है, तब-तब खाद लें। हर जिले में शिकायत प्रकोष्ठ है। किसी भी परेशानी की स्थिति में अवगत कराएं। मुख्यमंत्री ने उर्वरक की ओवररेटिंग, कालाबाजारी करने वालों को कड़ी चेतावनी भी दी है।

वहीं, राज्य में खाद को लेकर मची ऊहापोह के बीच कृषि विभाग ने सभी 18 मंडलों में खाद की उपलब्धता व बिक्री की जानकारी सार्वजनिक की है। विभाग के अनुसार खरीफ सत्र 2024 में इस अवधि (18 अगस्त) तक 36.76 लाख मीट्रिक टन उर्वरक की बिक्री हुई थी, वहीं इस वर्ष अब तक 42.64 लाख मीट्रिक टन उर्वरक की बिक्री की जा चुकी है। ऐसे में पिछले वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष अभी तक अधिक खाद वितरण किया जा चुका है।

दूसरी ओर कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने कहा है कि किसानों को किसी भी हाल में निराश नहीं होने दिया जाएगा। राज्य सरकार और प्रशासन पूरी तरह चौकन्ना है। सीमावर्ती जिलों में खाद की तस्करी रोकने के लिए विशेष सतर्कता बरती जा रही है। उन्होंने दोहराया कि असली किसानों को किसी प्रकार की दिक्कत नहीं होगी, लेकिन जमाखोरी, कालाबाजारी और तस्करी करने वाले माफियाओं को हर हाल में सख्त कार्रवाई झेलनी पड़ेगी।

तीन जनपदों के जिला कृषि अधिकारी निलंबित

कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने स्पष्ट किया है कि प्रदेश में खाद और यूरिया की कोई कमी नहीं है। दिक्कत केवल जमाखोरी, कालाबाजारी और तस्करी करने वाले तत्व पैदा कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि अब तक 1196 फुटकर विक्रेताओं के लाइसेंस निरस्त किए जा चुके हैं। 132 थोक विक्रेताओं को नोटिस, 13 को निलंबन और 4 का लाइसेंस रद्द किया गया है। 93 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई गई है। सीतापुर, बलरामपुर और श्रावस्ती के जिला कृषि अधिकारियों को निलंबित किया गया है। वहीं, महाराजगंज और सिद्धार्थनगर जैसे सीमावर्ती जिलों में बड़ी संख्या में ऐसे लोग पकड़े गए हैं जिन्होंने बिना जोत के ही दर्जनों बोरी यूरिया उठा ली। मंत्री ने चेतावनी दी कि ऐसे खाद माफिया को बख्शा नहीं जाएगा।

अमृत विचार

अयोध्या, गुरुवार, 21 अगस्त 2025

औद्योगिक पार्कों को मिलेगी आर्थिक सहायता

फुटवियर नीति 2025 : निवेश बढ़ाने और रोज़गार सृजन के लिए वित्तीय सहायता और टैक्स में छूट का प्रावधान

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: राज्य सरकार ने फुटवियर, लेदर और नॉन लेदर क्षेत्र विकास नीति-2025 के तहत निजी पार्कों को निवेश बढ़ाने और रोज़गार सृजन के लिए बड़े पैमाने पर वित्तीय सहायता और टैक्स में छूट दी जाएगी। सरकार ने नीति में स्पष्ट किया है कि ऐसे पार्कों को विकसित करने वाले डेवलपर्स को 25 प्रतिशत पात्र पूंजी निवेश या अधिकतम राशि के रूप में वित्तीय सहायता दी जाएगी। यह मदद पार्क के आकार के अनुसार होगी।

इस नीति के जरिये सरकार चाहती है कि राज्य में बड़े पैमाने पर निजी औद्योगिक पार्कों की स्थापना हो। ऐसे पार्कों के जरिये हजारों युवाओं को रोज़गार मिलेगा। फुटवियर और लेदर सेक्टर को वैश्विक पहचान मिलेगी। यूपी निवेश का नया केंद्र बनेगा। यह नीति अधिसूचना जारी होने की तिथि से 5 साल तक प्रभावी रहेगी। इसके तहत सभी नए प्रोजेक्ट, विस्तार या विविधीकरण करने वाले औद्योगिक उपक्रम वित्तीय प्रोत्साहनों के पात्र होंगे।

नीति में शर्तें

- पार्क क्षेत्रफल के 25% हिस्से पर रहे हरियाली।
- न्यूनतम 25 एकड़ भूमि पर विकसित होना अनिवार्य।
- प्रत्येक पार्क में कम से कम 5 औद्योगिक इकाइयां होंगी।
- कोई भी इकाई 80% से अधिक भूमि का उपयोग नहीं कर सकेगी।
- कुल क्षेत्रफल का 25% हिस्सा हरियाली और सामान्य अवसंरचना के लिए सुरक्षित रखना होगा।
- 25 एकड़ से 100 एकड़ तक के पार्कों का निर्माण 5 वर्षों में पूरा करना होगा।
- 100 एकड़ एवं इससे अधिक के पार्कों का निर्माण 6 वर्षों में पूर्ण करना होगा।

मिलेगी छूट

- 25 से 100 एकड़ तक के पार्क : पात्र पूंजी निवेश का 25% या अधिकतम 45 करोड़।
- 100 एकड़ से बड़े पार्क : पात्र पूंजी निवेश का 25% या अधिकतम 80 करोड़।
- सभी पार्क विकासकर्ताओं को 100% स्टाम्प शुल्क में छूट।

इन पर नहीं मिलेगा लाभ

- भूमि की खरीद लागत।
- ईंधन, वाहन, फर्नीचर, पुरानी मशीनरी।
- अन्य सेवा शुल्क।

खर्च की गाइडलाइन

वित्तीय सहायता केवल बुनियादी ढांचा विकास पर खर्च की जा सकेगी। इसमें सड़क, स्ट्रीट लाइट, सीवरेज, ड्रेनेज, बाउंड्री वॉल, पावर सप्लाई, जल आपूर्ति, बैंकिंग सुविधाएं, वेयरहाउस, होटल, हॉस्पिटल, ट्रेड फेयर/डिस्प्ले सेंटर, ट्रांसपोर्ट सुविधा और स्किल डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट जैसे कार्य शामिल होंगे।

श्रद्धांजलि...

प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में पूर्व प्रधानमंत्री स्व . राजीव गांधी की जयंती पर उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करते पार्टी के वरिष्ठ नेता पीएल पुनिया, साथ में अन्य। ● अमृत विचार

न्यूज ब्रीफ

एक करोड़ से संवरेगा अतरौली का मंदिर

अमृत विचार, लखनऊ : पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि अलीगढ़ में अतरौली स्थित बड़े महादेव मंदिर का एक करोड़ रुपये से सौंदर्यीकरण एवं पर्यटन विकास किया जाएगा। कल्याण सिंह की जन्मस्थली अतरौली अब धार्मिक पर्यटन और सांस्कृतिक धरोहर के नए केंद्र के रूप में उभरेगा। पर्यटन मंत्री ने बताया कि पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह की पुण्यतिथि पर अतरौली को यह सौगात उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। प्रमुख सचिव मुकेश कुमार मेश्राम ने बताया कि एक करोड़ रुपये से न सिर्फ मंदिर परिसर का कायाकल्प होगा, बल्कि यहां आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी। इससे स्थानीय स्तर पर पर्यटन, व्यापार और रोजगार को भी नई गति मिलेगी।

पर्यटन स्थलों पर होंगे सांस्कृतिक कार्यक्रम

अमृत विचार, लखनऊ : जिलों में सांस्कृतिक, धार्मिक एवं पर्यटन स्थलों पर सप्ताह में एक दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होंगे। ये सांस्कृतिक कार्यक्रम अगस्त 2025 से शुरू होकर 31 मार्च, 2026 तक कराये जायेंगे। यह कार्यक्रम लोक कलाकारों के आर्थिक स्थिति मजबूत करने तथा रोजी रोटी के लिए प्रस्तावित किया गया है। इसके लिए प्रति स्थल प्रतिदिन कलाकार का मानदेय 40 हजार रुपये एवं कार्यक्रम की अन्य व्यवस्थाओं के लिए 8 हजार रुपये दिये जायेंगे। यह जानकारी अपने सरकारी आवास पर प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बुधवार को दी। उन्होंने बताया कि प्रत्येक स्थल पर लगभग 15 दिन तक कार्यक्रम कराया जायेगा। इस प्रकार 21 स्थलों पर कार्यक्रम कराये जाने पर लगभग तीन करोड़ 52 लाख 80 हजार रुपये का व्यय अनुमानित है।

63 लाख महिलाओं ने की मुफ्त बस यात्रा

अमृत विचार, लखनऊ : परिवहन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दयाशंकर सिंह ने बताया कि इस वर्ष रक्षाबंधन पर्व पर परिवहन निगम की बसों में 66 घंटे में 63 लाख महिलाओं, बहनों एवं बेटियों ने 15 लाख सहयात्री के साथ मुफ्त यात्रा का लाभ उठाया। यह सरकार की महिला सशक्तीकरण के प्रति संवेदनशीलता को भी दर्शाता है। परिवहन मंत्री ने बुधवार को कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा उठाया गया यह कदम वास्तव में महिलाओं के सम्मान, स्वाभिमान और सुरक्षा को नई दिशा देने वाला रहा। उन्होंने कहा कि इस दौरान निगम के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी ने पूरी लगनता एवं मेहनत के साथ कार्य करते हुए रक्षाबंधन पर्व को सफल बनाने में अपना सराहनीय योगदान दिया।

किसानों की 100 फीसदी रजिस्ट्री का लक्ष्य तय

प्रदेश में 16 सितंबर से शुरू होगा विशेष अभियान

- जिलाधिकारी करेंगे प्रतिदिन समीक्षा, फार्मर रजिस्ट्री में अब तक बिजनौर सबसे आगे

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : प्रदेश में किसानों की फार्मर रजिस्ट्री को लेकर बड़ा अभियान शुरू होने जा रहा है। मुख्यमंत्री के निर्देश पर 16 सितम्बर से प्रदेशभर में विशेष अभियान चलाया जाएगा। इस अभियान के तहत जिलाधिकारियों को फार्मर रजिस्ट्री की प्रगति पर प्रतिदिन समीक्षा करने के निर्देश दिए गए हैं। राजस्व विभाग को निर्देश दिया गया है कि राजस्व अधिकारियों को मानक कार्यप्रणाली (एसओपी) उपलब्ध कराई जाए, ताकि अधिकार अभिलेख में मालिकों के नाम को आधार के अनुसार सही किया जा सके।

राज्य में कुल 2.88 करोड़ से अधिक किसानों की फार्मर रजिस्ट्री का लक्ष्य रखा गया है। इसके सापेक्ष अब तक 50 प्रतिशत से अधिक लगभग 1.45 करोड़ किसानों की रजिस्ट्री पूरी हो चुकी है। किसानों की फार्मर रजिस्ट्री में अब तक बिजनौर जिला सबसे आगे है, जहां 58 प्रतिशत से अधिक रजिस्ट्री पूरी हो चुकी है। इसके बाद हरदोई (57.84 प्रतिशत), श्रावस्ती (57.47 प्रतिशत), पीलीभीत (56.89 प्रतिशत) और रामपुर (56.72 प्रतिशत) टॉप-5 जिलों में शामिल हैं।

वहीं, जो किसान अभी तक रजिस्ट्री का हिस्सा नहीं हैं, उनके डाटा का फील्ड ऑफिसर्स द्वारा वेरिफिकेशन किया जा रहा है। इसमें अमरोहा, आजमगढ़, बलरामपुर, एटा और जौनपुर जैसे जिलों में 100 प्रतिशत वेरिफिकेशन पूरा हो चुका है।

पिछड़ रहे जिलों पर विशेष ध्यान

राज्य सरकार ने जिलाधिकारियों को यह भी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत किसानों का 100 प्रतिशत पंजीकरण अगली किस्त जारी होने से पहले पूरा हो। इसके साथ ही सभी जिलाधिकारियों को व्यापक आईईसी (सूचना, शिक्षा और संचार) गतिविधियां चलाने के भी निर्देश दिए गए हैं। अधिकारियों को विशेष रूप से चेताया गया है कि पिछड़ रहे जिलों पर विशेष ध्यान दिया जाए और लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त प्रयास किए जाएं।

सपा सरकार में आत्महत्या करते थे किसान: शाही

कहा- सपा प्रमुख को किसानों के बारे में बोलने का कोई हक नहीं

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने बुधवार को एक प्रेस वार्ता में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि अखिलेश यादव को किसानों के बारे में बोलने का कोई हक नहीं है। उनके शासनकाल में किसान न तो समय से बुवाई कर पाते थे और न ही उन्हें न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद की सुविधा मिलती थी। उस दौर में कर्ज में डूबे 86 लाख किसानों के 36 हजार करोड़ रुपये हमारी सरकार को माफ करने पड़े। यदि सपा सरकार इतनी ही किसान हितैषी थी तो किसानों को आत्महत्या क्यों करनी पड़ी।

कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही।

कृषि मंत्री ने यूरिया के संबध में जानकारी दी कि 18 अगस्त तक प्रदेश में 37.70 लाख मीट्रिक टन की उपलब्धता रही। इसमें से 31.62 लाख मीट्रिक टन की खरीद किसानों द्वारा की जा चुकी है। वहीं डीएपी की 18 अगस्त तक 9.25 लाख मी. टन की उपलब्धता रही, जिसमें से 5.38 लाख मी. टन की खरीद किसानों ने कर ली है। जबकि, एनपीके की 18 अगस्त तक 5.40 लाख मी.टन की उपलब्धता रही। इसमें से 2.39 लाख मीट्रिक टन की खरीद किसानों ने कर ली। शाही ने कहा कि राज्य सरकार हर किसान को समय से खाद और बीज उपलब्ध कराने के लिए पूरी तरह सक्रिय है।

किसानों को अनुदान पर मिलेंगे बीज

अमृत विचार, लखनऊ : किसानों को गुणवत्तापूर्ण बीज उपलब्ध कराने की दिशा में राज्य सरकार ने विशेष कदम उठाए हैं। इस सत्र में किसानों को 10 लाख क्विंटल गेहूं बीज अनुदान पर दिया जाएगा। गन्ना उत्पादक किसानों को शीतकालीन गन्ने के साथ सहफसली खेती के लिए 7080 क्विंटल राई और सरसों तथा 12500 क्विंटल मसूर के बीज नि:शुल्क उपलब्ध कराए जाएंगे। इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा 6 .50 लाख दलहनी और तिलहनी बीज मिनीकिट तथा भारत सरकार के सहयोग से 5 .41 लाख दलहनी बीज मिनीकिट भी नि :शुल्क वितरित किए जाएंगे। कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने कहा कि लाभार्थियों के चयन में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए ई-लॉटरी प्रणाली अपनाई जाएगी, जिससे वास्तविक किसानों को ही लाभ मिल सके। इसके लिए किसानों को पहले से पोर्टल पर पंजीकरण कराना होगा। तोरिया बीज मिनीकिट के लिए पंजीकरण की अंतिम तिथि 31 अगस्त तय की गई है। इसके बाद 1 सितंबर से अन्य फसलों के बीज मिनीकिट के लिए पंजीकरण शुरू होगा।

एमडीए अभियान की केंद्रीय टीम ने परखी हकीकत

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीवीबीडी) की संयुक्त निदेशक डॉ. रिंकू शर्मा ने सर्वजन दवा सेवन (एमडीए) अभियान में सुपरवाइजरी विजिट बढ़ाने और रेफ्यूजल केसों पर दैनिक आधार पर काम करने के निर्देश दिये हैं। यह बात उन्होंने रायबरेली और फतेहपुर में भ्रमण के दौरान अभियान की समीक्षा करते हुए कही।

दिल्ली से आई तीन सदस्यीय केंद्रीय टीम ने बुधवार को फतेहपुर में बिठौरा ब्लाक के भसौनी गांव का भ्रमण किया, जहां फाइलेरिया के मरीज अधिक हैं। इस गांव में दवा सेवन से इंकार करने वालों के लिए डॉ. रिंकू ने स्वास्थ्य टीम व पीएसपी सदस्यों से और कर्मठता से काम करने की हिदायत दी। केंद्रीय टीम ने बछरावां स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) और वहीं पर इचौली-सुभाष खेड़ा व रामपाल खेड़ा गांव का भ्रमण किया। हरचंदपुर सीएचसी क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले गांव डिघौरा का भी दौरा किया। केंद्रीय टीम में तकनीकी सहायता इकाई, प्रोजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और सेंटर फॉर एडवोकेसी एंड रिसर्च (सीफार) के विशेषज्ञ शामिल थे।

कौशल विकास से आएगी आत्मनिर्भरता

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : उप्र. कौशल विकास मिशन निदेशक पुलकित खरे ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि समर्पण और लगन के साथ कौशल विकास कर वे न केवल आत्मनिर्भर बनेंगे, बल्कि समाज और प्रदेश की प्रगति में भी योगदान देंगे। उन्होंने युवाओं को भरोसा दिलाया कि राज्य सरकार रोजगारोन्मुखी कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से ग्रामीण युवाओं को सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

इससे पूर्व बुधवार को पुलकित खरे ने दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना (डीडीयूजीकेवाई) के अंतर्गत लखनऊ स्थित एलएनजे इंस्टिट्यूट ऑफ स्किल्स एंड टेक्नोलॉजी के प्रशिक्षण केंद्र का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मिशन निदेशक ने प्रशिक्षणार्थियों से संवाद कर उनके अनुभव जाने और उन्हें उपलब्ध कराए जा रहे प्रशिक्षण की गुणवत्ता का आकलन किया। इस अवसर पर उन्होंने प्रशिक्षण केंद्र प्रबंधक को निर्देश दिया कि पाठ्यक्रम की गुणवत्ता, प्रायोगिक गतिविधियों और रोजगार से जोड़ने वाली सुविधाओं में लगातार सुधार किया जाए।

लखनऊ स्थित एलएनजे इंस्टीट्यूट ऑफ स्किल्स एंड टेक्नोलॉजी के प्रशिक्षण केंद्र का निरीक्षण करते मिशन निदेशक पुलकित खरे।

प्रदेश में फिर भारी बारिश की चेतावनी

अमृत विचार, लखनऊ : मौसम विभाग ने उत्तर प्रदेश के लिए आने वाले दिनों में भारी बारिश की चेतावनी जारी की है। मौसम विभाग ने बंगाल की खाड़ी में सक्रिय हो रहे नए वेदर सिस्टम के प्रभाव से राज्य के पूर्वी-पश्चिमी दोनों संभागों में 22 से 25 अगस्त के बीच भारी बारिश का पूर्वानुमान जारी किया है। इस बार भी मानसूनी बारिश दक्षिणी हिस्से से प्रवेश करेगी। इसके बाद तीन-चार दिनों के लिए बारिश का विस्तार पूरे प्रदेश में देखने को मिलेगा। मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह के अनुसार, मानसूनी रेखा फिर से उप्र. की ओर खिसकी है। इसके असर से हवाएं बंगाल की खाड़ी और अरब सागर दोनों से राज्य में पर्याप्त में नमी लेकर आएंगी।

प्रदेश में बच्चे 10 करोड़, बाल रोग विशेषज्ञ मात्र 2500

आईएपी नियोकोन का राष्ट्रीय सम्मेलन कल से, जुटेंगे बाल रोग विशेषज्ञ

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार : प्रदेश में 10 करोड़ बच्चों की आबादी पर 2500 बाल रोग विशेषज्ञ हैं, जो देश के अन्य राज्यों की तुलना में काफी कम हैं। पांच साल से कम आयु के बच्चों की मृत्यु का बड़ा कारण समय पर समुचित इलाज न मिलना भी है। बच्चों के बेहतर इलाज को लेकर भारतीय बाल अकादमी (आईएपी) के, नियोकोन के नियोनेटोलॉजी स्पेशिलिटी चैप्टर का 16वां वार्षिक राष्ट्रीय सम्मेलन 22 से 24 अगस्त को राजधानी के एक निजी होटल में होगा। इसमें देश दुनिया से बाल रोग विशेषज्ञ आएंगे। यह जानकारी आईएपी के पूर्व अध्यक्ष और कार्यशाला आयोजन समिति के चेयरमैन डॉ. संजय निरंजन ने दी।

वह बुधवार को पत्रकार वार्ता में जानकारी साझा कर रहे थे। डॉ. संजय निरंजन ने कहा कि गुजरे कुछ वर्षों में जागरुकता बढ़ी है। नतीजतन पांच साल से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर में सुधार आया है, लेकिन नवजात शिशुओं की मृत्यु दर में ज्यादा बदलाव नहीं आ रहा है। आयोजन समिति की सचिव डॉ. शालिनी त्रिपाठी ने बताया कि नियोनेटोलॉजी स्पेशिलिटी चैप्टर 16 साल पहले इस उद्देश्य के साथ स्थापित किया गया था। प्रदेश की एनएमआर वर्तमान में 1000 जीवित जन्मों पर 25 है। जबकि भारत की 17 है। सतत विकास के लक्ष्य, एनएमआर 12 से कम करने के लिए एक टीम के रूप में कड़ी मेहनत करने की जरूरत है। डॉ. आकाश पंडिता ने बताया कि 22 अगस्त को जनपद के विभिन्न सरकारी व निजी चिकित्सा संस्थानों 800 बाल विशेषज्ञ प्रतिभाग करेंगे।

लखनऊ में प्रेसवार्ता में जानकारी देते डॉ . संजय निरंजन, साथ में अन्य।

युवाओं को रोजगार के साथ नियोक्ताओं को भी प्रोत्साहन देगा ईपीएफओ

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त ने प्रेस वार्ता कर बताईं प्राथमिकताएं

अमृत विचार : स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री ने लालकिले से प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना (पीएमवीबीआरवाई) की औपचारिक शुरुआत की। इस योजना का उद्देश्य देश के युवाओं को संगठित क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध कराना और सामाजिक सुरक्षा का दायरा बढ़ाना है।

क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त प्रथम अश्विनी कुमार गुप्ता ने बताया कि इस महत्वाकांक्षी योजना के अंतर्गत पहली बार ईपीएफओ में पंजीकृत होने वाले कर्मचारियों को अधिकतम 15,000 तक का प्रोत्साहन दो किस्तों में दिया जाएगा। पहली किस्त 6 माह की सेवा पूरी होने पर और दूसरी किस्त 12 माह की सेवा के साथ वित्तीय साक्षरता प्रशिक्षण पूरा करने के बाद प्रदान की जाएगी। नियोक्ताओं को भी प्रति अतिरिक्त रोजगार 3,000 रुपये प्रतिमाह तक प्रोत्साहन दिया जाएगा, जो सामान्य क्षेत्र में 2 वर्षों और विनिर्माण क्षेत्र में 4 वर्षों तक मिलेगा। प्रोत्साहन राशि वेतन के स्लैब के अनुसार 1,000 से 3,000 रुपये प्रतिमाह तक होगी। यह योजना 1 लाख रुपये तक वेतन पाने वाले कर्मचारियों पर लागू होगी।

उन्होंने बताया कि लखनऊ, सीतापुर, हरदोई, लखीमपुर खीरी, बाराबंकी और रायबरेली जिलों में 37,926 पंजीकृत प्रतिष्ठान हैं, जिनमें से 7,087 सक्रिय योगदानकर्ता हैं और 5 लाख से अधिक कर्मचारी सक्रिय यूएएन धारक हैं। क्षेत्रीय कार्यालय ने पिछले चार महीनों में 1.88 लाख से अधिक दावे निस्तारित कर 498 करोड़ रुपये से अधिक की राशि वितरित की है। योजना का लाभ उठाने के लिए प्रतिष्ठानों को नए कर्मचारियों की नियुक्ति करनी होगी। योजना की विस्तृत जानकारी के लिए 18 अगस्त को pmvbry.epfindia.gov.in पोर्टल शुरू किया गया है।

मंथन

यूपीएसआईएफएस में तीन दिनी सेमिनार के अंतिम दिन एक्सपर्ट्स ने कई प्रमुख विषयों पर पैनल डिस्कशन में लिया हिस्सा

चीन, पाकिस्तान की 'ऑफेंसिव स्ट्रैटेजी' का मुकाबला करना जरूरी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: राज्य सरकार भविष्य आधारित तकनीकों के प्रयोग के जरिए प्रदेश के समक्ष उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का सामना करने की तैयारी कर रही है। इस दिशा में उत्तर प्रदेश इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेंसिक साइंसेस (यूपीएसआईएफएस) में तीन दिवसीय सेमिनार के तीसरे व अंतिम दिन बुधवार को कई अहम विषयों पर लेकर चर्चा हुई। इसमें साइबर सुरक्षा से लेकर फॉरेंसिक साइंस की उन्नति से लेकर कई विषयों पर पैनल डिस्कशन का आयोजन हुआ, जिसमें जीनोम मैपिंग, जिनियोलॉजिकल डाटाबेस निर्माण, एआई व आंत्रप्रेन्योरशिप जैसे मुद्दे प्रमुख रहे।

इसी कड़ी में साइबर क्राइम को लेकर एक्सपर्ट्स ने माना कि चीन-पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देशों की ओर से भारत की साइबर सुरक्षा में सेंध लगाने की बढ़ती कोशिशों पर लगाम लगाने की जरूरत है। एक्सपर्ट्स ने माना कि चीन-पाकिस्तान की ऑफेंसिव स्ट्रैटेजी का सामना करने के लिए भारत को तेजी से सिक्योर डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करनेकी जरूरत है। साइबर क्राइम की सबसे अहम कड़ी साइबर किल चेन को रक्तबीज बताते हुए उन्होंने कहा कि इसे वैश्विक प्रयासों के जरिए ही तोड़ा जा सकता है। वहीं, फॉरेंसिक की फील्ड में भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और भविष्य आधारित तकनीकों के प्रयोग के जरिए पीड़ितों को न्याय व सहायता दिलाने के साथ दोषियों को दंड दिलाने पर जोर दिया गया।

ऑस्ट्रेलिया के साइबर एक्सपर्ट रॉबी अब्राहम ने वर्चुअल माध्यम से पैनल डिस्कशन में जुड़कर हैकिंग की बदलती प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी। इसे रोकने के लिए रेगुलर सिक्योरिटी ट्रेनिंग, सभी अकाउंट को एमएफए इनेबल करना, एंटीवायरस का इस्तेमाल, ई-मेल और मैसेज के प्रति सजग रहकर साइबर हैकिंग और फ्रॉड से बचा जा सकता है।

छोटा सा परिवर्तन डाल सकता है बड़ा प्रभाव

बुधवार को पैनल डिस्कशन में हिस्सा लेते हुए महाराष्ट्र के प्रमुख सचिव ब्रजेश सिंह ने साइबर खतरे व पुलिसिंग के वैश्विक परिदृश्य को लेकर चर्चा की। उन्होंने कहा कि दुनिया में आज छोटा सा परिवर्तन बहुत बड़ा इंपैक्ट ला सकता है। हिज्बुल्ला पेजर अटैक इसका उदाहरण है। उन्होंने कहा कि साइबर किल चेन रक्तबीज की तरह है। भारत का सबसे बड़े पोर्ट यानी 3 महीने के लिए जीएनपीटी का पोर्ट ऑपरेट नहीं हो पाया एक मालवेयर के कारण। यह साइबर किल चेन का उदाहरण था। साइबर क्राइम इंफ्रास्ट्रक्चर को वैश्विक प्रयासों के जरिए ही तोड़ा जा सकता है। उन्होंने बताया कि लॉकबिट को तोड़ने के लिए 11 देशों की सुरक्षा एजेंसियों को साथ आकर काम करना पड़ा।

इन पैनलिस्ट्स ने रखा अपना पक्ष

कार्यक्रम में एनसेस्ट्री इंटरफेस व फॉरेंसिक केसवर्क के विभिन्न पहलुओं पर सीडीआरआई लखनऊ के साइंटिस्ट राजेंद्र सिंह, आईईएसआर नोएडा के सीईओ आशीष दूबे, बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट ऑफ पैलेयोसाइंसेस लखनऊ के साइंटिस्ट डॉ. नीरज राय व हैदराबाद के बायोएक्सिस कंपनी के सीईओ अमित कुमार ने अपना पक्ष रखा। जबकि, फॉरेंसिक आंत्रप्रेन्योरशिप के लेकर अमेरिकी साइबर एक्सपर्ट पवन शर्मा, आईआईआईटी लखनऊ के निदेशक एएम शेरी, बायोटॉक्स सॉल्यूशन के निदेशक शिव पूजन, एसआईएफएस नई दिल्ली के सीईओ रंजीत सिंह ने युवाओं को प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में पैनसलिस्ट्स के साथ ही यूपीएसआईएफएस के एडिशनल डायरेक्टर राजीव मल्होत्रा, छात्र-छात्राएं व स्टाफ मौजूद रहे।

फील्ड में जाकर उपभोक्ताओं से मिलें अधिकारी : ऊर्जा मंत्री

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- विद्युत विभाग की समीक्षा बैठक में दिए निर्देश

अमृत विचार: ऊर्जा मंत्री एके शर्मा ने विभाग के अधिकारियों को चेताया है कि वे दफ्तरों तक सीमित न रहकर फील्ड में उतरकर अपनी सक्रियता दिखाएं। यह भी हिदायत दी कि अधिकारी मौके पर जाकर वास्तविक स्थिति देखें और उपभोक्ताओं से सीधे संवाद कर उनकी समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करें।

एके शर्मा की अध्यक्षता में बुधवार को संगम सभागार में ऊर्जा विभाग की समीक्षा बैठक हुई। इस मौके पर ऊर्जा मंत्री ने स्पष्ट और कड़े निर्देश देते हुए कहा कि विद्युत उपभोक्ताओं की सुविधा एवं संतोष ही हमारी प्राथमिकता है। सरकार की मंशा है कि हर घर तक निर्बाध, गुणवत्तापूर्ण और सुरक्षित बिजली आपूर्ति सुनिश्चित हो, ऊर्जा मंत्री ने विशेष रूप से 1912 उपभोक्ता सेवा हेल्पलाइन का उल्लेख करते हुए कहा कि इस नंबर पर आने वाली हर शिकायत को समयबद्ध और गुणवत्तापूर्ण ढंग से निस्तारित किया जाए। उन्होंने अधिकारियों को कड़े निर्देश दिए कि शिकायतों की अनदेखी या लापरवाही किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं की जायेगी और ऐसी स्थिति में जिम्मेदारी तय कर कार्रवाई की जाएगी।

न्यूज ब्रीफ

लापता युवती का शव नहर में मिला

पूराबाजार, अमृत विचार : पूराकलंदर थाना क्षेत्र के कुतुबपुर गांव के पास बुधवार सुबह तीन दिन से लापता युवती का शव शारदा सहायक नहर से बरामद किया गया। कैंट थाना क्षेत्र के हांसापुर गांव के रहने वाले दीनानाथ पासवान की पुत्री प्रिया पासवान (22) सोमवार को अचानक लापता हो गई। इसकी गुमशुदगी थाना कैंट में दर्ज कराई गई है। प्रभारी निरीक्षक पूराकलंदर देवेंद्र सिंह ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

एडीएम सिटी बने नोडल अफसर

अयोध्या, अमृत विचार : जिलाधिकारी निखिल टी. फुंडे ने नागरिक सुरक्षा से संबंधित कार्य के निस्तारण के लिए अपर जिलाधिकारी नगर योगानन्द पांडेय को नोडल/ प्रभारी अधिकारी नामित किया है।

स्वयं सेवकों की हुई नियुक्ति

अयोध्या, अमृत विचार : अपर जिलाधिकारी नगर योगानन्द पांडेय ने बताया कि स्वयं सेवक की नियुक्ति चयन समिति से साक्षात्कार के जरिए तीन वर्ष के लिए की गई है। साक्षात्कार में चयनित आवेदकों में चीफ वार्डन के एक, डिप्टी चीफ वार्डन के एक, डिवीजन वार्डन चौक के दो, स्टाफ अफसर, डिवीजन वार्डन चौक के एक व सेक्टर वार्डन के 13 पदों के लिए चयनित किया गया है।

डाकघर में सेवाएं ठप, उपभोक्ता परेशान

गोसाईगंज, अमृत विचार : स्थानीय डाकघर में कई दिनों से कार्य पूरी तरह ठप है। 28 जुलाई के बाद से उपभोक्ता डाकघर का चक्कर लगा रहे हैं, लेकिन उन्हें निराशा ही हाथ लग रही है। डाकघर कर्मचारियों का कहना है कि सरवर गायब होने की वजह से कामकाज बंद है। उपभोक्ताओं ने मांग की है कि समस्या का शीघ्र समाधान कराया जाए।

शिविर में बुजुर्गों के बने आयुष्मान गोल्डन कार्ड

बीकापुर, अमृत विचार : प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत ब्लॉक क्षेत्र की सभी 75 ग्राम पंचायतों के पंचायत भवन पर दूसरे दिन बुधवार को भी आयुष्मान शिविर एवं दृष्टि दोष नियंत्रण 15 दिवासीय शिविर का आयोजन किया गया। स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी देव प्रकाश वर्मा ने बताया कि आयुष्मान शिविर में 70 वर्ष से अधिक आयु पूरी कर चुके बुजुर्गों का पंजीकरण करके आयुष्मान गोल्डन कार्ड जारी किया गया। इसी के साथ-साथ मरीजो का नेत्र परीक्षण, शुगर, ब्लड प्रेशर और अन्य जांच की गई। जांच के दौरान मोतियाबिंद और अन्य बीमारी से पीड़ित मरीजो को रेफर करके नि:शुल्क उपचार कराया जाएगा।

मिल्कीपुर में मिला डेंगू मरीज

अयोध्या, अमृत विचार : मिल्कीपुर में बुधवार को एक मरीज में डेंगू की पुष्टि हुई है। स्वास्थ्य विभाग के हेल्थ बुलेटिन के मुताबिक अब तक 13 डेंगू मरीज मिल चुके हैं, जिसमें से 10 ठीक हो चुके हैं।

सड़क के किनारे मिला युवक का शव

पूराबाजार, अमृत विचार : पुलिस चौकी पूरा बाजार अंतर्गत दुगवां गांव के पास शारदा सहायक नहर की पुल के किनारे एक युवक का शव मिला। थानाध्यक्ष महाराजगंज राजेश कुमार सिंह ने बताया कि मृतक की पहचान के प्रयास जारी हैं। मृत्यु का सही कारण पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही पता चल सकेगा। मृतक के शरीर पर शिर के अलावा कहीं और चोट के निशान नहीं दिखे। पड़ोस के लोगों ने बताया कि यह व्यक्ति पिछले छह माह से यही आस-पास घूम रहा था। मानसिक रूप से विक्षिप्त था।

मोटरसाइकिल में टक्कर मार पलटी कार

रानीबाजार, अमृत विचार : पूराकलंदर थाना क्षेत्र के अयोध्या -रायबरेली रोड पर अमौना नहर की पुलिया के पास बुधवार को एक कार बाइक सवार को टक्कर मार कर पलट गई। टक्कर से घायल बाइक सवार की पहचान राम मूरत पुत्र स्वर्गीय राम केदार निवासी ग्राम मेहदौना थाना इनायतनगर के रूप में की गई। ग्राम प्रधान राजकुमार ने पुलिस को जानकारी दी। मौक पर पहुंची पुलिस ने घायल को जिला चिकित्सालय भिजवाया। कार चालक मौके से फरार हो गया।

आईआईटी मद्रास आधुनिक तकनीक से तैयार करेगा अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय

मंदिर निर्माण समिति की बैठक के अंतिम दिन लिया गया निर्णय, तीन घंटे चला मंथन

अयोध्या कार्यालय

अमृत विचार : अंतरराष्ट्रीय राम कथा संग्रहालय को आधुनिक तकनीक से तैयार करने की जिम्मेदारी आईआईटी मद्रास को दी गई है। मंदिर निर्माण समिति की तीन दिवसीय बैठक के अंतिम दिन सरयू तट स्थित संग्रहालय के निर्माण पर चर्चा हुई। तीन घंटे तक म्यूजियम की भव्यता और आम श्रद्धालुओं के लिए दी जाने वाली सुविधाओं पर मंथन किया गया।

संग्रहालय के निदेशक संजीव कुमार के अनुसार मार्च 2026 के पहले म्यूजियम आम श्रद्धालुओं के लिए नहीं खोला जा सकेगा। उन्होंने बताया कि संग्रहालय के सिविल वर्क में पहले फेज का कार्य पूरा कर लिया गया है। लगभग चार चरण में सिविल वर्क का कार्य पूरा किया जाना है, जिसके लिए निर्माण एजेंसी के द्वारा फरवरी तक कार्य पूरा करने का समय लिया गया है। सिविल वर्क के साथ-साथ संग्रहालय तैयार करने का कार्य भी चलेगा। जिससे निश्चित समय में इस म्यूजियम को पूरा किया जा सके।

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपतराय ने बताया कि पहले से ही पर्यटन विभाग की चार गैलरियां है, जो ऑपरेटिंग स्टेज में हैं। आईआईटी मद्रास अन्य गैलरी को विकसित करेगा। यह संस्था प्रधानमंत्री म्यूजियम में भी कार्यरत रही है। इसलिए इस संग्रहालय में कौन सा कार्य डिजिटल किया जाए इस पर अध्ययन किया जा रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय रामकथा संग्रहालय में बैठक करते मंदिर निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्र व ट्रस्ट के महासचिव चम्पतराय।

मंदिर परिसर में बनेगा कारसेवकों के नाम का स्मारक

मंदिर निर्माण समिति की बैठक के अंतिम दिन बुधवार को अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्र ने बताया कि राम मंदिर परिसर में जिस स्थान पर अशोक सिंघल खड़े होकर राम भक्तों का आह्वान किया था, उसी जगह मंदिर आंदोलन में आहुति देने वाले लोगों के नाम स्मारक तैयार किया जाएगा। इस स्मारक पर किसी भी व्यक्ति का नाम नहीं होगा। उन्होंने कहा कि पूरे मंदिर परिसर में 22 जनवरी 2024 में हुए लोकार्पण के दौरान प्रधानमंत्री का नाम अंकित किया गया था, उस शिला को यात्री सुविधा केंद्र पर लगाया जायेगा। यदि नवंबर तक ट्रस्ट मंदिर निर्माण की तिथि तय करता है, तो समिति की ओर से सभी कार्य समय पर पूरे कर लिए जाएंगे।

म्यूरल्स लगाने में तकनीकी समस्या आई सामने

नृपेंद्र मिश्र ने बताया कि सितंबर से मंदिर में तीन लिफ्ट लगाने का काम शुरू होगा। लिफ्ट जल्द ही अयोध्या पहुंचेंगी। परकोटे में अभी 45 हजार क्यूबिक फीट पत्थर लगना बाकी है। यह कार्य भी अगले छह सप्ताह में पूरा कर लिया जाएगा। लोअर प्लिंथ में म्यूरल्स लगाने में तकनीकी समस्या सामने आई है। रेलिंग के लिए आवश्यक स्थान का ध्यान नहीं रखा गया था। इस कारण यह काम सितंबर के अंत या अक्टूबर के पहले सप्ताह तक पूरा होगा।

पानी में उतराता मिला ग्रामीण का शव

पूराबाजार, अमृत विचार: पुलिस चौकी पूराबाजार क्षेत्र के मड़ना उपरहार गांव के रहने वाले गयादीन राजभर (45) का शव गांव के किनारे माझा क्षेत्र में पानी में उतराता मिला। मृतक की पत्नी श्याम रथी ने पुलिस की सूचना दी। थानाध्यक्ष महाराज राजेश कुमार सिंह ने बताया कि प्रथम दृष्टया में उसकी मृत्यु पानी में डूबने से होना लग रहा है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मृत्यु के सही कारण का पता चल सकेगा। मड़ना ग्राम प्रधान प्रतिनिधि ओम प्रकाश यादव ने बताया कि मृतक गया दीन राजभर मेहनत मजदूरी कर परिवार का पालन पोषण कर रहा था।

आत्महत्या का प्रयास करने वाली छात्रा को तीन माह की छुट्टी

अयोध्या। राजर्षि दशरथ मेडिकल कॉलेज गंजा में गत दिनों परीक्षा के दौरान आत्महत्या का प्रयास करने वाली उपचाराधीन मेडिकल छात्रा को चिकित्सकों ने आराम की सलाह दी है। मेडिकल कॉलेज प्रशासन ने छात्रा को तीन माह की छुट्टी है। एमबीबीएस 2024 बैच की छात्रा अब तीन माह के रेस्ट के बाद तीन पेपरों की सप्लीमेंट्री देगी। चिकित्सा अधीक्षक डॉ. देवाजीत शर्मा ने बताया कि इलाज कर रहे चिकित्सक के अनुसार छात्रा घर में परिवार के साथ रहने के बाद ठीक हो जाएगी। बता दें कि एमबीबीएस प्रथम वर्ष की छात्रा मानसिक रूप से बीमार चल रही थी। उसने परीक्षा के दौरान आत्महत्या का प्रयास किया था।

कब्जे के खिलाफ बेदखली का आदेश, 31.5 लाख का जुर्माना

मवई, अयोध्या

अमृत विचार: रूदौली तहसील क्षेत्र के नेवरा गांव में सरकारी खेल मैदान की जमीन पर अवैध कब्जे के मामले में न्यायालय ने कड़ा फैसला सुनाया है। मामला ग्राम नेवरा की भूमि गाटा संख्या 598 से जुड़ा है, जो राजस्व अभिलेख में खेल मैदान के रूप में दर्ज है।

नेवरा गांव के शकील खां ने इस जमीन के एक हिस्से पर पक्की दुकान बना ली थी। यह मामला तीन जून 2025 को न्यायालय पहुंचा। इससे पहले शकील के पिता अकील खां के खिलाफ भी बेदखली का मामला चल रहा था, लेकिन निर्णय से पहले उनका देहांत हो गया। भूमि प्रबंधक सचिव की पैमाइश में पुष्टि हुई कि प्रतिवादी का निर्माण खेल मैदान की सुरक्षित भूमि पर है। न्यायालय ने प्रतिवादी की आपत्तियों को खारिज करते हुए शकील खां को विवादित भूमि से बेदखल करने का आदेश दिया है। न्यायालय ने ग्राम सभा की भूमि के दुरुपयोग के लिए 31.5 लाख रुपये का जुर्माना और पांच रुपये निष्पादन शुल्क लगाया है। साथ ही आर.सी. प्रपत्र 21 जारी करने का भी आदेश दिया है। तहसीलदार रुदौली विजय कुमार गुप्ता ने बताया कि नेवरा गांव में सरकारी भूमि पर अवैध कब्जे को लेकर बेदखली का आदेश जारी किया गया है। अभी नोटिस दी गई है।

फिल्मी सितारों की रामलीला में इस वर्ष अनोखा होगा रावण दहन

अयोध्या कार्यालय

अमृत विचार : रामनगरी में इस बार 22 सितंबर से दो अक्टूबर तक फिल्मी सितारों की रामलीला का आयोजन होगा। इसमें अलग-अलग फिल्मी कलाकार अपनी भूमिका निभाएंगे। इस बार आयोजन सरयू तट स्थित राम कथा पार्क में होने जा रहा है। इसको लेकर अयोध्या की रामलीला की कमेटी ने तैयारियां शुरू कर दी है और 22 अगस्त को महापौर गिरीश पति त्रिपाठी व साधु संतों की उपस्थिति में भूमि पूजन का कार्यक्रम संपन्न किया जाएगा। रामलीला में इस बार रावण दहन सबसे अनोखा होगा। कमेटी अध्यक्ष सुभाष मलिक का दावा है कि सबसे बड़े रावण के पुतला का दहन होगा। पुतला दिल्ली की स्पेशल टीम बनाएगी। 24 अगस्त से रावण बनाने की प्रक्रिया शुरू होगी। मेघनाथ व कुंभकर्ण का भी पुतला जलेगा। इस वर्ष रामलीला में स्थानीय कलाकारों को भी शामिल किया गया है।

● 22 अगस्त को भूमि पूजन, एक माह बाद शुरू होगी रामलीला

पात्र	भूमिका
केवट	भोजपुरी सुपरस्टार व सांसद रवि किशन
बाली	भोजपुरी सुपरस्टार व सांसद मनोज तिवारी
राम	राहुल बूचर
सीता	अर्चना
लक्ष्मण	राजन मोदी
परशुराम	पुनीत इस्सर
नारद	राजेश पुरी
हनुमान	कृष्ण
राजा दशरथ	राकेश बेदी
कुंभकर्ण	विनय सिंह
रावण	मनीष शर्मा (क्राइम पेट्रोल वाले)
मेघनाथ	रजा मुराद
विभीषण	अवतार गिल

मेडिकल में दिखाई हाथ की सफाई अब सीएमओ ने जांच बैठाई

अयोध्या कार्यालय

अमृत विचार : रौनाही थाना क्षेत्र देवई गांव के वादी मुकदमा की शिकायत पर जिलाधिकारी निखिल टीकाराम ने संज्ञान लेते हुए सीएमओ को जांच कराने का आदेश दिया है। सीएमओ ने जांच कमेटी गठित कर जिला अस्पताल के प्रमुख अधीक्षक को मेडिकल बोर्ड से स्वास्थ्य परीक्षण कराने के लिए पत्र लिखा है।

वादी मुकदमा आशीर्वाद तिवारी ने जिलाधिकारी को पत्र लिखकर बताया था कि मारपीट की घटना के सम्बन्ध में थाना रौनाही में दर्ज केस में मेडिकल परीक्षण के लिए पुलिस सीएचसी सोहावल ले गई थी। वहां से जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया गया, लेकिन मेडिकल परीक्षण नहीं किया गया। विरोध करने पर 18 अगस्त को शाम 04.45 पर मेडिकल किया गया, जिसमें चोटों की प्रकृति को जान-बूझकर सामान्य बताया गया, जबकि गंभीर चोट के कारण स्थिति नाजुक बनी हुई है। प्रार्थना-पत्र में संबंधित डॉक्टर व कर्मचारी की भूमिका की जांच कराते हुए मेडिकल टीम बनाकर पुनः मेडिकल परीक्षण कराने की मांग की गई थी। जिलाधिकारी ने सीएमओ निर्देशित किया कि शिकायती पत्र में उल्लिखित तथ्यों की गहनता से जांच कर आख्या तीन दिवस के भीतर उपलब्ध कराएं। सीएमओ डॉ. सुशील कुमार ने डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव की अध्यक्षता में डॉ. दीपक पांडे और डॉ. वेद प्रकाश त्रिपाठी को सदस्य नामित करते हुए दो दिन में आख्या मांगी है।

तीन भाइयों समेत चार पर रिपोर्ट दर्ज करने का आदेश

अयोध्या, अमृत विचार: उधारी मांगने पर मारपीट कर गंभीर रूप से घायल करने के मामले में कोर्ट ने तीन सगे भाइयों समेत चार के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करके विवेचना करने का आदेश नगर कोतवाल को दिया है। यह आदेश मजिस्ट्रेट सोनल उपाध्याय की अदालत से बुधवार को हुआ है। अधिवक्ता मार्तंड प्रताप सिंह ने बताया कि अंगूरी बाग आवास विकास कॉलोनी थाना कोतवाली नगर निवासी उमा तिवारी के पति नरेंद्र कुमार तिवारी से श्वेता और उनके पति आनंद श्रीवास्तव ने पांच लाख रुपए उधार लिए थे। रकम वापस मांगने पर 10 जुलाई 2025 को आनंद श्रीवास्तव अपने भाई आदर्श श्रीवास्तव ,अर्पण श्रीवास्तव तथा पत्नी श्वेता श्रीवास्तव के साथ उनके ऊपर हमला बोल दिये। इसकी रिपोर्ट कोतवाली में नहीं लिखी गई तो उमा ने अदालत की शरण ली थी।

कोचिंग सेंटर व 5 कॉलेजों को बंद करने के निर्देश

अयोध्या कार्यालय

अमृत विचार : अवैध कोचिंग और अमान्य विद्यालयों को लेकर अब जिला विद्यालय निरीक्षक डॉ. पवन कुमार तिवारी खुद मैदान में उतर गए। निरीक्षण के दौरान अवैध कोचिंग और कॉलेज देख वह हतप्रभ रह गए। उन्होंने गत दिनों अभियान के बाद भी संचालित अमान्य एक कोचिंग सेंटर और पांच कॉलेजों को नोटिस जारी करते हुए तत्काल बंद करने के निर्देश दिए हैं।

जिला विद्यालय निरीक्षक को जांच में नाका प्रयागराज हाईवे पर स्थित सिग्मा कोचिंग क्लासेज एवं सिग्मा लाईब्रेरी अवैध रूप से संचालित मिली। जिसके संचालक श्यामू गुप्ता को तत्काल बन्द करने के निर्देश दिए गये। इसके अलावा गायत्री सर्वोदय विद्यालय खनुवावां कछौली, पूरा में प्राथमिक स्तर की मान्यता प्राप्त है किन्तु कक्षा 12 तक अवैध कक्षाएं संचालित होती पायी गयी। जनता उ.मा. विद्यालय गयासपुर बेसिक शिक्षा विभाग से एडेड संस्था है इस विद्यालय में मानव सम्पदा से शिक्षक/ शिक्षणेत्तर कर्मचारी अवकाश नहीं लेते है। प्रधानाचार्य शेषमणि सिंह द्वारा अवगत कराया गया कि विद्यालय में मानव सम्पदा हेतु निर्गत आदेश की जानकारी नहीं है और न ही प्रभावी है। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को पत्र भेजा गया। विद्यालय में मानक के अनुरूप शिक्षण कक्ष नहीं मिले। जिसके सम्बन्ध में नोटिस निर्गत करते हुए मान्यता प्रत्याहरण की कार्यवाही की जायेगी। प्रधानाचार्य द्वारा कोई भी अभिलेख नहीं प्रस्तुत किया जा सका। इस संस्था में भी अवैध/अमान्य कक्षाए 11 एवं 12 की संचालित की जा रही है। प्रबन्धक से स्पष्टीकरण तलब किया गया है। समर पब्लिक स्कूल नागपाली तारून में सीबीएससी बोर्ड से मान्यता प्राप्त नहीं है फिर भी सीबीएससी बोर्ड की पुस्तकों से अध्ययन कार्य कराया जा रहा था। संस्था प्रबन्धक को नोटिस दी गई। शिवनायक एजूकेशनल इंस्टीयूट्स सजहरा भवानीपुर अयोध्या अवैध रूप से कक्षा 01 से 12 तक संचालित मिलीं। शिवाजी जूनियर हाई स्कूल रामपुर भगन अयोध्या में अवैध रूप से कक्षा 9 से 12 तक की कक्षाए संचालित पाई गईं। इसे बंद करने के निर्देश दिए गए।

● सभी को नोटिस जारी, अवैध कोचिंग और कॉलेज देख हतप्रभ रह गए डीआईओएस

> जिले में अमान्य एवं अवैध रूप से संचालित विद्यालयों को अपने विद्यालय में अटैच (सम्बद्ध) किए हुए मान्यता प्राप्त विद्यालयों को चिन्हित करते हुए कार्यवाही की जायेगी। यदि अवैध आमान्य कक्षाए संचालित पायी जाती है तो कार्रवाई की जाएगी।
> —डॉ. पवन कुमार तिवारी, डीआईओएस

साक्ष्य छिपाने की आरोपी महिला का रिमान्ड निरस्त

अयोध्या कार्यालय

नागेंद्र हत्याकांड

अमृत विचार: पूराकलंदर थाना क्षेत्र के बहुचर्चित नागेंद्र यादव हत्याकांड में साक्ष्य छिपाने की आरोपी महिला का न्यायिक अभिरक्षा रिमांड निरस्त करते हुए उसे 20 हजार के मुचलके पर रिहा करने का आदेश हुआ है। विवेचक थाना पूराकलंदर थानाध्यक्ष देवेंद्र सिंह की लापरवाही रिमांड निरस्त करने का मुख्य कारण रही। यह आदेश मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट सुधांशु शेखर उपाध्याय की अदालत से बुधवार को हुआ।

अधिवक्ता निर्णय यादव ने बताया कि 23 जून की रात नागेंद्र प्रसाद यादव उर्फ सोनू यादव निवासी पलिया गोवा खेत सींचने गया था। सहदेव के खेत के पास चारपाई पर लेटा था। इसी दौरान कुछ अज्ञात लोगों ने गला काटकर हत्या कर दी। पिता राम प्रकाश यादव ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी। मामले में मुख्य आरोपी जेल में है। केशवपति को पुलिस ने हत्या में मिले साक्ष्य को छिपाने के आरोप में गिरफ्तार करके न्यायालय के समक्ष पेश करके 14 दिवस के न्यायिक अभिरक्षा रिमांड में भेजने की याचना की। साक्ष्य छिपाने की धारा में अधिकतम सजा सात वर्ष तक की है। किसी आरोपी को गिरफ्तार करने के पूर्व धारा 35 भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता का अनुपालन भी सुनिश्चित करना होता है जो विवेचक ने नहीं किया। पूरी केस डायरी में इस धारा की नोटिस लेने से इनकार किए जाने का भी कोई तत्व उपलब्ध नहीं था। विवेचक द्वारा अभियुक्त की गिरफ्तारी का कोई कारण भी केस डायरी में अंकित नहीं किया और ना ही कोई चेकलिस्ट तैयार की। थाना प्रभारी के इस कृत्य को कोर्ट ने न्यायोचित एवं विधि संमत न मानते हुए विवेचक की ओर से दिए गए प्रार्थना पत्र को निरस्त कर दिया।

वितरण तो कहीं हंगामे के डर नहीं हो पाया खाद का वितरण

बीकापुर अयोध्या

अमृत विचार: साधन सहकारी समिति खजुरहट पर खाद लेने के लिए उमड़ी भीड़ को देखकर पुलिस प्रशासन का पसीना छूट गया। भीड़ को देखते हुए वितरण व्यवस्था कार्य बंद करा दिया गया। इसी तरह चौरे बाजार, कोंछा समिति पर पुलिस बल की मौजूदगी में यूरिया उर्वरक वितरण संभव हो सका जबकि जजवारा में बेकाबू भीड़ के चलते यूरिया वितरण नहीं किया जा सका।

समिति मलावन के सचिव प्रमोद कुमार यादव ने बताया कि 400 बोरी यूरिया का वितरण हुआ। बलरामपुर के सचिव संजय कुमार उपाध्याय ने बताया किसानों की अपार भीड़ हंगामे के बीच व भारी पुलिस बल के मौजूदगी में खाद वितरित किया गया। गरौली सहकारी समिति पर सचिव अनूप कुमार तिवारी ने भी कडी पुलिस सुरक्षा के कड़े पहरेदारी में यूरिया वितरित कर पाने की बात बताई। साधन सहकारी समिति जजवारा में सचिव प्रमोद कुमार ने बताया कि भारी किसानों की भीड़ के दबाव के चलते और हंगामा की स्थिति में खाद का वितरण संभव नहीं हो सका। अवधेश कुमार बर्मा सचिव जाना बाजार ने बताया किसानो की भारी भीड़ के चलते वितरण में सहयोग करने के लिए नायब तहसीलदार रामखेलावन, दरोगा शिव आशीष भारती सहित पुलिस बल के सहयोग के बाद भी वितरण की व्यवस्था की गई। लेकिन नेटवर्क के दिक्कत के चलते वितरण नहीं हो पाया। जबकि किसानों का कहना है कम खाद और भीड़ ज्यादा देखकर हंगामा टालने के लिए वितरण कार्य को रोका गया। नायब तहसीलदार रामशरण ने बताया की तकनीकी कमी के चलते वितरण कार्य को रोकवा दिया गया। दूसरे दिन खाद वितरित की जाएगी। एकडीओ सहकारिता अमित कुमार सिंह ने बताया जिस जिस समितियों पर वितरण हुआ है।वहां शीघ्र यूरिया उर्वरक पहुंचाकर वितरण कराया जाएगा। जहां पर वितरण नहीं हो पाया है वहां पुलिस के सहयोग से वितरण कराया जाएगा। खाद की कमी नहीं होने दी जाएगी। सभी किसानों को खाद उपलब्ध कराया जाएगा।

विकासखंड तारुन अंतर्गत साधन सहकारी समिति पर यूरिया के लिए लाइन में लगे किसान।

बदली व्यवस्था बेड एंड ब्रेकफास्ट व होम स्टे नीति-2025 मंजूर, अब यूपी टूरिज्म की वेबसाइट पर होम स्टे के लिए करना होगा आवेदन

घर के एक से छह कमरों तक की इकाई को बना सकेंगे होम स्टे

अयोध्या कार्यालय

अमृत विचार: रामनगरी में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। हाल ही में मंजूर की गई बेड एंड ब्रेकफास्ट (बीएंडबी) व होम स्टे नीति-2025 के तहत अब कोई भी व्यक्ति अपने घर के एक से छह कमरों तक की इकाई को होम स्टे के रूप में पंजीकृत करा सकता है। इस नीति का उद्देश्य राज्य के धार्मिक और पर्यटन स्थलों पर आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों को सस्ती और सुविधाजनक ठहरने की सुविधा प्रदान करना है। इसके साथ ही इस नीति से स्थानीय लोगों के लिए रोजगार और आय के नए अवसर भी सृजित होंगे।

होम स्टे रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाने के लिए उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग ने इसे पूरी तरह ऑनलाइन कर दिया है। पहले होम स्टे संचालकों को केंद्र सरकार के निधि प्लस पोर्टल पर पंजीकरण कराना पड़ता था, लेकिन अब स्थानीय निकायों की अनापत्ति के साथ यूपी टूरिज्म की वेबसाइट (www.uptourism.gov.in) पर आसानी से आवेदन किया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में होम स्टे के लिए आवेदन शुल्क 500 से 750 रुपये और शहरी या सिल्वर श्रेणी के होम स्टे के लिए 2000 रुपये निर्धारित किया गया है। यह कदम रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया को और अधिक सुलभ और किफायती बनाता है।

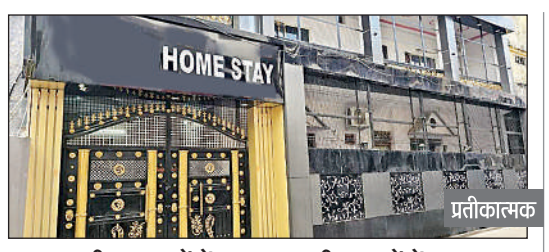

प्रतीकात्मक

● ग्रामीण इलाकों में 750 व शहरी इलाकों में 2000 रुपये में होम स्टे के लिए होंगे पंजीकरण

रामनगरी में 1146 होम स्टे हैं पंजीकृत

अयोध्या में होम स्टे की मांग तेजी से बढ़ रही है। धार्मिक पर्यटन के केंद्र के रूप में उभर रही रामनगरी में रोज नए होम स्टे के लिए आवेदन प्राप्त हो रहे हैं। अब तक जिले में 1146 होम स्टे पंजीकृत हो चुके हैं, जो पर्यटकों की बढ़ती संख्या को देखते हुए ठहरने की समस्या को हल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

अधिकतम 12 बिस्तरों की मिलेगी अनुमति

नई नीति के तहत होम स्टे में अधिकतम 12 बिस्तरों की अनुमति होगी। जिसमें एक से छह कमरों तक की इकाई शामिल हो सकती है। पर्यटक इस सुविधा का लाभ लगातार सात दिनों तक ले सकते हैं और यदि आवश्यक हो तो नवीनीकरण की व्यवस्था भी उपलब्ध है। अनुमति की प्रक्रिया जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक की अगुवाई वाली कमेटी द्वारा पूरी की जाएगी, जिससे प्रक्रिया में पारदर्शिता और सुरक्षा सुनिश्चित होगी।

स्थानीय लोगों को भी मिलेगा फायदा

पर्यटन विभाग के अधिकारी बृजपाल सिंह ने बताया कि अयोध्या में पर्यटन और होम स्टे की संख्या रोज बढ़ रही है। सरकार के लिए गए निर्णय से योजना में पारदर्शिता आएगी। इसके साथ ही स्थानीय लोग होम स्टे के लिए आवेदन कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं।

हमले में चार दोषी करार सजा पर सुनवाई 22 को

अयोध्या, अमृत विचार: अपराधिक मानव वध के प्रयास के एक मामले में कोर्ट ने चार आरोपियों को दोषी पाते हुए न्यायिक अभिरक्षा में लेकर जेल भेज दिया। सजा के प्रश्न पर सुनवाई 22 अगस्त को होगी। सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता रमेश तिवारी ने बताया कि घटना 11 मई 2015 की है। देवी प्रसाद, अरविंद कुमार, मंगल कुमार और दुर्गा देवी की मुर्गी दुर्गा प्रसाद के घर में घुस गई और उनकी बकरी की आंख में चोंच मार दिया, जिससे बकरी की आंख फूट गई। इस पर दुर्गा प्रसाद की पत्नी पार्वती देवी ने नाराजगी जताई तो सभी लोग लाठी डंडा लेकर गाली देते हुए उन्हें मारा पीटा। जिससे उनके सिर पर काफी चोटें आईं। इसकी रिपोर्ट दुर्गा प्रसाद की तहरीर पर दर्ज हुई थी। विवेचना के बाद पुलिस ने आरोप पत्र अदालत में प्रस्तुत किया। सुनवाई के बाद कोर्ट ने चारों को दोषी पाते हुए जेल भेज दिया।

अमृत विचार

अयोध्या, गुरुवार, 21 अगस्त 2025

न्यूज ब्रीफ

जिला अस्पताल को मिले तीन वरिष्ठ परामर्शदाता

अयोध्या। जिला चिकित्सालय में चिकित्सकों का टोटा अब समाप्त होने जा रहा है। शासन ने तीन वरिष्ठ परामर्शदाताओं की यहां तैनाती की है। बाराबंकी के अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. विभूति लाल वर्मा, उन्नाव में तैनात रहे अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ.हरनाम सिंह व सिद्धार्थनगर में जिला कुष्ठ अधिकारी रहे डॉ दिनेश चौधरी को पुरुष चिकित्सालय में तैनात किया गया है। ये सेवानिवृत्त होने के बाद संविदा पर आ रहे हैं। प्रमुख चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजय सिंह गौतम ने बताया कि तीनों चिकित्सकों के आने से अस्पताल की उपचार व्यवस्था और मजबूत हो जाएगी।

महीने भर बाद भी नही हुई कार्रवाई

गोसाईगंज, अमृत विचार : नगर पंचायत प्रशासन ने स्थानीय निवासी महेन्द्र कुमार को बिना अनुमति मीट की दुकान संचालित करने के मामले में 11 जुलाई को नोटिस जारी की। महीने भर बीत जाने के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं हुई। जबकि नोटिस में तीन कार्य दिवस के भीतर दुकान हटाने का निर्देश अन्यथा जुर्माना एवं दंडात्मक कार्रवाई की चेतावनी दी गई है। दिनेश चंद्र तिवारी, एसएन विश्वकर्मा, कपिल देव व संजय कुमार आदि ने कार्रवाई की मांग की है।

राजेश अध्यक्ष व अंशू बने ग्राम पंचायत संघ के मंत्री

बीकापुर। ग्राम पंचायत अधिकारी संघ की बैठक में सांगठनिक ढांचे को मजबूती और अपने कर्तव्यों का पालन करने संकल्प लिया गया। ब्लॉक के अटल बिहारी वाजपेई सभागार में आयोजित बैठक में कार्यकारिणी का गठन किया गया। अध्यक्ष पद पर राजेश चौधरी और अंशू यादव को मंत्री चुना गया। नई कार्यकारिणी में अध्यक्ष पद के लिए राजेश चौधरी लगातार दूसरी बार चुने गए। इसके अलावा उपाध्यक्ष चंद्रेश वर्मा, जिला प्रतिनिधि राजकुमार, मंत्री अंशू यादव, संरक्षक सहायक विकास अधिकारी आईएसबी बद्रीनाथ चुने गए। खंड विकास अधिकारी हरिश्चंद्र ने नई कार्यकारिणी को बधाई दी। इस मौके पर सहायक विकास अधिकारी पंचायत धनजीत और ब्लॉक के सचिव शामिल रहे।

जन्माष्टमी में हो रहे धार्मिक व सांस्कृतिक आयोजन

रानीबाजार। रानी बाजार में श्री कृष्णा जन्माष्टमी धूमधाम से मनाई जा रही है। प्रतिदिन शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम सोहर व भजन गाए जाते हैं। चौथे दिन बुधवार को माधव सर्वोदय इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य ने आरती की। एसके जन्मोत्सव समिति ने तीन लोगों को अंग वस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर पंडित राम गोपाल, सुखदेव उपाध्याय, अजीत उपाध्याय, राजन उपाध्याय, राज भूषण मिश्रा, राजकुमार आदि मौजूद रहे।

16 प्रार्थना पत्र में से 12 का मौके पर समाधान

नगर निगम के अयोध्याधाम कैंप कार्यालय में हुई जनसुनवाई

अयोध्या कार्यालय

कैंप कार्यालय में लोगों की शिकायत सुनते महापौर गिरीश पति त्रिपाठी। ● अमृत विचार

अमृत विचार: अयोध्याधाम स्थित कैंप कार्यालय में बुधवार को जनसुनवाई के दौरान कुल 16 प्रार्थना पत्र आए, जिनमें 12 का मौके पर ही समाधान कराया।

जनसंपर्क अधिकारी मुकेश कुमार पांडे ने बताया कि उमा मिश्रा ने गृह एवं जलकर अधिक आने की शिकायत की। महापौर गिरीशपति त्रिपाठी ने जोनल अधिकारी को पत्रावली तलब कर तत्काल प्रभाव से समस्या का समाधान करने के निर्देश दिए। मीरापुर वार्ड के निर्मोही बाजार में शौचालय की पाइपलाइन टूटने की शिकायत धनंजय मिश्रा ने दर्ज कराई। पाइपलाइन को तुरंत सही करवाई गई। उन्होंने योगराज संस्कृत श्रीराम महाविद्यालय रंग आश्रम के पास सोलर लाइट लगवाने का निर्देश दिया। इसके साथ ही सरयूपुरम कॉलोनी में स्ट्रीट लाइट लगवाने, सीवर लाइन के चेंबर का निर्माण कराने सहित साफ-सफाई से भी जुड़े प्रकरण आए। महापौर ने सभी शिकायतों का तीन दिन के भीतर निस्तारण कर सूचित करने का निर्देश दिया।

उन्होंने अधिकारियों को कहा कि शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण होना चाहिए। गड़बड़ी पाए जाने पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। इस मौके पर जोनल अधिकारी अशोक गुप्त, पार्षद विनय जायसवाल, अंकित त्रिपाठी, भाजपा नेता डॉ. राकेश मणि त्रिपाठी, पूर्व मंडल अध्यक्ष विनोद श्रीवास्तव, रमेश राना, कौशलेंद्र पांडेय आदि मौजूद रहे।

कर्मचारी नेताओं से मिले महापौर, मांगा सहयोग

अयोध्या, अमृत विचार : महापौर गिरीश पति त्रिपाठी ने सिविल लाइन्स स्थित आवास पर राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के तत्वावधान में कर्मचारी नेताओं से मुलाकात की। उनसे अयोध्या के उत्थान के लिए सहयोग मांगा। कर्मचारी नेताओं ने साफ-सफाई, सड़क, नाली निर्माण, पार्क के सुंदरीकरण तथा शुद्धिकरण स्थल के निर्माण का सुझाव दिया। महापौर ने आश्वासन दिया। परिषद के अध्यक्ष ओपी सिंह, महेश, अजीत, धर्मेंद्र आदि मौजूद थे।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी वार्ड में कल भ्रमण कर जनसमस्याएं जानेंगे महापौर

अयोध्या, अमृत विचार : नगर की सरकार आपके द्वार अभियान के तहत 22 अगस्त को नगर निगम की टीम के साथ महापौर गिरीशपति त्रिपाठी श्यामा प्रसाद मुखर्जी वार्ड का भ्रमण कर सफाई, पेयजल, पार्कों, नालियों एवं गलियों की स्थिति देखेंगे। इस दौरान जनसुनवाई कर समस्याओं का समाधान भी कराएंगे। नगर आयुक्त जयेंद्र कुमार ने सभी विभागाध्यक्षों को टीमों सहित मौके पर मौजूद रहने के निर्देश दिए हैं।

मिल्कीपुर में बनेगा बाबा गहनाग उपवन

अयोध्या। विधानसभा क्षेत्र मिल्कीपुर के अहिरौली-सलौनी में बाबा गहनाग उपवन का निर्माण किया जाएगा। इसको लेकर बुधवार को पूर्व सांसद लल्लू सिंह ने पौधरोपण अभियान की शुरुआत की। इस अवसर पर पीपल, बरगद, नीम, अशोक और गूलर सहित कई प्रजातियों के पौधे रोपे गए। अभियान में विद्यालय के छात्रों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। पौधे रोपे, पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। कार्यक्रम में पूर्व सांसद ने कहा कि उपवन में विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाए जाएंगे और इनके संरक्षण की विशेष व्यवस्था होगी। मौके पर विनोद कुमार पासी ग्राम प्रधान, अर्जुन सिंह, अमित सिंह प्रधान, रविन्द्र सिंह, जयचंद्र सिंह सहित बडी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

चिकित्सक रहते हैं छुट्टी पर, सीएमएस पैसा ले निकलवाते वेतन

अयोध्या कार्यालय

● भाजपा नेता ने कुमारगंज 100 शैय्या में बदहाली की मुख्यमंत्री से की शिकायत, लगाये गंभीर आरोप

अमृत विचार : भाजपा नेता व कुमारगंज 100 शैय्या चिकित्सालय के रोगी कल्याण समिति के सदस्य रजनीश सिंह ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को आठ बिंदुओं पर शिकायती पत्र भेजा है। उन्होंने अस्पताल की बदहाली के लिए सीएमएस डॉ.रवि पांडेय को जिम्मेदार ठहराते हुए कई गंभीर आरोप लगाये हैं। कार्रवाई की मांग की है। आरोप है कि अस्पताल में तैनात सभी चिकित्सक में से अधिकांश दो दिन आते हैं और चार दिन के हस्ताक्षर करके अपनी उपस्थिति दर्ज करवा देते हैं। जिसके एवज में सीएमएस चिकित्सकों से मनमाना पैसा भी लेते हैं। इसकी पुष्टि परिसर में लगे सीसीटीवी कैमरे से की जा सकती है। प्रत्येक प्रसव के पश्चात अवैध रूप से धन उगाही की जाती है। शिकायती पत्र में मांग की है कि इनके द्वारा की गई वित्तीय अनियमितता की जांच कर कार्रवाई की जाए। इस पत्र की प्रतिलिपि सीएमओ, एडी हेल्थ से लेकर मुख्य सचिव को भेजी है।

मामले में सीएमओ डॉ. सुशील कुमार ने अपर निदेशक स्वास्थ्य डॉ. बृजेश कुमार को पत्र लिख जांच कराने का आग्रह किया है। रजनीश का कहना है कि वह स्वयं रोगी कल्याण समिति का सदस्य हैं, लेकिन डॉ.रवि के पदभार ग्रहण करने के बाद से आज तक रोगी कल्याण की किसी भी बैठक में मुझको न तो सूचित किया गया है न ही मुझसे कोई सुझाव मांगा गया।

मैं किसी का मुंह व हाथ नहीं पकड़ सकता : सीएमएस

कुमारगंज 100 शैय्या अस्पताल के सीएमएस डॉ. रवि पांडेय का कहना है कि मैं किसी का मुंह और हाथ नहीं पकड़ सकता। जिसे जो समझ में आए वह शिकायत करे। मामला शासन के संज्ञान में है। शासन से जवाब मांगा जाएगा तो हर जवाब देने के लिए तैयार हूं।

किसान दिवस में उठा यूरिया व छुट्टा जानवरों का मुद्दा

अयोध्या कार्यालय

कलेक्ट्रेट सभागार में किसान दिवस पर किसानों के साथ बैठक करते जिलाधिकारी निखिल टीकाराम फुंडे। अमृत विचार

अमृत विचार: जिलाधिकारी निखिल टीकाराम फुंडे ने किसान दिवस पर बुधवार को कलेक्ट्रेट में किसानों के साथ बैठक की। इसमें किसानों ने यूरिया और छुट्टा जानवरों का मुद्दा उठाया। अफसरों ने इसके समाधान की बात कही।

किसानों ने शिकायती पत्र सौंपा। इसके बाद कृषक उत्पादक संगठन की बैठक की गई। उपकृषि निदेशक ने इसकी प्रगति के बार में बताया। किसान राकेश वर्मा, राम लौट वर्मा, उमानाथ शुक्ला, द्वारिका प्रसाद मौर्य आदि ने नई तकनीक की जानकारी दी। उप कृषि निदेशक ने बताया कि जिले में 16 किसान ड्रैगन फ्रूट कि खेती कर अच्छा मुनाफा प्राप्त कर रहे हैं। भाकियू के घनश्याम वर्मा ने कहा कि किसानों की समस्याओं को लेकर कई बार ज्ञापन सौंपा गया, लेकिन समाधान नहीं हुआ। समस्याओं का समाधान न हुआ तो 21 अगस्त को कलेक्ट्रेट का घेराव किया जाएगा। बैठक में यूनियन के जिलाध्यक्ष राम गणेश मौर्य, जिला उपाध्यक्ष शंकरपाल पांडे, संतोष वर्मा, विवेक पटेल, रविंद्र मौर्य आदि मौजूद रहे।

अयोध्या ने जीता स्कूली बैडमिन्टन में तिहरा बालिका खिताब

अयोध्या कार्यालय

मंडलीय स्कूली बैडमिन्टन व टेबल टेनिस प्रतियोगिता के विजेता खिलाड़ी आदर्श इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य वरुण प्रताप सिंह के साथ।

अमृत विचार: एमपीएलएल आदर्श इंटर कॉलेज के संयोजन में बुधवार को मकबरा के डॉ. आंबेडकर राज्य विद्यालयीय क्रीड़ा संस्थान स्टेडियम में मंडलीय विद्यालयीय बैडमिन्टन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मेजबान अयोध्या टीम में शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए बालिका अंडर-14, अंडर-17, अंडर-19 व बालक अंडर-19 वर्ग का खिताब जीता। बालक अंडर-17 वर्ग में सुल्तानपुर ने खिताब अपने नाम किया।

प्रतियोगिता के बालिका अंडर-19 वर्ग के फाइनल में श्रेया पाल ने मरहबा को सीधे सेटों में, युगल मुकाबले में अयोध्या की पल्लवी व आंचल ने सुल्तानपुर की प्रिया व मरहबा को सीधे सेटों में पराजित किया। बालिका अंडर-17 मुकाबले में अयोध्या की कीर्ति ने सुलतानपुर की अंशिका को, युगल में अयोध्या की आदित्य व कीर्ति ने सुल्तानपुर की अंशिका व सुकृति को सीधे सेटों में हरा कर खिताब जीता। अंडर-14 मुकाबले में अयोध्या की तनु पाल ने सुल्तानपुर की पारुल को, युगल मुकाबले में अयोध्या की तनु व काव्या ने सुल्तानपुर की पारुल व आर्याशी को सीधे सेटों में पराजित कर खिताब जीता। बालक वर्ग में अयोध्या के आयुष मिश्रा ने सुल्तानपुर के हर्षित को, युगल में अयोध्या के अंश व आयुष ने सुल्तानपुर के हर्षित व अक्षत शर्मा को सीधे सीटों में पराजित किया। अंडर-17 में सुल्तानपुर ने अयोध्या को सीधे सीटों में पराजित कर खिताब अपने नाम किया। इस अवसर पर मंडलीय स्कूली क्रीड़ा समिति के सचिव धर्मेंद्र सिंह, जनपदीय सचिव अभिषेक सिंह, परमेंद्र, जयंत पाठक, रमेश यादव मुनेंद्र आदि मौजूद रहे।

लेखपाल को पेशकार पद से हटाने की मांग

मिल्कीपुर, अमृत विचार : अधिवक्ता संघ मिल्कीपुर की आपात बैठक वरिष्ठ अधिवक्ता अमित कुमार मिश्रा के प्रार्थना पत्र पर बुधवार को आयोजित हुई। इसमें सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि उपजिलाधिकारी न्यायिक के कोर्ट पर तैनात लेखपाल सैमलिक पांडे को तत्काल पेशकार पद से हटाया जाए। अधिवक्ताओं का आरोप है कि पांडे का कार्य व्यवहार असंतोषजनक है। बैठक की अध्यक्षता कर रहे संघ अध्यक्ष रमेश पांडे ने स्पष्ट कहा कि यदि उपजिलाधिकारी न्यायिक ने कार्यशैली में सुधार नहीं किया तो अधिवक्ता संघ इस संबंध में विचार करेगा। अधिवक्ता संघ ने पारित प्रस्ताव की प्रति उपजिलाधिकारी मिल्कीपुर को सौंप दी है। अधिवक्ताओं ने चेतावनी दी है कि यदि उन्हें पेशकार पद से नहीं हटाया गया तो गंभीर विवाद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

अवैध खनन की दें जानकारी नाम रखा जाएगा गोपनीय

रुदौली, अमृत विचार: अवैध खनन करने वालो पर उपजिलाधिकारी रुदौली विकास धर दूबे ने कड़ा रुख अपनाया हैं। तहसील में पत्रकारों से बातचीत में कहा कि किसी भी दशा में अवैध खनन बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। अगर कोई भी व्यक्ति मिट्टी की अवैध खुदाई करता पाया गया तो उसके खिलाफ कठोर कार्रवाई होगी। स्पष्ट कहा कि अवैध खनन करने वाले अपने वाहन घर पर ही खड़े रखें। अगर ट्रैक्टर-ट्रॉली, डंपर या जेसीबी अवैध खनन में पकड़े गए तो उन्हें तत्काल सीज कर दिया जाएगा और दोषियों पर एफआईआर दर्ज कराई जाएगी। मिट्टी खनन के लिए प्रशासन से मिली परमीशन तहसील और पुलिस को अवश्य उपलब्ध कराएं।

● कहा-अवैध खनन करने वाले अपने वाहन घर पर ही खड़े रखें

ग्रामीणों और आम नागरिकों से अपील की है कि वे अवैध खनन की जानकारी छिपाएं नहीं बल्कि प्रशासन को सूचित करें। सूचना देने वालों का नाम गोपनीय रखा जाएगा। कहा कि खनन माफियाओं को किसी भी कीमत पर संरक्षण नहीं मिलेगा। कानून तोड़ने वालों के खिलाफ सख्त से सख्त कदम उठाए जाएंगे और किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा।

294 बेसिक स्कूलों में बनेंगे कलेक्टेड लर्निंग कॉर्नर

अयोध्या कार्यालय।

● राज्य परियोजना कार्यालय से 1.74 करोड़ मिले, निगरानी को खंड स्तरीय समिति गठित

अमृत विचार : बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा संचालित जिले के 294 स्कूलों में कलेक्टेड लर्निंग कॉर्नर बनाए जाएंगे। इसके लिए राज्य परियोजना कार्यालय से विभिन्न मदों में धनराशि भेजी गई है। इनका प्रयोग प्रधानाध्यापक व एसएमसी अध्यक्ष संयुक्त रूप से स्कूल के हित में करेंगे। इस धनराशि के खर्च की निगरानी के लिए खंड स्तरीय समिति भी बना दी गई है।

प्रत्येक विद्यालय के लिए 10,000 रुपये भेजे गए हैं। जिले में 13 स्कूलों में दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए टायलेट भी बनवाया जाना है। उसके लिए 1,74,000 रुपये प्रति विद्यालय की दर से भेजे गये हैं। इसके अतिरिक्त 1,068 स्कूलों में जहां समर कैंप लगे थे उन्हें भी 2,000 रुपये भेजे गए हैं। मातृ उन्मुखी शिविर लगाने वाले विद्यालयों के खाते में 4,500 रुपये आए हैं। इन सब के साथ प्रत्येक विद्यालय के लिए कंपोजिट ग्रांट भी मिली है। प्रभारी बीएसए अश्वनी कुमार पाण्डेय के अनुसार विद्यालय इनका प्रयोग स्कूल की जरूरत के अनुसार करेंगे। कुछ स्कूलों में कलेक्टेड स्टेशनरी के लिए भी बजट मिला है। खेल निधि 10,000 रुपये आई है। इनका प्रयोग उपकरण खरीदने के लिए किया जा सकता है। अभिभावकों के साथ होने वाली बैठक के लिए 500 रुपये मिले हैं। ईको क्लब के लिए 3,000 रुपये मिले हैं। क्लब का गठन सभी विद्यालय में किया जाना है।

सिटी मजिस्ट्रेट को ज्ञापन सौंपते किसान मोर्चा के पदाधिकारी।

यूरिया की किल्लत को लेकर सिटी मजिस्ट्रेट को सौंपा ज्ञापन

अयोध्या, अमृत विचार : यूरिया खाद की भारी किल्लत को लेकर संयुक्त किसान मोर्चा ने नगर मजिस्ट्रेट से वार्ता की। सभी साधन सहकारी समितियों पर तत्काल पर्याप्त मात्रा में यूरिया उपलब्ध कराने की बात कही। बातचीत में जिले भर में यूरिया खाद की समस्या के साथ किसानों की समस्या को अवगत कराया। इस मौके पर मोर्चा के संयोजक मया राम वर्मा, किसान सभा के प्रदेश सचिव अशोक कुमार तिवारी, किसान नेता अशोक यादव, भाकपा (माले) जिला प्रभारी अतीक अहमद, किसान सभा के संयुक्त मंत्री विनोद सिंह आदि मौजूद रहे।

मंडलीय स्कूली टेबल टेनिस प्रतियोगिता में अयोध्या चैंपियन

अयोध्या कार्यालय

अमृत विचार: एमपीएलएल आदर्श इंटर कॉलेज अयोध्या के संयोजन में बुधवार को मंडलीय विद्यालयीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता डॉ. आंबेडकर स्पोर्ट्स स्टेडियम आयेजित किया गया।। प्रतियोगिता के बालिका वर्ग में अयोध्या टीम ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए अंडर-14, 17 व अंडर-19 वर्ग में खिताब जीत का चैंपियनशिप अपने नाम कर ली।

बालिका अंडर-14 मुकाबले में मधु सुल्तानपुर ने अयोध्या की लक्ष्मी को पराजित किया। अयोध्या की खुशी ने सुल्तानपुर की एंजल को पराजित कर खिताब अपने नाम किया। अंडर-17 में अयोध्या की ज्योति ने सुल्तानपुर की आराधना को, अयोध्या की नैंसी ने सुल्तानपुर की रोशनी को, अयोध्या की शालिनी ने सुल्तानपुर की समृद्धि को पराजित कर खिताब पर कब्जा किया। अंडर-19 में अयोध्या के अनु पांडेय ने सुल्तानपुर की रिया अग्रहरि को, अयोध्या की नेहा सिंह ने सुल्तानपुर की कविता निषाद को, अयोध्या की सानिया ने सुल्तानपुर की काजल को पराजित कर खिताब जीत लिया। इस अवसर पर आदर्श इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य वरुण प्रताप सिंह, मंडलीय क्रीड़ा सचिव धर्मेंद्र सिंह, जिला सचिव अभिषेक सिंह, परमेन्द्र सिंह, आदि मौजूद रहे।

ओसीडी एक आवेशी मनोविकार: डॉ. आलोक

अयोध्या कार्यालय। अमृत विचार : डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग में छठे राष्ट्रीय समाज कार्य सप्ताह 2025 के अंतर्गत एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन विभाग में किया गया। मुख्य वक्ता मनोचिकित्सक डॉ. आलोक मनदर्शन ने बताया कि ओसीडी (आब्सेसिव कम्पल्सिव डिस ऑर्डर) एक आवेशी-मनोविकार है।

आब्सेशन का मतलब है, किसी नकारात्मक विचार की असामान्य पुनरावृत्ति जो उलझन व बेचैनी पैदा करती है। इन नकारात्मक विचारों के आवेश से छुटकारा पाने की जुगत में बारंबार किए जाने वाले असामान्य कृत्य को कंपल्शन कहा जाता है। समन्वयक डॉ. दिनेश कुमार सिंह ने बताया कि इस सप्ताह के अंतर्गत संपूर्ण भारत के समाज कार्य संस्थानों में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। धन्यवाद ज्ञापन स्वतंत्र त्रिपाठी द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. प्रभात सिंह, पल्लव पाण्डेय, सीमा तिवारी, प्रशांत सिंह समेत बड़ी संख्या में छात्र मौजूद रहे।

कवायद

कोताही बरतने वाले बूथ लेवल ऑफिसर के खिलाफ होगी कार्रवाई

बीएलओ ड्यूटी से कतराने वाले शिक्षकों पर कड़ी नजर

अयोध्या कार्यालय

● सर्विलांस सेल की कार्रवाई तेज, अब रिपोर्ट सीधे जिलाधिकारी को

अमृत विचार : जिलों में मतदाता सूची के सुधार और निर्वाचन प्रक्रिया को सुचारू बनाने के लिए नियुक्त बूथ लेवल ऑफिसर (बीएलओ) की ड्यूटी में लापरवाही बरतने वाले शिक्षकों पर अब सर्विलांस सेल की पैनी नजर है। ड्यूटी में कोताही बरतने वालों के खिलाफ त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित होगी।

सभी चार तहसीलों में 900 से अधिक बीएलओ की ड्यूटी लगाई गई है। इनके कार्यों की निगरानी के लिए पर्यवेक्षकों की नियुक्ति भी की गई है। पर्यवेक्षक नियमित रूप से बीएलओ के कार्यों की जांच करेंगे और यह सुनिश्चित करेंगे कि मतदाता सूची का सत्यापन, नए मतदाताओं का पंजीकरण और अन्य निर्वाचन संबंधी कार्य समय पर पूरे हों। कई शिक्षक, जो बीएलओ के रूप में नियुक्त हैं, ड्यूटी से बचने या फील्ड में न जाने की शिकायतें सामने आई हैं। ऐसे में सर्विलांस सेल ने इनकी गतिविधियों पर नजर रखने के लिए विशेष टीमें गठित की हैं। जो अपनी रिपोर्ट डीएम को सौंपेंगी।

जिलाधिकारी निखिल टीकाराम फुंडे ने स्पष्ट किया है कि ड्यूटी में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। बीएलओ को अपने क्षेत्र में घर-घर जाकर मतदाता सूची का सत्यापन करना होगा। लापरवाही पाए जाने पर निलंबन सहित कठोर कार्रवाई की चेतावनी दी गई है। पर्यवेक्षकों को नियमित रिपोर्टिंग और फील्ड विजिट के लिए जिम्मेदार बनाया गया है। इस कदम से निर्वाचन प्रक्रिया को और पारदर्शी व प्रभावी बनाने की कोशिश की जा रही है।

फैक्ट फाइल

- मतदान केंद्र-865
- बीएलओ-942
- पर्यवेक्षक-157
- मतदाता सूची का पुनरीक्षण-19 अगस्त से

> शिक्षकों की बीएलओ ड्यूटी लगाई गई है। सभी ने ड्यूटी पत्र संबंधित तहसीलों से ले लिया है। यदि कोई लापरवाही और शिकायत पाई जाती है तो कार्रवाई की जाएगी। -अश्वनी कुमार पाण्डेय, प्रभारी बीएसए।

तहसील प्रशासन और अधिवक्ताओं ने की बैठक

बीकापुर, अमृत विचार: न्यायालय के बहिष्कार को समाप्त कराने को लेकर एसडीएम श्रेया ने अधिकारियों और अधिवक्ता संघ के लोगों के साथ बुधवार को बैठक की। इसमें नायब तहसीलदार ने अपनी गलती स्वीकार की। अधिवक्ताओं ने आपसी सामंजस्य से गतिरोध दूर कर न्यायालयों के संचान की बात कही। नायब तहसीलदार घनश्याम शुक्ल की एक टिप्पणी से नाराज अधिवक्ताओं ने न्यायालयों का बहिष्कार कर दिया था। इसी को लेकर एसडीएम ने अधिवक्ता संघ को पत्र लिखा। बैठक करवाई। कहा गया कि अब सभी अदालतों के साथ बीकापुर कोर्ट का भी न्यायिक कार्य सुचारू रूप से चलेगा। बैठक में उप जिलाधिकारी न्यायिक व तहसीलदार दिनेश कुमार वर्मा, नायब तहसीलदार बीकापुर घनश्याम शुक्ला, नायब तहसीलदार शाहगंज रामखेलावन के साथ बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अवध राम यादव, उपाध्यक्ष श्रीकांत तिवारी, मंत्री उमेश पांडे, वरिष्ठ अधिवक्ता प्रमोद शर्मा, राम तेज वर्मा सहित अन्य शामिल थे।

ताइक्वाण्डो प्रतियोगिता में नहीं पहुंचे खिलाड़ी

अयोध्या कार्यालय

अमृत विचार: एसएसबी इंटर कॉलेज के तत्वावधान में बुधवार को आयोजित हुई जनपदीय विद्यायीय ताइक्वांडो प्रतियोगिता खिलाड़ियों के अभाव में सम्पन्न नहीं हो सकी। आयोजकों ने मौजूद खिलाड़ियों के चयन ट्रायल के बाद जनपदीय टीम चयनित की, जो सुलतानपुर में 23 अगस्त से होने वाली मंडलीय प्रतियोगिता में प्रतिभाग करेगी।

जनपदीय स्कूली ताइक्वाण्डो प्रतियोगिता में आयोजक टीमों का इंतजार करते रहे, लेकिन बालक वर्ग की प्रतियोगिता में कोई खिलाड़ी उपस्थित नहीं हुआ। बालिका वर्ग में कनोसा कॉन्वेंट की छात्राएं उपस्थित हुई लेकिन प्रतिद्वंदी टीम न होने के कारण प्रतियोगिता आयोजित नहीं हो सकी। यह स्थिति उस समय है, जब शिक्षा विभाग बालिका विद्यालयों में आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर के नाम पर लाखों रुपये खर्च कर रहा है। जिन विद्यालयों में आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर संचालित किया जा रहा है। उन विद्यालयों की एक भी टीम उपस्थित नहीं हुई। जबकि आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर संचालित होने वाले राजकीय विद्यालयों को प्रतिभाग के लिए डीआईओएस ने स्पष्ट निर्देश भी जारी किए थे। इसके बाद भी टीमों का न आना स्पष्ट करता है कि जनपदीय विद्यालयीय खेल में डीआईओएस के आदेश मायने नहीं रखता। संयोजक विद्यालय के खेल अध्यापक जयंत पाठक ने बताया कि बालक वर्ग में किसी भी विद्यालय के खिलाड़ी ने प्रतिभाग नहीं किया। बालिका वर्ग में कनोसा की छात्राएं उपस्थित हुई। जिनका चयन ट्रायल के बाद चयनित सूची डीआइओएस को प्रेषित की गई।

न्यूज ब्रीफ

वैचारिक चिंगारी के रुप में मौजूद हैं शिक्षाविद राजेश नंदन

अयोध्या कार्यालय। शहीद भगत सिंह स्मृति ट्रस्ट द्वारा नंद कॉन्वेंट स्कूल में संस्थापक शिक्षाविद राजेश नंद की पहली बरसी पर उनकी स्मृति में 'वर्तमान समय में शिक्षा और जागरूकता' विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। डॉ. विशाल श्रीवास्तव ने कहा कि राजेश नंद जी अपनी वैचारिक चिंगारी के रूप में हम सबके भीतर मौजूद हैं। साहित्यकार आशाराम जागरथ ने कहा कि राजेश नंद जी सच्चे अर्थों में एक प्रगतिशील व्यक्तित्व थे। लेखक और चिंतक आरडी आनंद ने कहा कि राजेश नंद जी समाज के वंचित वर्ग की बेहतरी के लिए निरंतर संघर्षरत रहे। समाजसेवी जेपी शास्त्री, पूर्व अधिकारी बृजेश श्रीवास्तव, शहीद भगत सिंह स्मृति ट्रस्ट के चेयरमैन सत्यभान जनवादी ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

मुख्य सेविकाओं का आज भी होगा मेडिकल परीक्षण

अंबेडकरनगर। बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग में उप्र अधीनस्थ सेवा चयन आयोग द्वारा मुख्य सेविकाओं का चयन किया गया है। जिसमें जनपद से 83 प्रतिभागियों को चयनित किया गया है। मुख्यमंत्री द्वारा नियुक्ति पत्र वितरण की कार्यवाही 25 अगस्त को सम्भावित है। जिसके दृष्टिगत नवचयनित मुख्य सेविकाओं का चिकित्सीय परीक्षण के लिए जिलाधिकारी के निर्देश के क्रम में मुख्य चिकित्साधिकारी द्वारा मेडिकल बोर्ड का गठन करते हुए 20 से 21 अगस्त तक चिकित्सीय परीक्षण की कार्यवाही की जा रही है तथा पुलिस अधीक्षक द्वारा भी उनके बैकग्राउन्ड का परीक्षण किया जा रहा है। जिला कार्यक्रम अधिकारी एसके सिंह ने बताया कि सम्बन्धित को अपना स्वास्थ्य परीक्षण और पुलिस वेरीफिकेशन कराए जाने के लिए विभाग द्वारा सूचित कर दिया गया है की वह अपना चिकित्सीय परीक्षण निर्धारित तिथि में करा लें।

मांगों को लेकर शिक्षकों ने दिया धरना

अंबेडकरनगर। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ ने जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय में धरना-प्रदर्शन किया। शिक्षकों ने अपनी विभिन्न मांगों को लेकर जिला विद्यालय निरीक्षक को ज्ञापन सौंपा। जिलाध्यक्ष डॉ. विजय कुमार वर्मा ने बताया कि अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों और शिक्षणेत्तर कर्मचारियों की कई समस्याएं लंबित हैं। एनपीएस से जुड़े शिक्षकों की कटौती और राज्यांश का अंतरण मार्च 2024 से अब तक नहीं हुआ है। उन्होंने मांग की कि एनपीएस राशि का संबंधित प्रान खातों में अंतरण सुनिश्चित किया जाए। साथ ही कटौती राशि का शिक्षकों के पासबुक में नियमित अंकन हो और जीपीएफ की तरह प्रतिहस्ताक्षरित करने की व्यवस्था की जाए। शिक्षक संघ ने प्रोन्नत वेतनमान, चयन वेतनमान, वेतन अवशेष और एसीपी से जुड़े बकाया भुगतान की भी मांग की।

रणनीति कारगर रही तो मानक बन जाएगी पंचायत की नई सूची

राजेंद्र पांडेय, अयोध्या

- त्रिस्तरीय पंचायत की सूची को यूनिक बनाने का प्रयास
- भारत व राज्य की सूची से मिलान करके बीएलओ करेंगे अपडेट

सूचियों के मतदाताओं की संख्या में अंतर एक नजर में

- वर्ष 2021 में पंचायत के कुल मतदाता-16,72,701
- निकाय सृजन व विस्तारीकरण में पंचायत से घटे कुल मतदाता-लगभग एक लाख
- वर्तमान समय में केवल पंचायत के कुल मतदाता-15,72,701
- वर्ष 2023 के सभी निकायों चुनाव के कुल मतदाता-4,99,742
- वर्तमान में निकाय और पंचायत के कुल मतदाता-20,72,443
- दोनों सूचियों में मोटे तौर पर अंतर-66,918

अमृत विचार: राज्य निर्वाचन आयोग की रणनीति कारगर रही तो पंचायत की नई मतदाता सूची मानक बन जाएगी। हालांकि यह काम आसान नहीं है। पुनरीक्षण के लिए बीएलओ (बूथ लेबिल अफसर) को भारत निर्वाचन आयोग (ईसीआई) और राज्य निर्वाचन आयोग दोनों की मतदाता सूचियां सौंपी गई है। अब वह इन दोनों सूचियों से मतादात के नामों का मिलान करके नई सूची के लिए डाटा अपडेट करेंगे। उसके बाद सूची तैयार की जाएगी।

त्रिस्तरीय पंचायत की मतदाता सूची को शुद्ध और यूनिक बनाने का प्रयास है। इसके लिए इस बार राज्य निर्वाचन आयोग ने पहली बार नई रणनीति पर काम शुरू कराया है। बीएलओ को घर-घर सत्यापन के लिए दो मतदाता सूचियां सौंपी गई है। एक ईसीआई की विधानसभा के मतदेय स्थलवार और दूसरी राज्य निर्वाचन आयोग की बूथवार। बीएलओ किसी घर पहुंचने पर पंचायत की सूची से नाम का मिलान करेगा। 18 साल से ज्यादा के लोगों के नाम को जानेगा। अभिलेख लेने के साथ नाम बढ़ाने के लिए गणना पत्रक पर अंकित करेगा। घर में ऐसा नाम सामने आने पर जिसका नाम सूची में तो है लेकिन यहां रहता नहीं है। उसका मिलान भारत निर्वाचन आयोग की सूची से करेगा। यदि उसमें वह नाम मौजूद है तो वह उसके बारे में जानकारी करके उसे सूची में यथावत रखने की कार्रवाई करेगा। अन्यथा घर में न रहने और ईसीआई की सूची में न होने पर उसकी गहन पड़ताल के बाद ही फैसला लेगा। संतुष्ट होने पर नाम बरकरार रखेगा। अन्यथा नाम पत्रक में विलोपन के लिए दर्ज करेगा। परिवार के सभी लोगों के नाम को दोनों सूचियों से मिलान भी करेगा। वह राज्य की सूची के लिए तो जोड़-घटाव करेगा लेकिन ईसीआई की सूची में कोई छेड़छाड़ नहीं करेगा। खासबात यह भी है कि ईसीआई हर साल पुनरीक्षण कराता है लेकिन राज्य अक्सर चुनाव के समय। सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी भारत निर्वाचन आयोग उदय राज पांडेय ने बताया कि जिले में कुल 19,05,525 मतदाता हैं।

दोनों सूचियों को एकजाई करने की हो चुकी कोशिश

साल 2021 के पंचायत चुनाव के पहले दोनों मतदाता सूची एकजाई करके चुनाव की कोशिश हुई थी। मैनपावर लगाई गई। दोनों को मर्ज करने का प्रयास किया गया। सूची की बानगी देखी गई लेकिन खामियों के चलते इसे रोक नए सिरे से पंचायत की सूची का जल्दबाजी में पुनरीक्षण कराया गया। चुनाव कराए गए। फिर बात ठंडे बस्ते में चली गई। एडीओ सूर्यभान भी ऐसा प्रयास पहले होने की बात कहते हैं, लेकिन इस बार राज्य निर्वाचन आयोग ने नया प्रयोग किया। एकजाई करने के बजाए मिलान करके दोनों के डाटा एक करने की कोशिश की है। जिससे भविष्य में दोनों को एक करने का अंदाजा लग सके।

यूनिक सूची बनाने में दिक्कतें भी कई

पंचायत की सूची को यूनिक बनाने में दिक्कतें कई है। इसलिए इसे आसान नहीं माना जा रहा है। दोनों में मतदान केंद्र भले ही एक हो लेकिन बूथ की संख्या अलग-अलग है। विधानसभा की सूची में वार्ड नहीं लेकिन पंचायत की सूची में वार्ड की व्यवस्था है। एक के मतदाता दूसरे में उसी स्थान पर नहीं मिलते। इसलिए इनके खोजने और मिलान में दिक्कत आती है। फिर भी प्रयास है।

> बीएलओ को दोनों सूचियां दी गई हैं। दोनों से मिलान करके सूची के डाटा को अपड़ेट किया जाना है। – **सूर्यभान, एडीओ पंचायत एवं निकाय।**

पुनरीक्षण में भागीदारी निभाएं लोग, बने मतदाता

रुदौली, अमृत विचार : त्रिस्तरीय पंचायत की मतदाता सूची का पुनरीक्षण शुरू कर दिया गया है। उपजिलाधिकारी विकास धर दूबे ने बताया कि 19 अगस्त मंगलवार से मतदाता पुनरीक्षण कार्य शुरू हो गया है। इस अभियान के तहत पूरे विधानसभा में बीएलओ घर-घर जाकर मतदाताओं का सत्यापन करेंगे। बीएलओ मतदाताओं से संपर्क करके उनके नाम, पते, उम्र लिंग की जानकारी एकत्र करेंगे। एक जनवरी 25 को 18 वर्ष के युवा नए वोटरों का नाम भी सूची में शामिल किया जाएगा। यदि किसी का नाम छूट रहा है और 18 वर्ष की उम्र पूरा हो गया है वे लोग बीएलओ से संपर्क करें यदि बीएलओ से संपर्क न होने पर क्षेत्रीय लेखपाल से संपर्क कर उनके मोबाइल नंबर से वार्ता कर पुनरीक्षण में भागीदारी निभाए।

मृतक के परिवारजनों को 4 लाख रुपये की स्वीकृति पत्र देते रुदौली विधायक रामचंद्र यादव।

विधायक ने पीड़ित परिवारों को दी आर्थिक सहायता

मवई, अमृत विचार : बाबा बाजार थाना क्षेत्र के शेरपुर गांव पहुंचे विधायक रामचंद्र यादव ने पीड़ित परिवारों से मुलाकात की। उन्होंने दोनों परिवारों को चार-चार लाख रुपये की सरकारी सहायता राशि प्रदान की। घटना शुक्रवार को हुई थी, जब शेरपुर गांव के सुमित कुमार यादव और घनश्याम यादव क्रिकेट मैच खेलकर लौट रहे थे। दोनों शिकारी की नाव से कल्याणी नदी पार कर रहे थे। इस दौरान नदी में तेज बहाव के कारण दोनों की डूबकर मौत हो गई। विधायक ने परिजनों को हर संभव मदद का भरोसा दिलाया। उन्होंने कहा कि तहसील प्रशासन से सभी सरकारी सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। इस दौरान रुदौली तहसीलदार राजेश कुमार गुप्ता, भाजपा नेता तेज तिवारी, रविकांत मिश्रा, निर्मल शर्मा, किशोरी लाल भारती, कमलेश यादव सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

इंटैक कार्यशाला में छात्रों ने सीखा चटोलिया बनाना

अयोध्या कार्यालय। अमृत विचार : इंटैक अयोध्या चैप्टर के संयोजन में जेबी अकादमी सभागार में बुधवार को दो दिवसीय डिसकवर आवर लिविंग हेरिटेज विषय पर आयोजित कार्यशाला सम्पन्न हुई। प्रतिभागी छात्र-छात्राओं को लुप्तप्राय पारंपरिक चटोलिया निर्माण कला में प्रशिक्षण दिया गया। सुधा मिश्रा ने बताया कि चटोलिया निर्माण एक ऐसी प्राचीन शिल्प कला रही है, जो फटे पुराने कपड़ों के पुनर्चक्रण के कारण पर्यावरण अनुकूल है। आधुनिक गद्दों की अपेक्षा हल्की होने के कारण साफ करने में सहज है। रिसोर्स पर्सन कुसुम पांडेय ने प्रतिभागियों को बड़ी बारीकी से प्रशिक्षित किया। कार्यशाला में जेबी अकादमी, यश विद्या मंदिर, भवदीय पब्लिक स्कूल, उदया पब्लिक स्कूल व तक्षशिला अकादमी के 77 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। इंटैक अयोध्या संयोजक मंजुला झुनझुनवाला ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किया और बधाई दी।

सोहावल तहसील सभागार में टास्क फोर्स की बैठक की अध्यक्षता करतीं एसडीएम सविता देवी।

वरिष्ठ नागरिकों के लिए तहसील टास्क फोर्स की बैठक

सोहावल, अमृत विचार: तहसील सभागार सोहावल में प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत राष्ट्रीय दृष्टिहीनता एवं दृष्टि दोष नियंत्रण कार्यक्रम को लेकर बुधवार को तहसील में बैठक की गई। अध्यक्षता उपजिलाधिकारी सविता देवी ने की। उपजिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि सरकार से वरिष्ठ नागरिकों के हित में संचालित इस योजना का लाभ अधिक से अधिक ग्रामीणों तक पहुंचाया जाए। बैठक में खंड शिक्षा अधिकारी के अनुपस्थित पर उपजिला अधिकारी ने नाराजगी जताई। बैठक में स्वास्थ्य विभाग, बाल एवं पुष्टाहार विभाग, शिक्षा विभाग पंचायत विभाग,सहित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के अधिकारी मौजूद रहे।

एसडीएम ने कराया घायल गोवंश का इलाज

रुदौली, अमृत विचार : लखनऊ-अयोध्या हाईवे पर वाहन की टक्कर में गंभीर रूप से घायल गोवंश का मौके से गुजर रहे उपजिलाधिकारी विकासधर दुबे ने मानवीय संवेदना दिखाकर पशु चिकित्सा अधिकारी रुदौली को बुलाकर इलाज कराया। पशुचिकित्सक को गोवंश के इलाज की निगरानी के निर्देश भी दिए।

आधुनिक भारत के शिल्पकार थे राजीव गांधी : डॉ. निर्मल

अयोध्या कार्यालय। अमृत विचार : भारत रत्न, पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी की जयंती बुधवार को श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई गई। कांग्रेस कार्यालय कमला नेहरू भवन में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पूर्व सांसद व पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. निर्मल खत्री ने कहा कि स्व. राजीव गांधी आधुनिक भारत के शिल्पकार थे। उनके कार्यकाल में सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति, दूरसंचार व्यवस्था का विस्तार, पंचायतीराज व्यवस्था में महिलाओं एवं पिछड़े वर्गों को आरक्षण जैसे ऐतिहासिक निर्णय लिए गए, जिनका लाभ आज पूरे देश को मिल रहा है। अध्यक्षता जिलाध्यक्ष चेतनारायण सिंह ने व संचालन महानगर अध्यक्ष सुनील कृष्ण गौतम ने किया। इस मौके पर पूर्व जिलाध्यक्ष राजेंद्र प्रताप सिंह, जिला प्रवक्ता शीतला पाठक, पूर्व जिलाध्यक्ष रामदास वर्मा, पीसीसी उग्रसेन मिश्रा, राजकुमार पांडे, राम अवध पासी आदि मौजूद रहे।

हाउस टैक्स बढ़ाने पर भाजपा में घमासान

जिला संवाददाता, अंबेडकरनगर

- भारतीय जनता पार्टी के जिला महामंत्री ने नगर पालिका अध्यक्ष के फैसले का किया विरोध, आंदोलन की दी चेतावनी

अकबरपुर नगर पालिका परिषद की ईओ बीना सिंह को ज्ञापन सौंपते भाजपा के जिला महामंत्री राम शब्द यादव व साथ में अन्य। अमृत विचार

अमृत विचार। अकबरपुर नगर पालिका में हाउस टैक्स बढ़ोत्तरी को लेकर बीजेपी में आंतरिक विवाद सामने आया है। बीजेपी जिला महामंत्री राम शब्द यादव ने अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका परिषद बीना सिंह को ज्ञापन सौंपकर टैक्स में वृद्धि वापस लेने की मांग किया है। मामला इसलिए चर्चा में है क्योंकि नगर पालिका अध्यक्ष चंद्र प्रकाश वर्मा बीजेपी से हैं।

भाजपा के जिला महामंत्री राम शब्द यादव ने टैक्स वृद्धि को नियम विरुद्ध बताया है। उन्होंने कहा कि अकबरपुर नगर पालिका परिषद का सर्वे रजिस्टर 2021 में बना, लेकिन गृह कर 2018 से वसूला जा रहा है। उन्होंने मांग किया है कि टैक्स सर्वे रजिस्टर बनने के वर्ष से ही लागू किया जाए। साथ ही बोर्ड की सहमति से अधिकतम 30 प्रतिशत तक ही वृद्धि की जाए। जिला महामंत्री ने कई अन्य मांगें भी रखी हैं। जिनमें गृह कर रसीद पर पालिका की मुहर और कर्मचारी के हस्ताक्षर अनिवार्य करना, अनावासीय भवनों को दो प्रतिशत छूट देना और सरकारी जमीन पर बने मकानों को कर मुक्त करना शामिल है। उन्होंने टैक्स भुगतान की ऑनलाइन व्यवस्था की मांग भी की है। भाजपा महामंत्री ने चेतावनी दी है कि अगर जनभावनाओं के विपरीत यह निर्णय वापस नहीं लिया गया तो आंदोलन किया जाएगा।

नपं अध्यक्ष ने किया स्वागत

नवनियुक्त भाजपा पदाधिकारियों का स्वागत करते नगर पंचायत अध्यक्ष ओमकार गुप्ता।

बसखारी, अमृत विचार। नगर पंचायत अध्यक्ष ओमकार गुप्ता ने मंडल अध्यक्ष, मंडल महामंत्री समेत सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों का अंग वस्त्र पहनाकर स्वागत किया। समारोह में मंडल अध्यक्ष सदाबृज राजभर, मंडल उपाध्यक्ष बबलू उपाध्याय, रहमतुल्लाह काजी, चंद्रेश निषाद, गगन मौर्य, पवन सिंह, रणजीत सिंह, मंडल महामंत्री सुभाष चंद्र गुप्ता, अनुराग पांडे, मंडल मंत्री लालमन रावत, दिलीप श्रीवास्तव, बृजेश यादव, दिनेश, महेंद्र वर्मा, माधुरी राजभर, मंडल कोषाध्यक्ष प्रियंका चौरसिया सहित सभी मंडल पदाधिकारी उपस्थित रहे।

घायल युवक की इलाज के दौरान मौत

जलालपुर। कटका के मसोढा चौराहे पर 15 अगस्त को एक स्कूली वाहन और बाइक की टक्कर में तीन युवक घायल हो गए थे। घायलों में से एक युवक राजकुमार 25 वर्ष पुत्र राम लौट की बुधवार को इलाज के दौरान मौत हो गई। भियांव चौरा निवासी राजकुमार अपने दो साथियों संतोष और रौशन के साथ बाइक से काम पर जा रहा था। इसी दौरान सामने से आ रहे स्कूली वाहन से उनकी टक्कर हो गई। मृतक के परिजनों ने निजी अस्पताल पर इलाज में लापरवाही का आरोप लगाया है। कटका थाना प्रभारी प्रेमचंद ने बताया कि शिकायत मिलने पर कार्रवाई की जाएगी।

घरौनी बनाने में अनियमितता लोगों पर पड़ रही भारी

- विकासखंड बसखारी के कई गांवों में अभी तक नहीं हो सका वितरण

बसखारी, अमृत विचार। घरौनी बनाने में लेखपालों के द्वारा बरती गई अनियमितता लोगों पर भारी पड़ रही है। विकासखंड बसखारी के कई गांव में अभी तक बहुत से लोगों को घरौनी का कागज वितरण नहीं हो पाया है। जिसकी वजह आबादी की जमीन पर वास्तविक कब्जा और घरौनी के कागज में काफी अन्तर बताया जा रहा है। चर्चा तो यह भी है कि लेखपालों और प्रधानों ने मिली भगत करके आबादी की वास्तविक जमीन के कब्जेदारों की चौहद्दी, नक्शे व नाप जोख में फेर बदल करते हुए नए कब्जोदरों को लाभ पहुंचने का खेल किया है। जो लेखपालों और प्रधानों की अवैध कमाई का जरिया भी माना जा रहा है। सूत्रों की माने तो आबादी की जमीन कम होने के कारण लेखपालों के द्वारा नए मकान बनाने वाले की बगैर जांच-पड़ताल किए उनसे धन उगाही कर घरौनी का कागज बना दिया गया। जिससे वास्तविक आबादी धारकों को नुकसान पहुंच रहा है।

> घरौनी वितरण करने के लिए सभी को निर्देश दिए गए हैं। यदि कहीं कोई शिकायत आती है तो त्रुटि सुधार का विकल्प आते ही उसे दुरुस्त किया जाएगा। वहीं जानबूझकर गलती करने वाले कर्मचारियों के विरुद्ध जांच कर कार्रवाई भी की जाएगी। इस संदर्भ में तहसील परिसर में शिकायतें दर्ज की जा रही हैं।
> -**निखिलेश कुमार,** तहसीलदार

विषैले जंतु के काटने से महिला की मौत

जहांगीरगंज, अंबेडकरनगर, अमृत विचार। थाना राजेसुलतानपुर अंतर्गत ग्राम देवरिया बुजुर्ग निवासी सविता मौर्या, 34, पत्नी अवधेश मौर्य की विषैले जंतु के काटने से मृत्यु हो गई। बता दें कि बीते मंगलवार रात्रि लगभग साढ़े दस बजे सविता पानी पीने के लिए घर में लगे नल के पास गई थी, जहां नल के पास छिपे सांप ने सविता को डस लिया। सांप काटने की जानकारी तुरन्त सविता ने अपने परिजनों को दी। आनन-फानन में सविता को बसखारी निजी चिकित्सक के यहां ले जाया गया। जहां पर सविता की गंभीर हालत देखकर डॉक्टर ने जिला अस्पताल रेफर कर दिया। जहां पर चिकित्सकों ने सविता को मृत घोषित कर दिया। सविता के दो मासूम बच्चों का रो-रो कर बुरा हाल है।

तमसा नदी किनारे हो रहे अवैध निर्माण पर कार्रवाई की मांग

तमसा तट पर अवैध रूप से किए जा रहे हैं भवन निर्माण। अमृत विचार

जलालपुर, अमृत विचार। नगर के तमसा नदी के किनारे अवैध रूप से निर्माण करने के मामले में जलालपुर नगर पालिका के अतिक्रमण प्रभारी ने पुलिस से शिकायत दर्ज कर कार्रवाई करने की मांग की है। नदी के किनारे अवैध रूप से निर्माण कर रहे सिरातुल निशा पत्नी हेलाल अहमद, नाजनीन पत्नी मोहम्मद हाशमी, महमूद आलम पुत्र मोहम्मद इदरीश निवासी मोहल्ला काजीपुरा जलालपुर और गुड्डू पुत्र शकील निवासी मोहल्ला वाजिदपुर जलालपुर द्वारा अवैध निर्माण को रोकने के साथ-साथ मुकदमा पंजीकृत किए जाने की मांग किया है। अतिक्रमण प्रभारी रमाकांत चौबे ने बताया जलालपुर कोतवाली में बुधवार को शिकायती पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है।

1.38 लाख पशुओं को लगेगा टीका

अंबेडकरनगर। लंपी वायरस का प्रकोप तेजी से बढ़ रहा है। अब तक दर्जनों मवेशी इस बीमारी की चपेट में आ चुके हैं। जिनमें से दो पशुओं की मौत हो चुकी है। प्रशासन ने विशेष टीकाकरण अभियान की घोषणा की है।

गुरुवार से जनपद में गोटापॉक्स वैक्सीन लगाई जाएगी। मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. अरविंद कुमार ने बताा कि वैक्सीन बुधवार शाम तक जनपद में पहुंच जाएगी। जिले के 1 लाख 38 हजार 948 गोवंशीय पशुओं को टीका लगाने का लक्ष्य रखा गया है। लंपी स्किन डिजीज एक संक्रामक रोग है। इससे पीड़ित पशुओं के शरीर परए खासकर चेहरे, गर्दन और थूथन पर गांठें निकल आती हैं। रोग के अन्य लक्षणों में तेज बुखार, पैरों में सूजन और लंगड़ापन शामिल है।

अल्ट्रासाउंड सेंटर सील

अंबेडकरनगर, अमृत विचार। बुधवार को अकबरपुर-टांडा मार्ग स्थित अथर्व स्कैन एण्ड लैब प्राइवेट लिमिटेड को अनियमितता मिलने पर उपजिलाधिकारी और स्वास्थ्य विभाग की टीम ने सील कर दिया है।

अकबरपुर के टांडा रोड स्थित अथर्व स्कैन एण्ड लैब प्राइवेट लिमिटेड पर सदर एसडीएम और स्वास्थ्य विभाग की सयुंक्त टीम ने छापा मारा। जो डॉक्टर अल्ट्रासाउंड सेंटर पर मिला वह अनाधिकृत था और पीसी पीएनडीटी एक्ट में वह रजिस्टर्ड भी नहीं था। उपजिलाधिकारी ने बताया कि अल्ट्रासाउंड सेंटर को सील कर दिया गया है। रिपोर्ट जिलाधिकारी अनुपम शुक्ला को सौंपी जाएगी। स्वास्थ्य विभाग द्वारा जनपद में लगभग चार दर्जन अल्ट्रासाउंड संचालकों को पूर्व में नोटिस जारी किया जा चुका है। एसडीएम सदर प्रतीक्षा सिंह ने बताया कि अल्ट्रासाउंड सेंटर को सील करने की कार्रवाई की गई है। अनाधिकृत व्यक्ति द्वारा अल्ट्रासाउंड किया जा रहा था।

आयोजन | जलालपुर में बार एसोसिएशन के नए पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह संपन्न

न्याय के लिए बार व बेंच के बीच बेहतर सामंजस्य जरूरी

जलालपुर, अंबेडकरनगर

- पदाधिकारियों ने अधिवक्ताओं के हित में काम करने का लिया संकल्प

अमृत विचार। बुधवार को बार एसोसिएशन जलालपुर के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों के शपथ ग्रहण का आयोजन किया गया। बार एसोसिएशन के नवनिर्वाचित पदाधिकारी शपथ ग्रहण करते हुए अधिवक्ताओं को आश्वस्त किया कि उनके अधिकार को लेकर पूरी मजबूती के साथ कार्य करेंगे।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि ग्राम न्यायालय के न्यायाधीश आश्री शाह ने सरस्वती के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए माल्यार्पण किया। उन्होंने कहा कि वाद कार्यों को न्याय दिलाने के लिए बार और बेंच के बीच बेहतर सामंजस्य बना रहना आवश्यक है। वाद कार्यों को बार-बार अदालत का चक्कर न लगाना पड़े, इसके लिए सभी को पूरी तरह से गंभीर रहना है। अकबरपुर के बार एसोसिएशन के नवनिर्वाचित अध्यक्ष सुनील श्रीवास्तव ने कहा कि जो जिम्मेदारी उन्हें दी गई है, उसका निर्वहन वह पूरी ईमानदारी के साथ करेंगे। अधिवक्ताओं का सम्मान और उनके अधिकार के लिए पूरी मजबूती के साथ लड़ाई लड़ी जाएगी। अधिवक्ताओं को उनका अधिकार दिलाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ा जाएगा। बार व बेंच के बीच समन्वय बनाए रखने का भरोसा दिलाते हुए उन्होंने कहा कि अधिकारियों को न्याय दिलाने में हमे अपनी जिम्मेदारियां का निर्वहन पूरी ईमानदारी के साथ करेंगे।

शपथ ग्रहण समारोह में मौजूद बार के नवनिर्वाचित पदाधिकारी। अमृत विचार

शपथ ग्रहण समारोह में यह भी रहे मौजूद : नवनिर्वाचित पदाधिकारी को शपथ दिलवाते हुए चुनाव अधिकारी घनश्याम शर्मा ने नवनिर्वाचित बार अध्यक्ष कृपा शंकर मौर्य, उपाध्यक्ष योगेश शुक्ला और हाशिम रजा, मंत्री घनश्याम वर्मा, ऑडिटर यशोदानंद मिश्रा समेत अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे। इस अवसर पर उप जिलाधिकारी राहुल गुप्ता समेत तहसील के अन्य अधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे। अधिवक्ता संत प्रसाद पांडे, तिलकधारी पांडे, शेर बहादुर सिंह, अध्यक्ष अधिवक्ता एसोसिएशन टांडा सुनील कुमार द्विवेदी, अधिवक्ता आलापुर सुनीत कुमार द्विवेदी, सुनील कुमार सिंह, सत्य प्रकाश मिश्रा, पंकज मिश्रा सहित अन्य अधिवक्ता मौजूद रहे।

सामूहिक विवाह के लिए 24 तक करें आवेदन

बसखारी, अमृत विचार। सर्व धर्म सामूहिक विवाह कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर प्रभावती कैलाश चैरिटेबल ट्रस्ट की एक बैठक ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष जावेद राइन के आवास पर सम्पन्न हुई। जिसमें वैवाहिक सूत्र में बंधने वाले जोड़ों की पहली रजिस्ट्रेशन तिथि आगामी 24 अगस्त रविवार को निर्धारित की गई। ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. शरद यादव के निर्देश पर हुई।

बैठक की अध्यक्षता कोषाध्यक्ष मोहम्मद जावेद राईन ने करते हुए बताया कि विवाह पंजीयन के लिए आवेदन पत्र 24 अगस्त को बसखारी स्थित प्रभावती कैलाश चैरिटेबल ट्रस्ट के कार्यालय पर जमा होंगे। जिन वैवाहिक जोड़ों के माता-पिता को आवेदन पत्र नहीं प्राप्त हुए हैं। वह 24 अगस्त को कार्यालय पर आवेदन पत्र प्राप्त कर शपथ पत्र, आधार कार्ड, जन्म प्रमाण पत्र, दोनों पक्ष के गवाहों के हस्ताक्षर आदि जरूरी पत्रावली की छायाप्रति संलग्न करके आवेदन पत्र जमा कर सकते हैं। बैठक में प्रमुख रूप से ट्रस्ट के सचिव मोहम्मद इरफान, सुभाष गुप्ता, मोहम्मद कैफ, मोहम्मद अहमद, पवन कुमार, सूरज सोनी, पवन जयसवाल, कुणाल सोनी, मोहम्मद कलाम, मोहम्मद अहमद अंसारी, गप्पू चौधरी, मोहम्मद अहमद अंसारी, सूरज मद्धेशिया मौजूद रहे।

प्रभावती कैलाश चैरिटेबल ट्रस्ट की बैठक में मौजूद अध्यक्ष डॉ. शरद यादव व साथ में सुभाष गुप्ता। अमृत विचार

अमृत विचार

अयोध्या, गुरुवार, 21 अगस्त 2025

न्यूज ब्रीफ

बास्केटबॉल में मंडल विजेता बना सुलतानपुर

सुलतानपुर, अमृत विचार : बीपी इंटर कॉलेज कुड़वार के मैदान में हुई मंडलीय विद्यालयी बास्केटबॉल प्रतियोगिता में जूनियर बालक वर्ग में सुलतानपुर ने अयोध्या को 6-5 से हराकर खिताब जीता। वहीं, बालिका वर्ग (जूनियर) में अयोध्या ने सुलतानपुर को 3-2 से हराया और सीनियर वर्ग में भी 6-4 से जीत दर्ज की। प्रतियोगिता का उद्घाटन प्रधानाचार्या तारा सिंह ने किया। समापन पर क्रीड़ा सचिव दिलीप सिंह ने विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया और बताया गया कि चयनित खिलाड़ी अब राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में हिस्सा लेंगे।

उप स्वास्थ्य केंद्र का ताला तोड़कर चोरी

मोतिगरपुर, सुलतानपुर, अमृत विचार : मलिकपुर बखरा स्थित उप स्वास्थ केंद्र में रविवार को बीती रात चोरों ने मेन गेट का ताला तोड़कर अंदर घुसकर कमरे का ताला तोड़कर लगे सीलिंग फैन, स्टील कुर्सी दो, प्लास्टिक कुर्सी पांच व एक टेबल भी उड़ा दिया। सुबह आशा ने एनम इसराना बानो को जानकारी दें एएनएम ने थाने पर तहरीर दी है।

सतत पुनर्वास कार्यक्रम का शुभारंभ

सुलतानपुर, अमृत विचार : राम नेवाज शैक्षिक अनुसंधान एवं पुनर्वास संस्थान सुलतानपुर में बुधवार को तीन दिवसीय सतत पुनर्वास कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न जनपदों से आए लगभग 150 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि विजय शंकर तिवारी ने दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया।

लिंक खोलते ही खाते से उड़े 4 लाख, केस

सुलतानपुर अमृत विचारः साइबर ठगी रोकने के लिए व्यापक प्रचार प्रसार किया जा रहा है। फिर भी साइबर नित नए हथकंडे अपनाकर लोगों को साइबर ठगी का शिकार बना रहे हैं। साइबर ठगों पर बड़ी कार्यवाही न होने से उनके हौसले बुलंद हैं। अभियाखुर्द गांव निवासी देव नारायण पांडेय ने साइबर थाने में तहरीर दी है। उन्होंने बताया कि बीते 17 अगस्त को उनके मोबाइल नंबर पर एक लिंक आया था। उनके द्वारा जब उक्त लिंक को खोला गया तो खाते से चार लाख रुपए कट गए। पैसा कटने पर देव नारायण पांडेय ने साइबर हेल्प लाइन नंबर 1930 पर शिकायत भी दर्ज कराई। साइबर थाना प्रभारी ने बताया कि मामले में जांच की जा रही है।

युवती की हत्या का आरोपी मुठभेड़ में गिरफ्तार

दाहिने पैर में लगी गोली, अंबेडकरनगर रेलवे स्टेशन के पास मिला था युवती का शव

दोस्तपुर, सुलतानपुर

सड़क किनारे गिरी आरोपी की बाइक। गोली लगने से घायल आरोपी युवक।

अमृत विचारः दोस्तपुर थाना क्षेत्र की रहने वाली युवती की हत्या कर शव को अंबेडकरनगर रेलवे स्टेशन के पास फेंकने वाले आरोपी को पुलिस ने मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तार कर लिया। मंगलवार देर रात बेथरा नहर के पास हुई मुठभेड़ में पुलिस की जवाबी कार्रवाई में आरोपी मोहम्मद शमीम (28) पुत्र सिराज के दाहिने पैर में गोली लगी, जिसके बाद उसे गिरफ्तार कर अस्पताल भेजा गया।

सोमवार को अंबेडकरनगर के अकबरपुर थाना क्षेत्र स्थित मिरानपुर के पास रेलवे लाइन के नीचे बने गाटर की सीढ़ी पर 25 वर्षीय युवती का शव मिला था। जीआरपी और पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर शिनाख्त की तो पता चला कि वह सुलतानपुर के दोस्तपुर थाना क्षेत्र की रहने वाली थी। अपर पुलिस अधीक्षक अखंड प्रताप सिंह ने बताया कि आरोपी शमीम मंगलवार की रात दोस्तपुर ब्लॉक चौराहे से कादीपुर की ओर जा रहा था। घेराबंदी के दौरान उसने पुलिस पर फायर किया, जवाबी कार्रवाई में गोली लगने से वह घायल हो गया। परिजनों के अनुसार, युवती 17 अगस्त को प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के प्रशिक्षण के लिए घर से निकली थी लेकिन वहां नहीं पहुंची। देर शाम तक घर न लौटने पर गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई गई। जांच में सामने आया कि युवती की बातचीत अक्सर शमीम से होती थी। मोबाइल नंबर बंद मिलने और घटनाक्रम सामने आने के बाद आरोपी को तलाशा गया।

मुठभेड़ में गैंगस्टर एक्ट के वांछित को दबोचा

बल्दीराय, सुलतानपुर : अपराधियों पर शिकंजा कसने के अभियान के तहत हलियापुर पुलिस ने मंगलवार रात बड़ी सफलता हासिल की। पुलिस टीम ने मुठभेड़ के दौरान गैंगेस्टर एक्ट में वांछित शातिर अपराधी राम बहादुर निषाद पुत्र श्रीनाथ निषाद निवासी पूरे जबर मजरा नारा अढ़नपुर, थाना शहीद स्मारक भाले (अमेठी) को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। घटना थाना क्षेत्र के पुराना पुलिस चेक पोस्ट आमघाट पुल के पास हुई। पुलिस ने आरोपी के पास से एक तमंचा .315 बोर, एक जिंदा व एक खोखा कारतूस बरामद किया। आरोपी के खिलाफ गिरोहबंद समाज विरोधी क्रियाकलाप निवारण अधिनियम समेत डेढ़ दर्जन से अधिक आपराधिक मामले दर्ज हैं। गिरफ्तारी करने वाली टीम में थानाध्यक्ष तरुण कुमार पटेल, उप निरीक्षक कैलाश सिंह यादव, कांस्टेबल प्रेमशंकर स्वामी और धनंजय गुप्ता शामिल रहे।

स्कूली बच्चों से भरा टेम्पो पलटने से सात घायल

- ग्रामीणों ने सभी को बाहर निकाला चालक वाहन लेकर भाग निकला

मोतिगरपुर, सुलतानपुर, अमृत विचारः आरके एसएम पब्लिक स्कूल मैधन, हमजाबाद के स्कूली बच्चों से भरा टेंपो बुधवार सुबह पलट गया। नीचे दबकर सात बच्चे घायल हो गए। ग्रामीणों ने वाहन सीधा कर बच्चों को बाहर निकाला। हालांकि, सभी खतरे से बाहर हैं। मौका मिलते ही चालक वाहन लेकर मौके से भाग निकला।

बुधवार को बच्चे स्कूल वाहन पर बैठकर विघालय जा रहे थे, सुबह लगभग सात बजे टेंपो खड़सरा गांव में बाइक को साइड देने के प्रयास में सड़क किनारे रखे पटिये पर चढ़कर पलट गया। वाहन पलटते ही बच्चों में चीख-पुकार मच गई। ग्रामीणों ने तत्काल दौड़कर टेंपो सीधा किया और नीचे दबे बच्चों को बाहर निकाला। घटना में राजवीर व तेजस्वी (एलकेजी) पुत्र राकेश यादव, मयंक यादव (एलकेजी) पुत्र राहुल यादव, जिन्हें हाथ और सिर में चोट आई। आयांश (कक्षा 2) पुत्र अशोक यादव, जिनकी नाक व सिर पर चोटें आईं, मानवी, पुत्री मनोज कुमार, आफरीन (एलकेजी) पुत्री मोहम्मद रज़ाक, निवासी खडसरा व परीक्षित पुत्र बीपी सिंह, निवासी धरसौली हाथ की कनगुरी मे चोटें आई हैं। सभी का निजी चिकित्सक से इलाज कराने के बाद घर भेज दिया गया।

कोर्ट ने हत्यारोपी की संपत्ति कुर्क करने का दिया आदेश

- इच्छानाथ यादव हत्याकांड

विधि संवाददाता, सुलतानपुर

अमृत विचारः प्रधान प्रतिनिधि हत्याकांड में आरोपी अभिषेक गोस्वामी को फरार घोषित कर जिला जज लक्ष्मीकांत शुक्ल ने संपत्ति कुर्की का आदेश दिया है।

घटना बल्दीराय थाने के अशरफपुर गांव में हुई थी जिसकी एफआईआर मृतक के चचेरे भाई शिवपूजन यादव ने लिखाई थी। जिसके अनुसार इच्छानाथ यादव नौ अक्टूबर 24 की सुबह साढ़े चार बजे शौच के लिए गया था। रास्ते में घात लगाकर बैठे महमूदपुर के दरोगा यादव, अमरजीत, व अनिल तथा अशरफपुर के अर्जुन यादव और राम अचल ने घेर कर तमंचे से गोली मारी और बाइक से भाग गए। जिससे इच्छानाथ की मौके पर ही मृत्यु हो गई थी। घटना में सचिन यादव, अनिकेत, लकी यादव और कई अन्य आरोपियों के नाम प्रकाश में आए। तीन सितम्बर को साक्ष्य के लिए फाइल नियत की गई है।

इंस्पेक्टर दुष्कर्म केस में डिस्चार्ज अर्जी पर पीड़ित पक्ष की आपत्ति दाखिल

महिला आरक्षी से दुष्कर्म के आरोपित इंस्पेक्टर नीशू तोमर की ओर से दाखिल डिस्चार्ज अर्जी पर बुधवार को फास्ट ट्रैक कोर्ट प्रथम में सुनवाई हुई। अभियोजन की ओर से पीड़ित पक्ष के अधिवक्ता संतोष पांडेय ने अर्जी का विरोध करते हुए विस्तृत आपत्ति दाखिल की। न्यायाधीश जलाल मोहम्मद अकबर की अदालत ने डिस्चार्ज अर्जी पर सुनवाई के लिए 28 अगस्त की तारीख नियत की है।

गौरतलब है कि 14 जुलाई 2022 को महिला आरक्षी ने इंस्पेक्टर नीशू तोमर के खिलाफ गंभीर आरोप लगाते हुए हलियापुर थाने में मुकदमा दर्ज कराया था। पीड़िता ने आरोप लगाया था कि थाने में तैनाती के दौरान इंस्पेक्टर ने उसे शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित किया तथा दुष्कर्म किया। सूत्रों के मुताबिक, बचाव पक्ष ने डिस्चार्ज अर्जी में तर्क दिया है कि अभियोजन पक्ष के आरोप निराधार और साक्ष्यविहीन हैं। वहीं, पीड़ित पक्ष ने कड़ा विरोध करते हुए कहा कि आरोप गंभीर प्रकृति के हैं और उपलब्ध साक्ष्य व बयान मुकदमे को सुनवाई योग्य बनाते हैं।

3 सितंबर को होगी साक्ष्य पर सुनवाई

बल्दीराय थाना क्षेत्र के महुली गांव में महिला की हत्या के मामले में सेशन कोर्ट जज लक्ष्मीकांत शुक्ल ने आरोप तय कर दिए हैं। अदालत ने अभियोजन साक्ष्य के लिए तीन सितंबर की तारीख नियत की है। डीजीसी क्रिमिनल रामअचल मिश्र ने बताया कि पूरे गंगा पांडेय का पुरवा महुली निवासी शिवलाल कोरी की पत्नी सुमन की छह दिसंबर 2022 को खेत की रखवाली के दौरान हत्या कर दी गई थी। पति शिवलाल की तहरीर पर अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज हुआ था। तफ्तीश में गांव के ही शिव कुमार, उसकी पत्नी विद्यावती और मैन पांडेय का पुरवा निवासी संदीप कुमार को आरोपित बनाया गया था।

चिकित्सक हत्याकांड में गवाह के न आने से टली सुनवाई

शास्त्री नगर मोहल्ले में बीते साल हुए संविदा चिकित्सक घनश्याम तिवारी हत्याकांड की सुनवाई बुधवार को अपर सत्र न्यायाधीश संतोष कुमार की अदालत में गवाह न आने से टल गई। वादी पक्ष के अधिवक्ता संतोष पांडेय ने बताया कि चिकित्सा लेखक स्नेह कुमार और मेडिको लीगल सेल के एडिशनल डायरेक्टर डॉ जीएन खान को साक्ष्य के लिए तलब किया गया था, लेकिन वे पेश नहीं हुए। अब अगली सुनवाई 26 अगस्त को होगी। मामले में मुख्य आरोपी अजय नारायण सिंह, उसके पिता जगदीश नारायण सिंह और ड्राइवर दीपक सिंह पर हत्या, षड्यंत्र और दहशत फैलाने के आरोप तय किए जा चुके हैं।

एमएलसी के केस में बंधपत्र दाखिल करने का आदेश

संवाददाता, सुलतानपुर : एमपी-एमएलए कोर्ट के मजिस्ट्रेट शुभम वर्मा की अदालत ने बुधवार को आचार संहिता उल्लंघन के मामले में बहस से पूर्व आरोपियों को बंधपत्र दाखिल करने का आदेश देते हुए सुनवाई के लिए पांच सितम्बर की तारीख नियत की है। विशेष लोक अभियोजक वैभव पाण्डेय ने बताया कि यह मामला 11 मई 2019 का है। चुनाव उड़नदस्ता प्रभारी गजेंद्र कुमार सिंह की शिकायत पर कोतवाली देहात थाने में मुकदमा दर्ज कराया गया था। आरोप है कि एमएलसी शैलेंद्र प्रताप सिंह ने उतुरी स्थित एक शिक्षण संस्थान के सामने 50 से अधिक लोगों को भोजन कराया था, जिसे आचार संहिता का उल्लंघन माना गया। इस मामले में उनके समर्थक जयप्रकाश व अजय सिंह को भी सह-आरोपी बनाया गया है।

पूर्व एमएलसी दीपक सिंह की सुनवाई टली

संवाददाता, सुलतानपुर : तीन साल पूर्व कांग्रेस की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी व पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी के बीच हुए विवाद के विरोध में प्रदर्शन करने और स्मृति ईरानी का पुतला दहन से जुड़े मामले की सुनवाई 12 सितम्बर के लिए टल गई है। मामले में अमेठी जिलाध्यक्ष प्रदीप सिंघल, कांग्रेस के पूर्व एमएलसी दीपक सिंह, पूर्व जिलाध्यक्ष योगेंद्र मिश्र समेत 28 आरोपियों के खिलाफ एमपी-एमएलए की विशेष अदालत में केस लंबित है। जिसमें कई आरोपी हाजिर नहीं हुए, उनकी ओर से हाजिरी माफ करने की अर्जी बुधवार को दी गई।

राकेश विश्वकर्मा हत्याकांड में 22 को तय होंगे आरोप

संवाददाता, सुलतानपुर : राकेश विश्वकर्मा हत्याकांड में आरोपित अजय निषाद ने खुद को निर्दोष बताते हुए आरोप पर आपत्ति देने के लिए कोर्ट से मौका मांगा है। एडीजे प्रथम संतोष कुमार ने आरोप तय करने के लिए 22 अगस्त की तिथि नियत की है। कादीपुर कोतवाली के मुडिलाडीह निवासी राकेश विश्वकर्मा बीते तीन अप्रैल को चचेरे भाई शुभम के साथ घर के पास खड़े थे। तभी बाइक सवार आरोपियों ने राकेश की गोली मारकर हत्या कर दी थी। मृतक के पिता दयाराम विश्कर्मा ने दोस्तपुर के गोरई गांव के राम सागर यादव समेत अन्य के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज कराया था। मामले में हिस्ट्री शीटर राम सागर यादव, अखंड नगर के कटरा उडरी निवासी नीरज यादव, ताजुद्दीनपुर के सुरेंद्र कुमार और अंबेडकर नगर के बेवाना के दिवाकर यादव व अजय निषाद के खिलाफ पुलिस ने आरोप पत्र कोर्ट भेजा था।

धरने पर बैठे वकीलों को पुलिस ने हटाया

लंभुआ, सुलतानपुर

धरने को संबोधित करते बार के पदाधिकारी। ● अमृत विचार

अमृत विचारः एसडीएम के स्थानांतरण को लेकर उनके कोर्ट के सामने धरने पर बैठे अधिवक्ताओं को पुलिस ने हटा दिया। फिर तहसील परिसर में ही दूसरे स्थान पर टेंट डालकर अधिवक्ता धरने पर बैठ गए। उनका कहना है कि एसडीएम के स्थानांतरण तक कोर्ट का बहिष्कार और अनिश्चितकालीन धरना चलता रहेगा।

लंभुआ तहसील परिसर में बार अध्यक्ष रामसागर पाठक तथा सचिव राजबहादुर श्रीमाली के नेतृत्व में मंगलवार से अधिवक्ता गण अनिश्चितकालीन धरने पर बैठे हुए हैं। अधिवक्ताओं का आरोप है कि एसडीएम गामिनी सिंगला का

- एसडीएम के स्थानांतरण को लेकर दूसरी जगह धरने पर बैठे वकील

कार्य व्यवहार सही नहीं है और बार व बेंच में जो रिश्ता होना चाहिए वह नहीं है। इसलिए कोर्ट का बहिष्कार कर अधिवक्ता धरने पर बैठे हुए हैं। बुधवार को एसडीएम कोर्ट के सामने धरने पर बैठे अधिवक्ताओं चौरसिया, ओमप्रकाश श्रीवास्तव, राजेश सिंह, रमाशंकर गिरी, को पुलिस बल ने हटा दिया। फिर अधिवक्ता तहसील परिसर में ही दूसरे स्थान पर टेंट डालकर धरने पर बैठ गए। अधिवक्ताओं ने कहा कि जब तक एसडीएम का स्थानांतरण नहीं हो जाता तब तक हम लोग धरने पर बैठे रहेंगे। मौके पर राजमणि द्विवेदी, सुरेंद्र शुक्ला, पीएन सिंह, केपी सिंह, अर्जुन प्रदीप चतुर्वेदी, साधु मिश्रा आदि अधिवक्ता मौजूद थे।

संग्रह अमीन हत्याकांड में गवाही जारी

सुलतानपुर, अमृत विचारः संग्रह अमीन हत्याकांड में मंगलवार को अपर सत्र न्यायाधीश प्रथम संतोष कुमार की अदालत में अभियोजन के तीसरे गवाह अमरदीप यादव से बचाव पक्ष के वकील संतोष पांडेय ने जिरह पूर्ण की। कोर्ट ने सुनवाई के लिए 22 अगस्त की तारीख की है। अमेठी के मुसाफिरखाना के भद्दौर निवासी संग्रह अमीन सुरेश यादव व उनके भतीजे बृजेश यादव की 27 फरवरी 2023 को चुनावी रंजिश में गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इस मामले में आरोपी जलालुद्दीन सहित 10 से अधिक आरोपियों के खिलाफ विचारण चल रहा है।

अमृत विचार एक सम्पूर्ण अखबार

क्लासीफाइड

विज्ञापन हेतु अमृत विचार कार्यालय में सम्पर्क करें

वर्गीकृत विज्ञापन हेतु अमृत विचार अखबार के कार्यालय में सम्पर्क करें

सूचना

मैने अपना नाम WAJID ALI से बदलकर VAJID ALI रख लिया अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। S/o-MOHD MUSTAKEEM ADD-BANKATWA KALAN, NAIKINIYA TEH-TULSIPUR DIST-BALRAMPUR-271208 (U.P)

सूचना

यह कि मेरा नाम आलिमा उर्फ आलमीन है मेरे पिता का नाम शमशाद व माता शरीला है। यह दोनो नाम एक ही व्यक्ति (मेरे) के हैं एवं मुझे दोनो नामो से जाना जाता है। इस नाम का गांव में अन्य कोई नही है। आलिमा उर्फ आलमीन पुत्री शमसाद निवासी लोहिया नगर तिर्वागंज थाना तिर्वा जनपद कन्नौज।

सूचना

सूचित हो कि मै अपने पुत्र देवा शर्मा को उसके गलत कृत्यों से परेशान व क्षुब्ध होकर अपनी समस्त चल व अचल सम्पत्ति से बेदखल करता हूँ और भविष्य में उनके द्वारा किये गये कृत्यों के लिए वह स्वयं जिम्मेदार होगा। मुझसे व मेरे परिवार से कोई वास्ता व सरोकार न होगा। शिवबरन शर्मा पुत्र रामप्रसाद निवासी ग्राम– पीरनगर, थाना– माल, परगना व तहसील मलिहाबाद, जिला– लखनऊ।

सूचना

सर्व विदित हो कि शादी से पहले मेरा नाम शालिनी राजपाल था। जो मेरे सभी शैक्षिक व प्रमाणपत्रों में अंकित है। शादी के बाद मेरा नाम सोनी हिमानी हो गया है। जो कि मेरे आधार कार्ड में भी अंकित है। उपरोक्त दोनों नाम शालिनी राजपाल व सोनी हिमानी एक ही व्यक्ति के हैं। मुझे भविष्य में सोनी हिमानी के नाम से जाना व पहचाना जाए। सोनी हिमानी पुत्री ओमप्रकाश राजपाल, पत्नी अजीत हिमानी, निवासी– 5/18/259–ए बछड़ा सुल्तानपुर, अयोध्या। पिन–24001

सूचना

सूचित हो कि मैंने अपने पुत्र का नाम पूर्व में स्नेह आनन्द रखा था जो कि उसके आधार कार्ड पर भी अंकित है। अब मैं अपने पुत्र का नाम बदलकर उत्कर्ष आनन्द करना चाहता हूँ। मैंने नगर निगम लखनऊ से उत्कर्ष आनन्द के नाम से जन्म प्रमाण पत्र भी बनवा लिया है। अतः मेरे पुत्र के आधार कार्ड में भी उसका नाम बदलकर उत्कर्ष आनन्द अंकित किया जाये। सुखदेव पुत्र स्व0 राम जियावन निवासी– मकान नं0– 355/165 क, आलमनगर, नियर रेलवे स्टेशन आलमनगर, लखनऊ।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा सेकण्डरी (मौलवी) परीक्षा सन 2015 अनुक्रमांक 1213461 की अंकतालिका में मेरे पिता का नाम मलिक मोहम्मद रफी लिखा है जबकि सही नाम मोहम्मद रफी है। मरियम रफी पुत्री मोहम्मद रफी पता– 542/ के0बी0/ 021 किशोर विहार कालोनी, कैम्पबेल रोड, लखनऊ।

सूचना

सूचित हो कि मैं कशिश साहू पुत्री संतोष कुमार साहू निवासी– डिफेंस कालोनी गोपाल नगर, तेलीबाग, लखनऊ में मेरे हाईस्कूल का मूल अंकपत्र जिसका अनुक्रमांक नं0– 1136204 एवं इण्टरमीडिएट की मूल मार्कशीट जिसका अनुक्रमांक नं0– 2225847699 वास्तव में कहीं खो गयी है। यदि किसी को मिल जाये तो मुझे मो0 नं0– 6306085983 पर सम्पर्क करें।

सूचना

सूचित हो कि मै अपने पुत्र देवा शर्मा को उसके गलत कृत्यों से परेशान व क्षुब्ध होकर अपनी समस्त चल व अचल सम्पत्ति से बेदखल करता हूँ और भविष्य में उनके द्वारा किये गये कृत्यों के लिए वह स्वयं जिम्मेदार होगा। मुझसे व मेरे परिवार से कोई वास्ता व सरोकार न होगा। शिवबरन शर्मा पुत्र रामप्रसाद निवासी ग्राम– पीरनगर, थाना– माल, परगना व तहसील मलिहाबाद, जिला– लखनऊ।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा हाईस्कूल परीक्षा वर्ष 2007 अनुक्रमांक– 1315830 एवं इण्टरमीडिएट परीक्षा वर्ष– 2010 अनुक्रमांक 0618657 का प्रमाण पत्र वास्तव में खो गया है। भवानी प्रसाद पुत्र श्री अखलेश कुमार सोनी, लखना– इटावा।

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मखाना पत्नी स्व0 माखन निवासिनी ग्राम रतौली, परगना बिजनौर, तहसील सरोजनी नगर, जिला लखनऊ व राम रती पत्नी स्व0 माखन दोनो नाम एक ही महिला के हैं। अर्थात इन्हे मखाना व राम रती दोनो ही नामो से जाना व पहचाना जाता है।

सूचना

मेरे बड़े पुत्र गगन तथा उनकी पत्नी राखी देवी के अनुचित आचरण और असमाजिक गतिविधियों के चलते, मैंने उन्हें अपनी समस्त चल–अचल संपत्ति से पूर्ण रूप से बेदखल कर दिया है। भविष्य में यदि उपरोक्त व्यक्तियों द्वारा कोई भी अनुचित, गैरकानूनी अथवा सामाजिक अशांति फैलाने वाला कार्य किया जाता है, तो उसकी संपूर्ण जिम्मेदारी उन्हीं की होगी। मेरा उनसे कोई लेना–देना नहीं रहेगा। मुकुट सिंह पुत्र स्व. राम प्रसाद निवासी– ग्राम छछुंद, थाना अछल्दा, जिला औरैया

शिक्षिका ने की बीएसए से शिकायत, दो शिक्षक निलंबित

सुलतानपुर, अमृत विचारः विकास खंड जयसिंहपुर में कार्यरत दो शिक्षकों को महिला शिक्षिका से अनाधिकृत रूप से संपर्क कर कार्यवाही करवाने की धमकी देने के मामले में निलंबित कर दिया।

उच्च प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत इंचार्ज प्रधानाध्यापिका कमलेश यादव ने शिकायती पत्र में बताया कि बीईओ द्वारा विद्यालय निरीक्षण के बाद सहायक अध्यापक गौरव त्रिपाठी ने खंड शिक्षा अधिकारी से नोटिस जारी कर कार्यवाही होने की धमकी दी। उसके बाद जयसिंहपुर ब्लॉक में कार्यरत सहायक अध्यापक जय कुमार ने मामले को मैनेज करने की नियत से अवैधानिक रूप में संपर्क किया। जिसकी शिकायत बीएसए उपेन्द्र गुप्ता के सीयूजी पर की गई। बीएसए को प्राप्त शिकायती पत्र और खंड शिक्षा अधिकारी सुधीर सिंह की आख्या पर दोनों शिक्षकों को निलंबित कर दिया। पूर्व में भी बीएसए ने पत्र जारी कर शिक्षकों से अपील की थी कि अपनी समस्याओं के लिए वो उनसे सीधे सम्पर्क कर सकते हैं। विभाग में निष्पक्षता एवं पारदर्शिता के साथ की जा रही कार्यवाही पर शिक्षकों में विश्वास जगा हैं। बीएसए ने सभी बीईओ को निर्देशित किया कि वो शिक्षकों से सीधा संवाद करे और शिक्षकों की समस्याओं का संज्ञान लेकर कार्यवाही करें।

लोगों को मिठाई बांटते कांग्रेस नेता। ● अमृत विचार

राजीव गांधी की जयंती पर अर्पित की श्रद्धांजलि

संवाददाता, सुलतानपुर, अमृत विचार : पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न राजीव गांधी की जयंती पर मंगलवार को कांग्रेसियों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। शहर के तिकोनिया स्थित राजीव गांधी पार्क में उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर ने उन्हें नमन किया। कार्यक्रम के उपरांत शाहगंज तिराहे पर कांग्रेस के पूर्व जिला सचिव पवन मिश्र नन्हें ने कार्यकर्ताओं के साथ लड्डू व मिठाइयां वितरित कीं। इस अवसर पर कार्यकर्ताओं ने कहा कि देश की प्रगति, विज्ञान, सूचना-तकनीक और नवनिर्माण में राजीव गांधी का योगदान हमेशा अविस्मरणीय रहेगा। श्रद्धांजलि सभा में निवर्तमान जिला उपाध्यक्ष सिराज अहमद-भोला, तेज बहादुर पाठक, योगेश पांडेय, मिर्जा अकरम वेग, प्रेम भारती, जफर अहमद सहित दर्जनों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

संदिग्ध परिस्थितियों में गैर जनपद के युवक की मौत

- मृतक के भाई ने ससुराल पक्ष पर लगाया गंभीर आरोप

सुलतानपुर, अमृत विचारः बल्दीराय थाना क्षेत्र के सरैयामाफी गांव में गैर जनपद से आए एक युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। जानकारी के अनुसार, अयोध्या जिले के सागर पट्टी हरनटीनगंज निवासी जगराम अग्रहरि (28) की शादी सरैयामाफी गांव की युवती से तय थी। विवाह 10 दिसंबर को होना था, लेकिन कुछ दिन पूर्व ससुराल पक्ष ने शादी से इनकार कर दिया।

बताया जा रहा है कि बुधवार को जब जगराम शादी की जानकारी लेने युवती के घर पहुंचा तो परिजनों ने रिश्ता मानने से साफ इनकार कर दिया। इसके बाद युवक ने विषाक्त पदार्थ खा लिया और अपने बड़े भाई राघवराम को फोन कर सूचना दी। परिजन आनन-फानन में उसे इलाज के लिए सीएचसी लेकर पहुंचे, जहां से जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। जिला अस्पताल पहुंचने पर डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित करते हुए शव को मर्चरी में रखवा दिया। मृतक के बड़े भाई राघवराम का आरोप है कि युवक को ससुराल पक्ष ने ही विषाक्त पदार्थ खिला दिया, जिससे उसकी मौत हो गई। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।

तैयारी बैठक | पालिकाध्यक्ष ने स्ट्रीट लाइट व्यवस्था सुदृढ़ बनाने को लेकर सभासदों के साथ की बैठक

त्योहारों के मद्देनजर सक्रिय हुई नगर पालिका

जिला संवाददाता, सुलतानपुर

सभासदों के साथ तैयारी बैठक करते पालिकाध्यक्ष प्रवीन कुमार अग्रवाल। ● अमृत विचार

अमृत विचारः नगर पालिका परिषद सुलतानपुर के सभाकक्ष में बुधवार को नगर की स्ट्रीट लाइट व्यवस्था को दुरुस्त और सुदृढ़ बनाने को लेकर तैयारी बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता पालिकाध्यक्ष प्रवीन कुमार अग्रवाल ने की। इस दौरान अधिशासी अधिकारी लाल चन्द्र सरोज, मार्ग प्रकाश विभाग के कर्मचारी व सभासदगण मौजूद रहे।

पालिकाध्यक्ष ने बताया कि नगर को दिव्य और भव्य स्वरूप देने के लिए गोलाघाट से दरियापुर तक मुख्य मार्ग के डिवाइडर पर विद्युत पोल और दोनों ओर एलईडी स्ट्रीट लाइटें लगाई गई हैं। इसी क्रम में प्रयागराज मार्ग पर दरियापुर ओवरब्रिज से पयागीपुर चौराहे तक डिवाइडर पर डिजाइनर ब्रैकेट युक्त 47 आक्टागोनल पोल और दोनों तरफ 120 वाट की एलईडी लाइटें लगाने का कार्य तेजी से चल रहा है। प्रत्येक पोल को एलईडी तिरंगा स्ट्रिप लाइटों से भी सजाया जा रहा है। त्योहारों को ध्यान में रखते हुए नगर के सभी प्रमुख मार्गों और वार्डों में बुझी हुई लाइटों को दुरुस्त कर प्रकाशमान बनाने की योजना पर भी काम शुरू हो गया है। इसके लिए रोस्टर तैयार कर दिन व रात की अलग-अलग ड्यूटी लगाई गई है। इस अवसर पर सभासद रमेश सिंह 'टिन्नू', अखिलेश मिश्र, प्रवीण मिश्र, सुधीर तिवारी, भैयादीप सिंह, अरविन्द कुमार यादव, अरशद हबीब, मोहम्मद जाहिद 'गुड्डू', संजय कप्तान, दिनेश चौरसिया, विजय कुमार जायसवाल, अजय सिंह, मंगरू प्रसाद प्रजापति, मनीष कुमार जायसवाल, मोहम्मद अहमद भाई, सन्दीप सोनकर, सन्दीप गुप्ता, देवानन्द समेत विभागीय कर्मचारी पुनीत कुमार गुप्ता, सुनील कुमार श्रीवास्तव, अजय कुमार तिवारी उपस्थित रहे।

सबमर्सिबल मोटर मामले में कंपनी को भुगतान का आदेश

सुलतानपुर, अमृत विचारः जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग अध्यक्ष राम लखन सिंह चन्द्रौल और सदस्य भारत भूषण तिवारी ने एक महत्वपूर्ण निर्णय देते हुए सिटी ट्रांसपोर्ट कंपनी अमेठी व लखनऊ को आदेशित किया है कि वे अमेठी जिले के संग्रामपुर के नैनहा निवासी परिवादी को सबमर्सिबल मोटर की कीमत 21,430 रुपए अदा करें। साथ ही शारीरिक एवं मानसिक कष्ट हेतु तीन हजार रुपए तथा वाद व्यय 2 हजार रुपए का भुगतान भी दो माह के भीतर करें। निर्णय के अनुसार, यदि निर्धारित अवधि में भुगतान नहीं किया गया तो परिवाद दाखिल करने की तिथि से अदायगी तक 7 प्रतिशत वार्षिक ब्याज देना होगा। मामला अमेठी निवासी स्वर्गीय रामकुमार द्वारा खरीदी गई 7.5 एच.पी. की सबमर्सिबल मोटर से जुड़ा था, जो वारंटी अवधि के दौरान ही खराब हो गई थी।

न्यूज ब्रीफ

गो आश्रय केंद्र का किया गया निरीक्षण

रुपईडीह। राजकीय पशु चिकित्सालय रुपईडीह के चिकित्साधिकारी डॉ बीआर निगम ने ग्राम पंचायत पचरन में संचालित गो आश्रय केंद्र का निरीक्षण किया। यहां पर उन्होंने ग्राम प्रधान से संरक्षित जानवरों के चारा, पेयजल, रहन-सहन आदि के बारे में जानकारी हासिल की। यहां पर संरक्षित 138 जानवरों में से एक जानवर के बीमार पाए जाने पर उसका इलाज किया गया।

बीईओ ने स्कूलों का लिया जायजा

रुपईडीह, गोंडा। ब्लॉक के बीईओ मनीष कुमार सिंह ने कंपोजिट विद्यालय दुल्हापुर पहाड़ी, दलपतपुर तथा प्राथमिक विद्यालय हरभजन पुरवा का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने इन विद्यालयों में अध्यापक अध्यापिकाओं व छात्र-छात्राओं की उपस्थिति, यूडायस पर उनकी फीडिंग, शौचालय, पेयजल व बिजली व्यवस्था के बारे में जानकारी हासिल की।

बीआरसी पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

रुपईडीह। निपुण भारत मिशन के तहत ब्लॉक के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक शिक्षिकाओं व शिक्षामित्रों का बुनियादी भाषा व गणित पर आधारित चल रहे ब्लॉक संसाधन केंद्र पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण के द्वितीय चरण का शुभारंभ पूर्व माध्यमिक शिक्षक संघ के ब्लॉक महामंत्री बालमुकुंद पांडेय ने माँ सरस्वती के चित्र पर फूल माला अर्पित कर पूजा अर्चना के साथ किया। प्रशिक्षक दुर्गेश पाठक, सुशील तिवारी, धर्मेंद्र तिवारी व विवेक पाठक भी उपस्थित रहे।

ताला तोड़कर मध्याह्न भोजन का सामान चोरी

बेलसर (गोंडा)। मामला तरबगंज क्षेत्र के रगड़गंज चौकी क्षेत्र के पूर्व माध्यमिक कन्या विद्यालय बेलसर का है। जहां पर बीती रात चोरों ने ताला तोड़कर बर्तन, मध्याह्न भोजन के लिए रखा चावल व अन्य सामान उठा ले गए। प्रधानाध्यापिका अनुराधा शुक्ल रगड़गंज चौकी पर तहरीर दिया है। वहीं इसी चौकी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय घनवलिया में बीती रात चोरों ने किचन के खिड़की का सरिया काटकर चोरी करने का प्रयास किया। ग्रामीणों ने चोर को पकड़ लिया। प्रभारी प्रधानाध्यापिका रेनू ने तरबगंज थाने में तहरीर दिया है। प्रभारी निरीक्षक तरबगंज कमलाकांत त्रिपाठी ने बताया कि जांच कर कार्यवाही की जायेगी।

जमीन विवाद में मारपीट

इटियाथोक: इटियाथोक थाना क्षेत्र के ग्राम बस्ती के रहने वाले पवन कुमार पुत्र काशीराम चौहान ने थाने पर प्रार्थना पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई है। आरोप है कि विपक्षी हरिराम, गोकुल, सरोज ने गाली गलौज देते हुए दीवार गिराने की कोशिश की। मना करने पर लाठी डंडे व कुदाल से हमला कर दिया। पीड़ित पवन कुमार चौहान को काफी गंभीर चोटें आई है। जो जिला अस्पताल में भर्ती हैं। इटियाथोक कोतवाली पुलिस के द्वारा अभी तक इस संबंध में कोई मुकदमा पंजीकृत नहीं किया गया है।

झील में मगरमच्छ देख ग्रामीणों में दहशत

परसपुर, गोंडा। परसपुर ब्लॉक क्षेत्र के चन्दापुर किटौली गांव की झील में मगरमच्छ देखे जाने से ग्रामीणों में भय का माहौल है। ग्रामीण शिवकुमार, राजपती और बहादुर ने बताया कि दस दिन से मगरमच्छ डेरा जमाये है। कभी भी कोई बड़ी दुर्घटना हो सकती है। इस बारे में लेखपाल को सूचना दी गई है, लेकिन अब तक कोई कदम नहीं उठाया गया है। उपजिलाधिकारी करनैलगंज यशवंत राव ने कहा कि शीघ्र ही मगरमच्छ को पकड़वाने की कार्रवाई की जाएगी।

रेशम कीट पालन को लेकर दिया प्रशिक्षण

मनकापुर। केन्द्रीय रेशम बोर्ड वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार की क्षेत्रीय इकाई अनुसंधान प्रसार केंद्र, बस्ती द्वारा ग्राम अशरफ पुर के मजरा पूरे देवनाथ में शहतूती रेशम कीट पालन पर कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। 60 से अधिक कृषकों ने भाग लिया। वैज्ञानिक डॉ. राम लखन राम ने कीट पालन की नवीन तकनीकों, विशुद्धिकरण, संक्रमण नियंत्रण व टहनी कीट पालन पद्धति की उपयोगिता पर विस्तार से जानकारी दी। सहायक रेशम विकास अधिकारी प्रतिभा यादव ने महिला किसानों को इससे जुड़ने का आह्वान किया।

कुरसहा प्रधान का निधन

रुपईडीह, गोंडा: मंगलवार की देर शाम कुरसहा की प्रधान मालती पांडेय 54 का निधन हो गया। प्रधान के पति संतोष पांडेय ने बताया कि वह पिछले कुछ दिनों से सांस सम्बधी बीमारी से पीड़ित थी। उनके निधन पर ब्लॉक प्रमुख बबिता सिंह, बीडीओ सत्य प्रकाश पांडेय, एडीओ पंचायत गिरजेश पटेल, ग्राम पंचायत अधिकारी संघ के जिलाध्यक्ष यमुना प्रसाद, पूर्व प्रमुख राजकुमारी, जिपंस मनोज शुक्ल ने शोक व्यक्त किया है।

कजरी तीज की तैयारी में जुटा प्रशासन

एसपी ने दुखहरनाथ मंदिर का किया निरीक्षण, बैरिकेडिंग, बैरियर एवं साफ-सफाई को लेकर दिया निर्देश

संवाददाता, गोंडा

अमृत विचार : कजरी तीज पर्व को लेकर पुलिस महकमा तैयारियों में जुट गया है। श्रद्धालुओं की सुरक्षा व मंदिर की साफ-सफाई से लेकर रूट डायवर्जन के प्लान पर मशक्कत की जा रही है।

बुधवार को एसपी विनीत जायसवाल ने शहर के पौराणिक दुःखहरननाथ मंदिर का निरीक्षण किया और तैयारियों का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान एसपी ने मंदिर परिसर में लगी बैरिकेडिंग, बैरियर एवं साफ-सफाई की व्यवस्था का निरीक्षण किया और श्रद्धालुओं की सुरक्षा प्रबंधों को पुख्ता करने के लिए संबंधित अधिकारियों को दिशा निर्देश दिया।

कजरी तीज पर्व को लेकर शहर के दुखहरननाथ मंदिर का निरीक्षण करते एसपी।

कजरी तीज त्यौहार पर लाखों की संख्या में कांवड़िया श्रद्धालु सरयू घाट से जल भरकर दुःखहरण नाथ मंदिर व पृथ्वीनाथ मंदिर समेत जिले भर के शिव मंदिरों में जलाभिषेक के लिए पहुंचते हैं। इस दौरान शहर में परंपरागत रूप से कांवड़ यात्रा/शोभा यात्रा निकाली जाती है। इस पर्व को सकुशल संपन्न कराने के लिए पुलिस मकहमा लगातार तैयारी में जुटा हुआ है। शहर की सड़कों पर बैरिकेडिंग लगाकर कांवड़िया भक्तों के लिए सुगम मार्ग तैयार किया जा रहा है। साथ ही कजरी तीज को दिन सड़कों पर वाहनों की भीड़ न हो इसके लिए रूट डायवर्जन प्लान तैयार किया जा रहा है।

बुधवार को एसपी विनीत जायसवाल ने दुखहरननाथ मंदिर पहुंचकर व्यवस्था का निरीक्षण किया और तैयारियों की जानकारी ली। कजरी तीज पर्व सकुशल संपन्न हो सके इसके लिए पर्याप्त संख्या में पुलिस एवं महिला पुलिस कर्मियों की ड्यूटी लगाई गई है। श्रद्धालुओं की सुरक्षा और निगरानी के लिए प्रमुख शिवालयों के आसपास अतिरिक्त सीसीटीवी कैमरे लगाए जा रहे हैं तथा त्यौहार के दिन भीड़ नियंत्रण और निगरानी के लिए ड्रोन कैमरों का भी उपयोग किया जाएगा। महिला श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए एंटी-रोमियो टीमों का गठन किया गया है।

यातायात व्यवस्था एवं श्रद्धालुओं के सुगम आवागमन को लिए रूट डायवर्जन प्लान तैयार कर लिया गया है। भीड़-भाड़ वाले स्थलों पर पर्याप्त पुलिस बल की तैनाती के साथ ही सादे वस्त्रों में पुलिसकर्मी तथा महिला पुलिस की संयुक्त टीमें भी लगाई जाएंगी। इस दौरान मिश्रित आबादी वाले क्षेत्रों एवं जुलूस मार्गों पर सीसीटीवी एवं ड्रोन कैमरों से निरंतर निगरानी रखी जाएगी।

सहयोगियों के साथ मिल पत्नी ने कर दी पति की हत्या

संवाददाता, कटरा बाजार, गोंडा

- परिजनों की तहरीर पर मुकदमा दर्ज

अमृत विचार: पहाड़ापुर गांव निवासी लल्लू शुक्ल ने बहू निशा शुक्ला के विरुद्ध बेटे शिवम शुक्ल की हत्या करने का मामला दर्ज कराया है। आरोप है कि उसकी बहू निशा ने अपने कुछ सहयोगियों के साथ मिलकर 16 व 17 अगस्त को कृष्ण जन्माष्टमी की रात बेटे शिवम की गला दबाकर हत्या कर दी। पीड़ित पिता के अनुसार घटना से एक दिन पूर्व बहू ने बेटे के साथ झगड़ा करके मारपीट की थी। वह रोजगार के लिए अपने अन्य दो पुत्रों व परिवार के साथ पंजाब प्रांत के लुधियाना में रहता है। ज्येष्ठ पुत्र शिवम व बहू निशा पहाड़ापुर गांव के पैतृक निवास पर ही रहते थे। बेटे की निशा के साथ तीन वर्ष पूर्व ही विवाह हुआ था। तभी से बहू का व्यवहार व आचरण ठीक नहीं चल रहा था। परिवार के साथ व अक्सर झगड़ा किया करती थी। प्रभारी निरीक्षक राजेश सिंह ने बताया कि लल्लू शुक्ल की तहरीर पर पहाडापुर गांव निवासी निशा शुक्ला पत्नी शिवम शुक्ल सहित कुछ अन्य सहयोगियों के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता के तहत हत्या का मुकदमा दर्ज किया है। प्राथमिकता के आधार पर मामले की विवेचना शुरू की जा रही है।

सड़क, नाली और विद्युत पोल की मांग

करनैलगंज, अमृत विचार : नगर पालिका परिषद क्षेत्र के वार्ड नंबर 15 सदर बाजार की मूलभूत सुविधाओं की बदहाली को लेकर सभासद सुमन के प्रतिनिधि नीरज जायसवाल ने जिलाधिकारी को पत्र सौंपकर सड़क, नाली एवं विद्युत पोल लगाए जाने की मांग की है।

पत्र में कहा गया है कि सीओ आवास के पीछे पूर्वजों से लोग निवास कर रहे हैं, लेकिन नगर पालिका परिषद की ओर से अब तक न तो सड़क का निर्माण कराया गया और न ही नालियां बनी हैं। मुख्य मार्ग लखनऊ–गोंडा हाईवे का लेवल ऊँचा होने से लोगों को आने-जाने में काफी असुविधा होती है। बरसात में गलियों में घुटनों तक पानी भर जाता है। स्थानीय लोगों का कहना है कि वार्ड में पर्याप्त स्ट्रीट लाइट न होने से शाम होते ही अंधेरा छा जाता है। जबकि यह इलाका डाक बंगला, सीओ आवास और नगर कोतवाली के निकट स्थित है। पूर्व में भी इस संदर्भ में नगर पालिका को प्रार्थना पत्र दिया जा चुका है, किंतु कार्यवाही न होने पर सभासद प्रतिनिधि ने एक बार फिर जिलाधिकारी से हस्तक्षेप की मांग की है।

कटरा घाट पर तैयारियां पूरी

करनैलगंज स्थित सरयू का कटरा घाट जहां पर स्नान को जुटेंगे कांवड़िये।

करनैलगंज, अमृत विचार : कजरी तीज पर्व पर कांवड़ियों के स्वागत के लिए कटरा घाट सरयू तट को नया रूप-रंग दिया गया है। नगर पालिका परिषद ने घाट पर स्नान हेतु नई सीढ़ियों और घाट का निर्माण कराया है, साथ ही घाट तक पहुंचने वाले जर्जर रास्ते को भी नया बनवा दिया गया है।

करनैलगंज नगर से तीन किमी पश्चिम स्थित कटरा घाट, कजरी तीज सहित अनेक पर्वों पर श्रद्धालुओं का प्रमुख केंद्र रहा है। इस अवसर पर करीब दस लाख कांवड़ियों के आने की संभावना है। सरयू के पावन जल से भगवान शिव का अभिषेक करने की परंपरा के चलते यहां हर वर्ष विशाल मेला लगता है। प्रशासन अब पूरे मेले की देखरेख करता है। वर्ष 2007 में इंटरसिटी एक्सप्रेस से कटकर लगभग चार दर्जन कांवड़ियों की मौत हो जाने के बाद प्रशासन ने इस आयोजन की विशेष जिम्मेदारी उठाई थी। तब से घाट और मेले में सुरक्षा एवं सुविधाओं पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा।

इस वर्ष नगर पालिका परिषद द्वारा घाट पर स्नान हेतु नई सीढ़ियां और घाट तैयार कराए गए हैं। रास्ते पर एक गेट का निर्माण भी कराया जा रहा है, हालांकि इसके मेले तक पूर्ण होने की संभावना कम है। मेले में आने वाले कांवड़ियों और श्रद्धालुओं को अधिकतम सुविधा उपलब्ध कराने के लिए प्रशासन और नगर पालिका परिषद पूरी तरह जुटे हुए हैं।

जय मां दुर्गे शक्ति समिति के पदाधिकारी चयनित

करनैलगंज, अमृत विचार : नगर की सबसे पुरानी जय मां दुर्गे शक्ति समिति, मौर्य नगर की वार्षिक बैठक मंगलवार की रात श्री चित्रगुप्त इंटर कॉलेज में आयोजित की गई। बैठक का शुभारंभ भैरवनाथ महंत रमाशंकर गिरी के मंगलाचरण से हुआ तथा अध्यक्षता चेयरमैन प्रतिनिधि रामजीलाल मोदनवाल ने की। बीते वर्ष की आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत किया गया, जिसके बाद सर्वसम्मति से समिति के नए पदाधिकारियों का चयन किया गया। इसमें भैरवनाथ मंदिर महंत के पुत्र आशीष गिरी को अध्यक्ष और विकास शुक्ला को महामंत्री बनाया गया। उपाध्यक्ष पद पर आशीष शुक्ला, गणेश पाण्डेय, महेश पुरवार, मुकेश सोनी, प्रकाश जायसवाल, मनु यज्ञसैनी, समीर गुप्ता व अरुण बाथम चुने गए। वहीं मंत्री पद की जिम्मेदारी आकाश शुक्ला, देवेंद्र पांडेय, प्रदुमन शुक्ला, सूरज शुक्ला, सूरज सोनी, राजा मौर्य और आनंद सोनी को दी गई। सत्यम सिंघानिया को कोषाध्यक्ष और आनंद साह को लेखा निरीक्षक नियुक्त किया गया। प्रबंधक की जिम्मेदारी पंडित गिरीश शुक्ला, राजकुमार और महेंद्र यज्ञसैनी को सौंपी गई।

22 उप निरीक्षकों को मिली तैनाती, दरोगा लाइन हाजिर

संवाददाता, गोंडा

- तीन दिन में 120 पुलिसकर्मी किए गए इधर से उधर

अमृत विचार : पुलिस महकमे में बदलाव का सिलसिला जारी है। बुधवार को एक बार फिर से एसपी ने 23 उप निरीक्षकों की तैनाती में बदलाव किया है। वजीरगंज थाने में तैनात दरोगा रामधारी दिनकर को एसपी ने लाइन हाजिर कर दिया है वहीं पुलिस लाइन में तैनात रहे 22 उप निरीक्षकों को जिले के विभिन्न थानों पर तैनात किया गया है। पिछले तीन दिनों में एसपी ने 120 पुलिसकर्मियों की तैनाती में बदलाव किया है। इसको लेकर महकमे में हड़कंप मचा है।

कानून व्यवस्था को मजबूत करने के उद्देश्य से पुलिस महकमे में पिछले तीन दिन से तबादला एक्सप्रेस दौड़ रही है। बुधवार को एसपी ने फिर से 23 उप निरीक्षकों की तैनाती में बदलाव किया। वजीरगंज थाने में तैनात रहे दरोगा रामधारी दिनकर को एसपी ने लाइन हाजिर कर दिया है। वहीं पुलिस लाइन से 22 उपनिरीक्षक अलग अलग थानों पर भेजे गए हैं। उप निरीक्षक अजय कांत द्विवेदी को पुलिस लाइन से कर्नलगंज, आफाक खां को खोंडारे, वेदराम को एसएसआई वजीरगंज, मुकेश मणि त्रिपाठी को कटरा बाजार तथा उपेंद्र कुमार सिंह व विजय शंकर को कोतवाली देहात में तैनात किया गया है। महिला उप निरीक्षक आपकी वर्मा को कोतवाली नगर, जगदीश प्रसाद को कौड़िया, राजेश पांडेय को कर्नलगंज, राजेंद्र प्रसाद छपिया, जावेद अहमद इटियाथोक, महेश राम छपिया, रामाज्ञा प्रसाद मोतीगंज तथा मोहनलाल यादव व दिलीप कुमार सिंह को धानेपुर भेजा गया है। इसी तरह भोला प्रसाद को छपिया, रणविजय सिंह को वजीरगंज, शिवकुमार सरोज खोड़ारे, ओमवीर सिंह कड़िया, विनोद कुमार सिंह खोड़ारे व रमेश कुमार को महिला थाने में तैनाती दी गयी है। इसके पहले मंगलवार को एसपी ने 82 व सोमवार को 15 पुलिसकर्मियों की तैनाती में बदलाव किया था।

युवती को लेकर परिजन फरार

परसपुर : राजापुर पूरे उमराव गांव से एक युवती को लेकर उसके मायके पक्ष के लोग फरार हो गए। इस पर युवती के ससुराल पक्ष ने हत्या की आशंका जताते हुए पुलिस से गुहार लगायी है। उमरी बेगमगंज थाना क्षेत्र निवासी एक युवती को राजापुर पूरे उमराव गांव के युवक ने 16 जुलाई को अपने साथ ले जाकर कोर्ट मैरिज कर एक साथ रहना शुरू कर दिया था। बीते रविवार को युवक उक्त युवती को लेकर अपने गांव पहुंचा। आरोप है कि इसकी जानकारी होते ही युवती के परिजन उसके घर पहुंचे और जबरन युवती को गाड़ी में बैठाकर अपने साथ ले गए। और अपने घर पर ताला डालकर पूरे परिवार सहित कहीं फरार हो गए हैं। युवक ने यह आशंका जताई है कि युवती के परिजन कई अन्य लोगों की मदद से उसे जबरन ले गए हैं और अब कहीं गुप्त स्थान पर छिपाकर रखे हुए हैं। साथ ही युवती की हत्या किए जाने की भी संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। इस संबंध में थाना प्रभारी अनुज त्रिपाठी ने बताया कि आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी गई है।

समस्या निस्तारण को लेकर बीएसए से मिला शिक्षक संघ

बीएसए को ज्ञापन देते शिक्षक। अमृत विचार

गोंडा, अमृत विचार : शिक्षकों की समस्याओं के निराकरण की मांग को लेकर बुधवार को प्राथमिक शिक्षक संघ ये प्रतिनिधिमंडल ने बीएसए अतुल तिवारी से मुलाकात की। संघ के जिलाध्यक्ष आनंद त्रिपाठी ने बताया कि प्रभारी प्रधानाध्यापक को प्रधानाध्यापक कार्य अवधि तक वेतन निर्धारण एवं भुगतान संबंधी आदेश किया जाना लंबित है। इसका त्वरित निस्तारण कराया जाए।

चयन वेतनमान स्वीकृति की प्रक्रिया लंबित होने के कारण सैकड़ों शिक्षकों को आर्थिक क्षति हो रही है। समय सीमा का निर्धारण न होने के कारण विकास खण्डों पर पत्रावलियां लंबित पड़ी है। कई शिक्षकों का संपूर्ण माह का नियमित वेतन अग्रिम आदेश तक बाधित कर दिया जाता है। इस तरह किसी भी शिक्षक का संपूर्ण माह का वेतन बाधित न किया जाए। बीएसए ने शिक्षकों के प्रतिनिधिमंडल को समस्याओं का निस्तारण का भरोसा दिलाया है। इस दौरान विजय नारायन पाण्डेय, इंद्र प्रताप सिंह, अफसर हसन, मनमोहन श्रीवास्तव, जगत नरायन, इरशाद मौजूद रहे।

फाइलेरिया उन्मूलन को लेकर पुराने मरीज लोगों को कर रहे सचेत

गोंडा, अमृत विचार: फाइलेरिया उन्मूलन के लिए चल रहे सामूहिक दवा सेवन एमडीए अभियान में घर-घर फाइलेरिया से बचाव की दवा सेवन कराने पहुंच रही आशा कार्यकर्ताओं के साथ अब वे लोग भी हैं, जो खुद फाइलेरिया से पीड़ित हैं। बेलसर, पडरी कृपाल, मसकनवा और नवाबगंज ब्लॉकों के 49 मरीज, सीएचओ के नेतृत्व में गठित रोगी आपबीती सुनाते है कि कैसे इस बीमारी ने उनकी जिंदगी बदल दी, और क्यों दवा खाना जरूरी है।

जिला संचारी रोग नियंत्रण अधिकारी डॉ. सी.के. वर्मा ने बताया कि जिले में फाइलेरिया के 2065 मरीज चिन्हित हैं। इनमें से चार ब्लॉकों के 49 मरीज अभियान में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। आशा-आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सहित 275 से अधिक लोग संकोची परिवारों को दवा सेवन के लिए प्रेरित कर रहे हैं। बेलसर ब्लॉक के भमैचा गांव की 45 वर्षीय बबिता सिंह हैं। दो बच्चों की मां और डबल एमए पास बबिता लगभग 15 वर्षों से फाइलेरिया से जूझ रही हैं।

फाइलेरिया उन्मूलन के लिए प्रेरित करतीं महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता। अमृत विचार

अचानक आई इस बीमारी ने न केवल उनके कदमों की रफ्तार रोक दी, बल्कि सेना या पुलिस में भर्ती होने के सपने भी छीन लिए। फाइलेरिया लाइलाज है, बस सावधानी, सफाई और व्यायाम से इसे गंभीर होने से रोका जा सकता है। सीएमओ डॉ. रश्मि वर्मा ने बताया कि मच्छरों से फैलने वाली फाइलेरिया की रोकथाम के लिए 28 अगस्त तक, मनकापुर, रूपईडीह, तरबगंज और वजीरगंज को छोड़कर शेष 12 ब्लॉकों में 28.81 लाख से अधिक लोगों को घर-घर जाकर दवा खिलाई जा रही है।

मांगों को लेकर पंचायत सहायकों ने सौंपा ज्ञापन

एडीओ पंचायत को ज्ञापन देते पंचायत सहायक। अमृत विचार

कटरा बाजार, अमृत विचार : बुधवार को कटरा बाजार ब्लॉक परिसर में एडीओ पंचायत कार्यालय पर पंचायत सहायक कल्याण समिति उत्तर प्रदेश के आह्वान पर पंचायत सहायकों ने अपनी मांगों को लेकर एडीओ पंचायत कटरा बाजार प्रीतम श्रीवास्तव को ज्ञापन सौंपा।

पंचायत सहायकों ने कहा कि उनसे कई तरह के कार्य कराए जाते हैं लेकिन न तो मानदेय तय है और न ही आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए जा रहे हैं। समिति के ब्लॉक अध्यक्ष ज्ञान देव द्विवेदी ने कहा कि पंचायत सहायकों को उच्च गुणवत्ता युक्त मोबाइल/टैबलेट उपलब्ध कराया जाए, ताकि वे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर विभागीय कार्य सुचारू रूप से कर सकें। विभागीय कार्यों का भुगतान सीधे पंचायत सहायकों को मिले। ज्ञापन में यह भी कहा गया कि ग्रामीण स्तर पर जन्म-मृत्यु पंजीकरण, राशन, पेंशन, किसान सम्मान निधि, श्रमिक कार्ड, आय-जाति-निवास प्रमाण पत्र सहित अधिकांश योजनाओं की जिम्मेदारी पंचायत सहायकों पर है, लेकिन इसके अनुरूप मानदेय न मिलना अन्यायपूर्ण है। इस अवसर पर उपाध्यक्ष रोहित, कोषाध्यक्ष सूरज राहुल राव, घनश्याम, मुकेश कुमार व अन्य उपस्थित रहे।

दूर होगी किल्लत | जिला कृषि अधिकारी बोले, जिले में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है यूरिया

दो दिन में निजी दुकानों पर पहुंचेगी 800 एमटी यूरिया

संवाददाता, गोंडा

विकास भवन सभागार में प्रगतिशील किसानों के साथ बैठक करतीं डीएम प्रियंका निरंजन।

अमृत विचार : जिले भर में यूरिया खाद की किल्लत दूर करने के लिए अब निजी दुकानों पर भी यूरिया खाद का आवंटन किया जायेगा। आगामी दो दिनों के भीतर निजी दुकानदारों को 800 मीट्रिक टन यूरिया खाद का आवंटन किया जायेगा। निजी दुकानों पर यूरिया की बिक्री शुरू होते ही खाद की किल्लत दूर हो जायेगी।

जिले में यूरिया खाद को लेकर जबरदस्त मारामारी चल रही है किसान एक एक बोरी खाद के लिए हलकान हैं और उन्हें पूरे दिन लाइन में खड़ा रहना पड़ रहा है। मंगलवार को धानेपुर साधन सहकारी समिति पर बारिश के बीच लाइन लगाकर खड़ी महिलाओं की तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है जहां घंटों तक बारिश में भीगने के बाद उन्हें खाद मिल सकी। यही हालत अन्य क्षेत्रों की भी है। बुधवार को जब इस संबंध में जब जिला कृषि अधिकारी चंद्र प्रकाश सिंह से सवाल किया गया तो उन्होंने यूरिया की उपलब्धता की जानकारी देते हुए बताया कि जिले में यूरिया की कोई कमी नहीं है अभी पीसीएफ के गोदाम में 5000 मीट्रिक टन खाद रखी हुई है। बुधवार शाम तक 1800 मीट्रिक टन खाद और मिल जायेगी। इसमें से 800 मीट्रिक टन खाद का आवंटन निजी दुकानों को किया जायेगा। जबकि बाकी की यूरिया साधन सहकारी समितियों को भेजी जायेगी। उन्होंने दावा किया कि जैसे ही यह खाद दुकानों पर पहुंचेगी खाद की किल्लत दूर हो जाएगी और किसानों को लाइन लगाकर खाद लेने की समस्या से निजात मिल जायेगी।

किसान बंधु की बैठक में डीएम ने सुनी समस्या

बुधवार को विकास भवन सभागार में किसान दिवस के अवसर पर डीएम प्रियंका निरंजन की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक हुई। जिलाधिकारी ने उपस्थित किसानों की समस्याएं सुनी और उनके समाधान का भरोसा दिलाया। उन्होंने कहा कि किसानों की समस्याओं का निस्तारण समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण होना चाहिए ताकि उन्हें किसी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े। डीएम ने किसानों के हित में चलाई जा रही प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, किसान क्रेडिट कार्ड योजना, कृषि यंत्रों पर अनुदान, सोलर पंप योजना आदि का व्यापक प्रचार-प्रसार करने तथा इन योजनाओं का लाभ पात्र किसानों तक पहुंचाने का निर्देश दिया।

उर्वरक की उपलब्धता कराने को लेकर भाकपा ने सौंपा ज्ञापन

गौरा चौकी, गोंडा : भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) ब्रांच कमेटी गौरा के पदाधिकारियों ने समितियों पर पर्याप्त यूरिया खाद की उपलब्धता सुनिश्चित कराने सहित अन्य मांगों को लेकर ब्लॉक मुख्यालय बभनजोत पर खंड विकास अधिकारी राम लगन वर्मा को ज्ञापन सौंपा।

जिलाधिकारी को संबोधित दिए गए आठ सूत्री मांग पत्र में यूरिया खाद की भारी किल्लत को देखते हुए सभी समितियों व खाद की दुकानों पर खाद उपलब्ध कराने, समितियों पर खाद वितरण सही ढंग से कराए जाने, यूरिया खाद की खरीदारी करने पर किसानों को उसकी रसीद दिए जाने, किसानों को यूरिया खाद पंजीयन व उसके जोत के आधार पर वितरण कराए जाने, कोल्हई गरीब से मद्दे बाजार जाने वाले मार्ग पर जलभराव की समस्या को दूरकर पैमाइश कराकर सड़क का निर्माण कराने, ग्राम पंचायत कोल्हई गरीब में जल निकासी की व्यवस्था तथा नालियों की साफ सफाई कराई जाने, गिन्नी नगर से अड़वाघाट होते हुए बस्ती जिले को जोड़ने वाले जर्जर हो चुके मुख्य मार्ग का निर्माण कराए जाने सहित अन्य मांगे शामिल है। पदाधिकारियों का आरोप है की 19 अगस्त को बनगवां न्याय पंचायत में समिति पर सुबह 5 बजे से शाम छ बजे तक लाइन में लगे किसानों को खाद न देकर केवल टोकन देकर टाल दिया गया और बाद में खाद की कालाबाजारी की गई। इस अवसर पर ब्रांच सचिव कामरेड अब्दुल गनी, कामरेड मोहर्रम अली आदि उपस्थित रहे।

कैंसर से जूझ रहे युवक ने लगाई फांसी

गोंडा : जेल रोड स्थित काशीराम कॉलोनी के रहने वाले हरीश (32) मंगलवार देर रात उबन की बात कह कर छत पर सोने के लिए चले गए थे। बीते दो वर्षों से कैंसर का इलाज हो रहा था। लगातार इलाज और दवाई के बावजूद उनकी हालत में सुधार नहीं हो रहा था, वह काफी परेशान थे। मृतक की पत्नी निर्मला ने बताया कि बुधवार की सुबह जब देर तक नहीं दिखे तो बगल के कमरे में जाकर देखा गया तो वह फांसी से लटक रहे थे, परिजनों ने देखा तो चीख-पुकार मच गई और पूरे मोहल्ले में सन्नाटा पसर गया। परिजनों का कहना है कि बीमारी की वजह से वह शारीरिक व आर्थिक रूप से टूट चुके थे। मृतक के दो बच्चे हैं जिनका भी रो-रो कर बुरा हाल है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भरने के बाद पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

अमृत विचार

अयोध्या, गुरुवार, 21 अगस्त 2025

न्यूज ब्रीफ

आज बाधित रहेगी विद्युत आपूर्ति

बहराइच, अमृत विचार : उप खण्ड अधिकारी ने बताया कि बेहतर विद्युत आपूर्ति के दृष्टिगत 21 अगस्त को 33/11 केवी विद्युत उपकेन्द्र-सिविल लाइन के अन्तर्गत 5 एमवीए पावर परिवर्तक पर ओवरहालिंग का कार्य प्रस्तावित है। इसके कारण 33/11 केवी सिविल लाइन से पोषित 11 केवी वीआईपी, कलेक्ट्रेट, दीवानी तथा सरस्वती फीडर से संचालित दीवानी, बम्बईया मस्जिद, विकास भवन, सूफीपुरा तथा बदरियाबाग आदि क्षेत्र की विद्युत आपूर्ति प्रातः 06:00 बजे से शाम 08:00 बजे तक बाधित रहेगी।

जर्जर मार्ग पर जलभराव से राहगीर परेशान

बहराइच, अमृत विचार : सिविल लाइंस स्थित पूर्व विधायक के आवास के सामने स्थित जर्जर मार्ग पर जलभराव से राहगीर परेशान हैं। देवेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि उनके पिता जटाशंकर सिंह भाजपा से पांच बार विधायक रह चुके हैं। उनके बड़े भाई राघवेंद्र प्रताप सिंह भाजपा के जिला महामंत्री हैं। उन्होंने मार्ग की मरम्मत कराने की मांग की है।

मार्ग पर जलभराव।

उपभोक्ताओं के घर पहुंचेगा बिजली बिल

बहराइच, अमृत विचार : शहर में जिन उपभोक्ताओं के घर स्मार्ट मीटर लगे हैं और उनके घर बिजली का बिल नहीं पहुंच रहा है उनकी यह समस्या दूर होने वाली है। मध्यांचल विद्युत वितरण निगम के अधीक्षण अभियंता ने अधिशासी अभियंता वितरण और परीक्षण को इस आशय का आदेश जारी किया है।

किसानों ने सचिव पर किया हमला

साधन सहकारी समिति बदरौली में खाद लेने के लिए उमड़ी भीड़ हुई अनियंत्रित

संवाददाता, कैसरगंज, बहराइच

- खाद वितरण शुरू होते ही कुछ लोगों ने सचिव व सहयोगियों पर किया हमला

हमले में घायल सचिव।

अमृत विचार : कैसरगंज थाना अंतर्गत साधन सहकारी समिति बदरौली में बुधवार को खाद वितरण के समय उमड़ी किसानों की भारी भीड़ ने नाराज होकर सचिव व उनके सहयोगियों पर हमला कर दिया। इसमें सचिव अयोध्या प्रसाद, शंकर सिंह व राज सिंह आदि घायल हो गये।

बुधवार की सुबह से साधन सहकारी समिति बदरौली मे यूरिया लेने के लिए किसानों की भीड़ लगी हुई थी। सचिव अयोध्या प्रसाद ने सौ लोगों को टोकन देकर खाद बांटना शुरू किया लेकिन भीड़ अनियंत्रित हो गयी। पुलिस की पुख्ता व्यवस्था न होने के कारण स्थिति तनावपूर्ण पूर्ण हो गयी। कुछ लोगों ने सचिव व उनके सहयोगियो पर हमला कर दिया। इसमें सचिव सहित कई अन्य लोग घायल हो गये। सचिव अयोध्या प्रसाद की ओर से पुलिस को सूचना दी गयी। मौके पर प्रभारी निरीक्षक सुरेंद्र कुमार शर्मा ने पहुंचकर स्थिति को संभाला। एसडीएम अखिलेश कुमार सिंह ने बताया कि समिति में लगभग 500 बैग खाद के उपलब्ध हैं। खाद की किसी तरह की कमी नहीं थी । विवाद किस कारण हुआ है, इसकी जांच कराई जा रही है। मौके पर शांति व्यवस्था बनाने के लिए पुलिस फोर्स तैनात की गयी है।

एसडीएम ने खाद की दुकानों पर की छापेमारी

पयागपुर, बहराइच, अमृत विचार : एसडीएम अश्वनी कुमार पाण्डेय ने बुधवार को खाद की दुकानों की जांच की। उन्होंने खजुरी स्थित नरायण कृषक सेवा केंद्र और आईएफएफडीसी कृषक सेवा केंद्र का औचक निरक्षण किया। जांच में दोनों ही दुकानों पर यूरिया खाद का स्टॉक शून्य मिला। एसडीएम ने शिवदहा स्थित शुक्ला ट्रेडर्स और पडरी स्थित प्राथमिक ग्रामीण सहकारी समिति (बी पैक्स) का निरीक्षण किया। इन दोनों जगहों पर खाद उपलब्ध मिली। एसडीएम ने दुकानदारों को निर्देश दिया कि वे किसानों को जरूरत के अनुसार खाद उपलब्ध कराएं।

खाद की दुकान की जांच करते एसडीएम।

उर्वरक संकट को लेकर सपा का प्रदर्शन आज

बहराइच, अमृत विचार : जिले में किसानों को हो रही यूरिया की दिक्कत को लेकर सपा पूर्व कैबिनेट मंत्री यासर शाह और जिला अध्यक्ष राम हर्ष यादव की अगुवाई में गुरुवार को कलेक्ट्रेट परिसर में प्रदर्शन करेगी। इसके बाद जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा जाएगा। यह जानकारी सपा जिलाध्यक्ष रामहर्ष यादव ने दी। उन्होंने बताया कि पिछली सरकारों में किसानों को उर्वरक की कालाबाजारी की किल्लत नहीं झेलनी पड़ती थी। लेकिन अब सरकार और प्रशासन मूक दर्शक बना हुआ है।

विभिन्न स्थानों पर दो लोगों ने दी जान

खैरीघाट, बहराइच, अमृत विचार : जिले में थाना खैरीघाट अंतर्गत अलग-अलग स्थानों पर मंगलवार की रात एक महिला समेत दो लोगों ने फंदा लगाकर जान दे दी।

ग्राम पूसपुरवा निवासी लवकुश वर्मा (23) पुत्र फौजदार लोनिया ने घर के पास स्थित बाग में गमछे से फांसी लगाकर जान दे दी। पिता फौजदार ने बताया कि कल उनका बेटा ससुराल गया था। वहां से आने के बाद उसने फंदा लगाकर जान दे दी। उधर, ग्राम पंचायत पिपरिया के मजरा बदरका निवासिनी चंदा देवी पत्नी सुरेश कुमार ने घर के कुंडे में फांसी लगाकर जान दे दी। सुरेश कुमार ने थाने में तहरीर देते हुए बताया कि मंगलवार की देर शाम करीब 7 बजे उसकी पत्नी ने घर के बरामदे में छत में लगे कुंडे में रस्सी से फांसी लगाकर जान दे दी। वह काफी दिनों से बीमार थी। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

महिला व 3 बेटियों को नदी में फेंकने वाला गिरफ्तार

संवाददाता, बहराइच

अमृत विचार : भूमि विवाद में अपनी रखैल पत्नी और तीन बच्चियों को लखीमपुर खीरी की शारदा नदी में फेंकने वाले आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

एएसपी (ग्रामीण) दुर्गा शंकर ने बताया कि सीओ मिहींपुरवा हर्षिता तिवारी और थाना मोतीपुर पुलिस को वादिनी रमपता पत्नी राम कैलाश निवासी चौधरीगांव थाना मोतीपुर ने सूचना दी कि उसकी बेटी सुमन व नातिन नन्दिनी, अंशिका व लाडो को उसके दामाद अनिरुद्ध कुमार ने साथी के साथ जान से मारने के लिए कहीं गायब कर दिया। पुलिस ने मुखबिर से प्राप्त सूचना पर अभियुक्त अनिरुद्ध को गायघाट पुल के पास से गिरफ्तार किया। पूछताछ पर उसने बताया कि एक साथी के साथ बीती 14 अगस्त को पत्नी व बच्चियों को उसके मायके से बुलाकर कस्बा मिहींपुरवा से अपने साथ थाना खमहरिया जनपद खीरी ले जाकर शारदा नदी के पुल से सभी को नदी में फेंक दिया था। अभियुक्त की निशानदेही पर घटनास्थल के निकट शारदा नदी के किनारे झाड़ियों से सुमन व बच्चियों के कपड़े व एक बच्ची की छोटी जूती व बाइक बरामद हुई। विवेचना में यह तथ्य प्रकाश में आया कि अभियुक्त अनिरूद्ध ने साथियों के साथ 2018 में अपने भाई संतोष कुमार की हत्या कर दी थी। अनिरूद्ध व उसके साथियों के विरुद्ध न्यायालय में अभियोग विचाराधीन है। भाई की हत्या के पश्चात अनिरुद्ध उसकी विधवा पत्नी को धमकाकर अपने साथ रखता था जिससे अनिरुद्ध की दो बेटियां अंशिका व लाडो थीं। अपने भाई की संपत्ति पाने के लिए अनिरुद्ध ने इस वारदात को अंजाम दिया।

जयंती पर याद किये गये राजीव गांधी

संवाददाता, बहराइच

मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य को नेत्रदान का संकल्प-पत्र देते कांग्रेस पदाधिकारी।

अमृत विचार : भारतरत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की 81वीं जयंती जिला कांग्रेस कमेटी के तत्वावधान में सद्भावना दिवस के रूप में मनाई गई। इस दौरान कांग्रेसजनों ने जिला कार्यालय कांग्रेस भवन में जिलाध्यक्ष शिवेन्द्र प्रताप सिंह के नेतृत्व में राजीव गांधी के चित्र पर माल्यार्पण किया।

राजीव गांधी के व्यक्तित्व और वर्तमान चुनौतियों पर आधारित विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कांग्रेस पदाधिकारियों ने नेत्रदान हेतु संकल्प पत्र भरकर मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. संजय खत्री को सौंपा। संकल्प पत्र भरने वालों में जिलाध्यक्ष शिवेंद्र प्रताप सिंह, जिला उपाध्यक्ष विनय सिंह, कौशल पाण्डेय, इस्लाम अली, इन्द्र कुमार यादव, राम नरेश यादव, हमजा शफीक, पप्पू सलमान, शहनवाज खान, डाक्टर हलीम, सैयद फैसल, हामिद अली, प्रमोद सिंह, खुर्शीद आलम शामिल रहे।

गदामारकला में बनेगा पंचायत उत्सव भवन

बहराइच, अमृत विचार : डीएम अक्षय त्रिपाठी की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में जिला स्वच्छता समिति एवं पंचायत उत्सव भवन के चयन के सम्बन्ध में बैठक हुई। पंचायत उत्सव भवन के हेतु स्थल चयन पर चर्चा के दौरान विधानसभा क्षेत्र महसी के गदामारकला में निर्माण कराने का अनुमोदन प्रदान किया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में विवाह एवं अन्य मांगलिक कार्यक्रमों के आयोजन हेतु कोई स्थल उपलब्ध न होने के कारण ग्रामवासियों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

सरकारी भूमि पर कब्जे का प्रयास

संवाददाता, नवाबगंज, बहराइच

मंदिर की जमीन पर दबंग कर रहे कब्जा

बहराइच, अमृत विचार : महाभारतकालीन श्री हरदौली समय माता मंदिर (रमटेड़िया) की जमीनों पर दबंग कब्जा कर रहे हैं। दबंगों ने धीरे-धीरे मंदिर सहित आसपास सड़क किनारे की सरकारी जमीनों सहित तालाबों और प्राइमरी स्कूल, जूनियर हाईस्कूल की खाली सरकारी जमीनों पर पक्के मकानों का निर्माण कर कब्जा कर लिया है। अब सिर्फ मंदिर और उसके आसपास की कुछ जमीन ही बची है। सामाजिक कार्यकर्ता व ब्लाक अध्यक्ष सुभाष आर्मी व पंकज वर्मा ने जिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र देकर मंदिर की जमीन से कब्जा हटवाए जाने की मांग की है।

अमृत विचार : नवाबगंज क्षेत्र में सरकारी जमीनों पर कब्जे का सिलसिला थम नहीं रहा। अभी हाल में ही अवधूत गांव चौराहे स्थित सड़क के किनारे सरकारी जमीन व नाला में भूमाफिया द्वारा पक्की दीवार उठाकर कब्जा किया गया था। वहीं सोमवार की रात एक बाहरी अज्ञात प्रापर्टी डीलर द्वारा बसंतपुर कालिका में सरकारी भूमि में मिट्टी पटाई कर कब्जे का प्रयास किया जा रहा है। प्रधान तरन्नुम निशा ने बताया कि इसकी सूचना हल्का लेखपाल उपेंद्र यादव को मौखिक रूप से दी गयी थी परन्तु कोई कार्रवाई नहीं की गयी। भूमाफिया के विरुद्ध कार्रवाई के लिए एक आनलाइन प्रार्थना पत्र मुख्यमंत्री पोर्टल पर भेजा गया है। इस संबंध में नानपारा एसडीएम मोनालिसा जौहरी ने बताया कि अभी प्रार्थना पत्र उनके पास नहीं आया है। जब आयेगा तो जांच करवाकर कार्रवाई की जाएगी।

प्रदेश में जंगलराज कायम : पाल

- बसपा प्रदेश अध्यक्ष ने की कार्यकर्ताओं संग बैठक

संवाददाता, पयागपुर, बहराइच

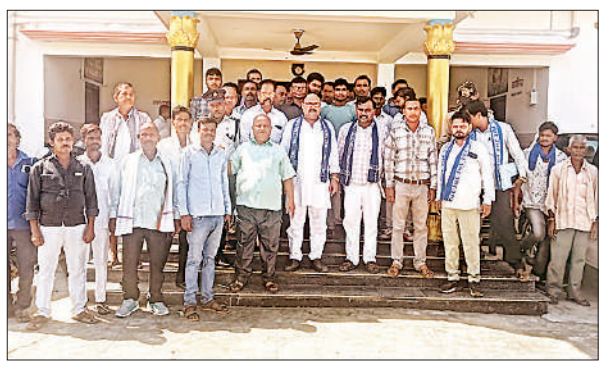

बैठक के बाद बसपा कार्यकर्ताओं के साथ प्रदेश अध्यक्ष विश्वनाथ पाल।

अमृत विचार : बहुजन समाज पार्टी के विधानसभा स्तरीय कार्यकर्ता बैठक में प्रदेश अध्यक्ष विश्वनाथ पाल ने कार्यकर्ताओं को मिशन 2027 फतह के मंत्र सिखाये।

बस स्टॉप स्थित अतिथि गृह में बुधवार को आयोजित बसपा कार्यकर्ता समीक्षा बैठक में बतौर मुख्य अतिथि बसपा प्रदेश अध्यक्ष विश्वनाथ पाल थे। अध्यक्षता मण्डल प्रभारी प्रदीप गौतम व संचालन जिलाध्यक्ष अजय गौतम ने किया। प्रदेश अध्यक्ष विश्वनाथ पाल ने कहा कि प्रदेश में जंगल राज है। बसपा नेता उमेश चंद तिवारी, सत्यनारायण बारी जिला महासचिव, अवधेश कुमार गौतम, बुद्ध प्रिय आदि ने सम्बोधित किया। इस अवसर पर विधानसभा प्रभारी राम धीरज गौतम,पंकज कुमार गौतम, रामसुहावन भास्कर, महासचिव कन्हैयालाल मौर्या, हरिश्चंद्र तिवारी, सीताराम चौहान, घनश्याम पांडे, गुड्डू रावत, पिंटू शिल्पकार, लल्लू राम गौतम, हनुमान गौतम, रामकुमार राव, मनीष पासवान सहित तमाम कार्यकर्ता मौजूद रहे।

प्रार्थना कर श्रद्धांजलि देती ब्रह्माकुमारी। ● अमृत विचार

ब्रह्मा कुमार हरीकृष्णा भाई को दी गयी श्रद्धांजलि

जरवलरोड, बहराइच, अमृत विचार : प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय केंद्र, जरवलरोड के तत्वावधान में ब्रह्मा कुमार हरीकृष्णा भाई के आकस्मिक निधन पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित भाई-बहनों ने पुष्पांजलि अर्पित कर दिवंगत आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना की। रगड़गंज से पधारीं ब्रह्माकुमारी सुनीता बड़ी दीदी ने हरीकृष्णा को उदार, मृदुभाषी और सरल व्यक्तित्व का धनी बताते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने रगड़गंज, गोण्डा आश्रम में रक्तदान कार्यक्रम की जानकारी दी। बताया कि विश्व बंधुत्व दिवस पर राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की पुण्य स्मृति में 23 अगस्तको ब्रह्माकुमारी सुख शांति अनुभूति भवन, रगड़गंज बेलसर, गोण्डा में रक्तदान शिविर आयोजित होगा।

संघर्ष का दूसरा नाम है सपा:डॉ. पटेल

- समाजवादी शिक्षक सभा की मंडलीय समीक्षा बैठक

संवाददाता, बहराइच

समाजवादी शिक्षक सभा की मंडलीय समीक्षा बैठक में मुख्य अतिथि व पदाधिकारी।

अमृत विचार : समाजवादी शिक्षक सभा की मंडलीय समीक्षा बैठक एवं मनोनयन पत्र वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि समाजवादी शिक्षक सभा के प्रदेश अध्यक्ष डा. एसपी सिंह पटेल तथा विशिष्ट अतिथि प्रदेश सचिव एवं देवीपाटन मंडल प्रभारी प्रो. मंशाराम वर्मा रहे। अध्यक्षता जिलाध्यक्ष रामहर्ष यादव ने की।

कार्यक्रम में जिलाध्यक्ष डॉ. जितेंद्र मौर्य, श्रावस्ती के जिलाध्यक्ष मनीष यादव, गोंडा के जिलाध्यक्ष विपिन वर्मा और बलरामपुर के जिलाध्यक्ष मोहिउद्दीन एवं पदाधिकारी सम्मिलित हुए। डॉ. एसपी सिंह पटेल ने कहा कि समाजवादी पार्टी चुनाव लड़ने वाली पार्टी नहीं है, बल्कि यह एक विचार और संघर्ष का दूसरा नाम है। विशिष्ट अतिथि प्रो. डॉ मंशाराम वर्मा, युवजन सभा के प्रदेश उपाध्यक्ष शैलेश सिंह शैलू, जिलाध्यक्ष शिक्षक सभा डॉ. जितेंद्र मौर्य, डॉ. संजय श्रीवास्तव, जितेन्द्र चौधरी, डा.बैजनाथ श्रीवास्तव, डॉ. शैलेश, संदीप यादव, मिथिलेश यादव, सुनील आदि थे।

छह निरीक्षकों के तबादले तत्काल चार्ज लेने के निर्देश

संवाददाता, बलरामपुर

अमृत विचार : जिले में पुलिस व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए चार निरीक्षकों का तबादला किया गया है जबकि दो निरीक्षकों का तबादला गैर जनपद में हो गया है। पुलिस अधीक्षक विकास कुमार की ओर से मंगलवार को जारी आदेश में निरीक्षकों को तत्काल प्रभाव से नई तैनाती दी गई है। यह तबादला आदेश जिला पुलिस स्थापना बोर्ड की बैठक में लिए गए निर्णय के आधार पर किया गया है।

जारी सूची के अनुसार बृजानन्द सिंह को कोतवाली देहात से स्थानांतरित कर अपराध शाखा एवं मॉनिटरिंग सेल का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। गिरिजेश कुमार तिवारी को प्रभारी डीसीआरबी से प्रभारी कोतवाली देहात बनाया गया है। राजकुमार सिंह को प्रभारी अपराध शाखा से स्थानांतरित कर प्रभारी थाना तुलसीपुर की जिम्मेदारी दी गई है। वहीं राकेश पाल को प्रभारी मंदिर सुरक्षा थाना तुलसीपुर से हटाकर प्रभारी कोतवाली जरवा की जिम्मेदारी दी गई है। संजय कुमार दुबे एवं सुरेश कुमार पाण्डेय का तबादला गैर जनपद में हो गया है। एसपी ने निर्देश दिया है कि सभी स्थानांतरित निरीक्षक अपने-अपने नवनियुक्त पदों पर समय से कार्यभार ग्रहण करें।

राजस्व लक्ष्य में ढिलाई पर डीएम नाराज

संवाददाता, बलरामपुर

कर- करेतर की समीक्षा बैठक में मौजूद डीएम और अन्य अधिकारी। ● अमृत विचार

अमृत विचार : जिलाधिकारी पवन अग्रवाल की अध्यक्षता में मंगलवार को कर करेतर एवं राजस्व वसूली की समीक्षा बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में संपन्न हुई।

डीएम ने लक्ष्य के सापेक्ष कम राजस्व प्राप्ति पर वाणिज्य कर विभाग पर नाराजगी जताई और सभी विभागों को वार्षिक एवं मासिक लक्ष्य के अनुसार वसूली सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने परिवहन, खनन और आबकारी विभागों को सघन प्रवर्तन अभियान चलाकर राजस्व वृद्धि करने के आदेश दिए। बैठक में जिलाधिकारी ने राजस्व वादों के निस्तारण की भी समीक्षा की। उन्होंने तहसीलवार लंबित वादों को विशेष अभियान चलाकर प्राथमिकता के आधार पर निपटाने के निर्देश दिए। साथ ही अधिकारियों को आय, जाति एवं निवास प्रमाणपत्र निर्धारित समयावधि में जारी करने को सख्ती से कहा। इस मौके पर एडीएम (वित्त एवं राजस्व), सभी एसडीएम, तहसीलदार, जिला आबकारी अधिकारी सहित संबंधित विभागों के अधिकारी-कर्मचारी मौजूद रहे।

छात्रवृत्ति सत्यापन समय पर पूरा करें संस्थान : कलेक्ट्रेट सभागार में बुधवार को जिलाधिकारी पवन अग्रवाल की अध्यक्षता में जिला स्तरीय छात्रवृत्ति अनुश्रवण समिति की बैठक हुई। बैठक में डीएम ने सभी शिक्षण संस्थानों को निर्देश दिया कि अधिक से अधिक छात्र-छात्राओं के आवेदन पूर्ण कराए जाएं और निर्धारित समय सारणी के अनुसार उनका सत्यापन एवं अग्रसारण सुनिश्चित किया जाए।

फर्जी दस्तावेज से चार बीघा जमीन हड़पी, पांच गिरफ्तार

बलरामपुर, अमृत विचार : उतरौला पुलिस ने फर्जी मतदाता पहचान पत्र बनाकर असली मालिक की जगह दूसरे व्यक्ति को खड़ा कर चार बीघा जमीन का दानपात्र कराने वाले गैंग का भंडाफोड़ किया है। पुलिस ने अधिवक्ता समेत पांच लोगों को गिरफ्तार किया है।

देवरिया मैनहा निवासी हीरालाल मिश्रा ने तहरीर दी थी कि उनके चाचा अयोध्या प्रसाद बीस साल पहले परदेश चले गए और वापस नहीं लौटे। उनकी जमीन विरासत में वादी को मिलनी थी। गांव के ही अधिवक्ता सुनील कुमार मिश्रा ने साथियों के साथ मिलकर फर्जी पहचान पत्र तैयार कराया और नानक शरण को अयोध्या प्रसाद बनाकर रजिस्ट्री ऑफिस में खड़ा कर दिया। इसके बाद चार बीघा जमीन का दानपात्र सुनील मिश्रा की पत्नी रीता मिश्रा के नाम करा लिया गया। विवेचना में सामने आया कि नानक शरण को इस काम के लिए 30 हजार रुपये दिए गए थे। साजिश में सुनील मिश्रा की भाभी सीमा मिश्रा और बहन उर्मिला मिश्रा भी गवाह बनीं। एसपी विकास कुमार के निर्देश पर एएसपी विशाल पांडेय, सीओ राघवेंद्र सिंह व प्रभारी निरीक्षक अवधेश राज सिंह के नेतृत्व में पुलिस ने बुधवार को आरोपियों को दबोचा।

गिरफ्तार आरोपित : सुनील कुमार मिश्रा, रीता मिश्रा, उर्मिला मिश्रा, सीमा और नानक शरण सिंह।

किया याद

कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने मनायी भारत रत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की जयंती

राजीव गांधी ने देश को विकास की राह पर आगे बढ़ाया

संवाददाता, बलरामपुर

अमृत विचार : भारत रत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की जयंती कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने मनाई। जिला मुख्यालय स्थित कांग्रेस कैंप कार्यालय पर आयोजित कार्यक्रम में उनके चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

जिला कांग्रेस अध्यक्ष शिवलाल कोरी ने कहा कि राजीव गांधी का योगदान भारतीय लोकतंत्र और आधुनिक भारत के निर्माण में अविस्मरणीय है। उन्होंने 18 वर्ष की आयु पूरी कर चुके युवाओं को मताधिकार देकर लोकतांत्रिक व्यवस्था को सशक्त किया और सूचना प्रौद्योगिकी के जरिए देश को नई दिशा दी। पूर्व जिला अध्यक्ष अनुज सिंह ने कहा कि विपरीत परिस्थितियों में भी राजीव गांधी ने अल्प समय में देश को विकास की राह पर आगे बढ़ाने का काम किया। वहीं महासचिव घनश्याम मिश्र ने बताया कि उनकी जयंती को सद्भावना दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम के बाद कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने मेमोरियल चिकित्सालय समेत विभिन्न स्थानों पर मरीजों को फल वितरित किए। इस मौके पर वरिष्ठ कांग्रेस नेता राजेंद्र प्रसाद द्विवेदी, अवधेश पाल सिंह, उमाशंकर तिवारी, देवेंद्र पांडे, राजेश कुलदीप, बंठे सिंह, पूर्व प्रधान नंदलाल वर्मा, प्रधान लंबरदार गुरबचन, पृथ्वी गुजराती, मोहम्मद जमील, विनय मिश्रा, लाल साहब श्रीवास्तव व मीडिया प्रभारी बृजेश चौहान सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

जयंती पर राजीव गांधी के चित्र पर पुष्प अर्पित करते कांग्रेस कार्यकर्ता। ● अमृत विचार

शिक्षकों ने डीआईओएस को सौंपा ज्ञापन

संवाददाता, बलरामपुर

जिला विद्यालय निरीक्षक को मांग पत्र सौंपते माध्यमिक शिक्षक संघ के पदाधिकारी।

अमृत विचार : जिले के शिक्षकों की समस्याओं को लेकर उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ ने जिला विद्यालय निरीक्षक को सात सूत्री मांगपत्र सौंपा है। संगठन ने चेतावनी दी है कि यदि 25 अगस्त तक समस्याओं का निस्तारण नहीं हुआ तो धरना-प्रदर्शन के साथ आंदोलन को बाध्य होना पड़ेगा।

जिला अध्यक्ष अशोक कुमार पांडेय और जिला मंत्री मोहम्मद मारूफ के नेतृत्व में सौंपे गए ज्ञापन में कहा गया है कि जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय में नियमानुसार नागरिक अधिकार पत्र (सिटीजन चार्टर) लागू किया जाए। नई अंशदायी पेंशन योजना (एनपीएस) से जुड़े शिक्षकों एवं कर्मचारियों का बकाया राज्य अंश तत्काल उनके खातों में जमा कराया जाए। नई पेंशन योजना से पुरानी पेंशन योजना में आए शिक्षकों और कर्मचारियों के भविष्य निधि खातों में उनका जमा अंश पूर्ण रूप से स्थानांतरित किया जाए। ज्ञापन सौंपते समय कई वरिष्ठ शिक्षक नेता सहित कई शिक्षक मौजूद रहे।

न्यूज ब्रीफ

अभियोजन कार्यों की हुई गोष्टी

सिद्धार्थनगर, अमृत विचार : डीएम व एसपी ने कलेक्ट्रेट सभागार कक्ष मे अभियोजन कार्यों के संबंध में हुई गोष्ठी। डीएम डॉ. राजा गणपति आर व एसपी डॉ. अभिषेक महाजन द्वारा कलेक्ट्रेट सभागार कक्ष मे अभियोजन के कार्यों के संबंध मे गोष्ठी कर जनपद मे पॉक्सो एक्ट के अन्तर्गत पंजीकृत अभियोगों तथा टॉप-10 अपराधियों को सजा दिलाने व न्यायालय मे लम्बित वादो के निस्तारण के संबंध मे गोष्ठी कर संबंधित को दिशा निर्देश दिया गया।

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की मनी जयंती

सिद्धार्थनगर, अमृत विचार : हर्षोल्लास के साथ पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की जयंती आज जिला कांग्रेस कार्यालय पर मनाई गई । जिसमें वक्ताओं ने पूर्व प्रधानमंत्री के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला उपाध्यक्ष अनिल सिंह अन्नू ने और संचालन सुदामा प्रसाद ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत में स्वर्गीय राजीव गांधी के चित्र पर माल्यार्पण कर एवं पुष्प अर्पण करते हुए स्वर्गीय श्री गांधी के पद चिन्हों पर चलने का कांग्रेस जनों ने संकल्प लिया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से, सुदामा प्रसाद ,शौकत अली, रियाजुद्दीन, जुबेर अहमद ,आशीष मिश्रा, राजेश सिंह , अकरम अली सिद्दीकी,शौकत अली, गुल मोहम्मद, संतोष चौधरी,कमलेश, रामचंद्र मिश्र आदि कांग्रेस जनों की उपस्थिति रही ।

जहरीली दवा से किसान की मौत

सिद्धार्थनगर,अमृत विचार : कपिलवस्तु विधानसभा क्षेत्र के भटौली गांव में धान के खेत में खरपतवार नाशक छिड़कते समय 55 वर्षीय किसान गोले की मौत हो गई। छिड़काव के दौरान तबीयत बिगड़ने पर वे घर लौटते समय रास्ते में गिर पड़े। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बर्डपुर में डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। परिजनों के अनुसार, दवा के प्रभाव से उनके शरीर में जलन और मुंह से झाग निकलने लगा था। गोले के दो बेटे मुंबई में मजदूरी करते हैं। 19 अगस्त को उनका अंतिम संस्कार हुआ। अब परिवार के सामने रोजी-रोटी का संकट है। सरकार से आर्थिक सहायता की मांग की जा रही है।

भारतीय ज्ञान परंपरा की वैश्विक दृष्टि : प्रो. तोमर

गोरखपुर, अमृत विचार : भारतीय संस्कृति और सभ्यता ने सदियों से विज्ञान, गणित, खगोल, चिकित्सा, आयुर्वेद, योग और दर्शन जैसे अनेक क्षेत्रों में अद्वितीय योगदान दिया है। भारतीय मनीषियों ने अपने गहन चिंतन और अनुसंधान से न केवल अपने देश में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी विज्ञान और ज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान हासिल किया। ऋग्वेद, आयुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद चारों वेदों में प्राकृतिक विज्ञान, चिकित्सा और गणित के सिद्धांतों का वर्णन मिलता है। उपनिषद जो वेदों के ही हिस्से हैं, भारतीय दर्शन का केंद्र बिंदु माने जाते हैं। सदियों से भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व को जीवन का समग्र दृष्टिकोण दिखा रही है। उक्त बातें बुधवार को महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर में आयोजित 'राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज स्मृति सप्तदिवसीय व्याख्यानमाला' के उद्घाटन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि प्रो. गिरीन्द्र सिंह तोमर सदस्य, आयुष-एनटीईपी कोलैबोरेशन तकनीकी समूह, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने अपने संबोधन में कही।

समय से पूरा करें किसानों की मांग : डीएम

किसान दिवस की बैठक में जिलाधिकारी ने सुनीं किसानों की समस्या, दिए निर्देश

संवाददाता,सिद्धार्थनगर

किसान दिवस की बैठक के दौरान बोलते जिलाधिकारी राजा गणपति आर.।

अमृत विचार : जिलाधिकारी डॉ. राजा गणपति आर. की अध्यक्षता में अम्बेडकर सभागार में किसान दिवस का आयोजन किया गया। बैठक में सर्वप्रथम उपकृषि निदेशक द्वारा पिछली बैठक की कार्यवृत्त को पढ़ा गया, जिसमें अधिकांश शिकायतों का निस्तारण करा दिया गया है। जिलाधिकारी ने किसान दिवस में उपस्थित किसानों की समस्याओं को सुना गया। जिलाधिकारी ने किसानों से कहा कि आप लोगों की जो भी शिकायतें है उसे लिखित में दें जिससे समस्याओं का निस्तारण कराया जा सके। जिलाधिकारी डॉ. राजा गणपति आर. ने निर्देश दिया कि किसानों द्वारा की जा रही मांग को समय से पूर्ण कराये। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के लाभार्थियों के खाते में क्षतिपूर्ति की धनराशि प्रेषित कराने का निर्देश दिया गया। सभी अधिकारीगण किसानों की समस्याओं का शत प्रतिशत निस्तारण करायें। जिलाधिकारी डॉ. राजा गणपति आर. ने संबंधित को निर्देश दिया कि प्राप्त शिकायतों को संबंधित अधिकारियों को प्रेषित करके उनकी शिकायतों का समयबद्ध निस्तारण कराये। केंद्र और राज्य सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं का लाभ सभी पात्र लाभार्थियों को मिलना चाहिए। जिलाधिकारी ने उप कृषि निदेशक को निर्देश दिया कि किसान दिवस में सभी अधिकारी उपस्थित रहना चाहिए। उप कृषि निदेशक द्वारा बैठक में आए हुए समस्त अधिकारीगण व सम्मानित कृषको को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

डीएम ने किया रखबा का निरीक्षण

सिद्धार्थनगर , अमृत विचार : डीएम डॉ. राजा गणपति आर . द्वारा सहायक महानिरीक्षक निबन्धन ज्ञानेन्द्र कुमार सिंह के साथ बड़े बैनामा लेखपत्र संख्या- 4876/28 .07 .2025 वी कोड- 1524 ग्राम की श्रेणी विकासशील ग्राम बेलगड़ी तप्पा असनार तहसील बांसी विक्रय मूल्य- 88,00,000 गाटा सं0 176 रकबा 0 .4090 हे0 में से विकीत रकबा 0 .201 है . का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान डीएम द्वारा बड़े बैनामा के लेखपत्र का साथ स्थलीय निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान लेखपत्र ठीक पाया गया।

दिव्यांगजन समिति की बैठक सम्पन्न

सिद्धार्थनगर में डीएम डॉ. राजा गणपति आर . की अध्यक्षता में दिव्यांगजन समिति की बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई। डीएम ने दिव्यांगों को रोजगार से जोड़ने हेतु लोहिया कला भवन में रोजगार मेला आयोजित करने का निर्देश दिया। जिन दिव्यांगों का आधार कार्ड नहीं बना है, उन्हें जल्द बनवाने को कहा गया। 31 अगस्त को सभी तहसीलों में कैंप लगाकर उनकी समस्याओं के समाधान के निर्देश दिए गए। बैठक में ट्रेनी आईपीएस विश्वजीत सौरयान, विभिन्न विभागों के अधिकारी और दिव्यांगजन उपस्थित रहे। सक्षम फाउंडेशन की प्रगति की समीक्षा भी की गई।

रेल कर्मियों ने ली एकता व अहिंसा की शपथ

सद्भावना दिवस की शपथ दिलाते हुए तारिक अहमद। अमृत विचार

गोरखपुर, अमृत विचार: पूर्वोत्तर रेलवे के महा निरीक्षक-सह-प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त रेलवे सुरक्षा बल तारिक अहमद ने सद्भावना दिवस के अवसर पर बुधवार को महाप्रबंधक कार्यालय परिसर गोरखपुर में आयोजित एक समारोह में रेल अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सद्भावना दिवस की शपथ दिलायी।

उन्होंने अधिकारियों एवं रेलकर्मचारियों को जाति, सम्प्रदाय, क्षेत्र, धर्म अथवा भाषा का भेदभाव किये बिना हम सभी भारतवासी भावनात्मक एकता और सद्भाव के लिये कार्य करने की शपथ दिलाई। रेल अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हिंसा का सहारा लिये बिना सभी प्रकार के मतभेद बातचीत और संवैधानिक माध्यमों से सुलझाने की शपथ ली।इस अवसर पर सामान्य प्रशासन, सतर्कता, जनसम्पर्क, सुरक्षा, सांख्यिकी तथा कार्यकुशलता विभाग के वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। उक्त जानकारी मुख्य जनसंपर्क अधिकारी पंकज कुमार सिंह ने दी।

समस्याओं का त्वरित निराकरण करें

गोरखपुर,अमृत विचार : जिलाधिकारी कार्यालय में फरियादियों की समस्याओं का त्वरित निस्तारण किया जा रहा है साथ ही जिलाधिकारी द्वारा संबंधित अधिकारियों को भी यह निर्देश दिया है कि पीड़ितों के समस्याओं का त्वरित निस्तारण करें। डीएम कार्यालय में जिलाधिकारी के पास आए हुए प्रार्थना पत्रों को संबंधित विभागों के प्रभारी के पास भेजा जा रहा जिससे विभागों के अधिकारी अपने दायित्वों का बखूबी निर्वहन करते हुए भेजे गए प्रार्थना पत्र का बिना किसी भेदभाव के निराकरण करें किसी भी फरियादी को बार-बार हमारे कार्यालय या अन्य किसी कार्यालय में अपनी समस्याओं को लेकर नहीं पहुंचना चाहिए अगर संबंधित प्रार्थना पत्रों का समय वध तरीके से गुणवत्ता युक्त निस्तारण हो जाएगा तो कोई भी फरियादी किसी भी अधिकारी के कार्यालय में बार-बार चक्कर नहीं लगाएगा भेजे गए प्रार्थना पत्रों का बिना किसी भेदभाव का निराकरण किया जाए, जिससे फरियादियों को न्याय संगत न्याय मिल सके।

मांगों के लिए शिक्षकों ने दिया धरना

कुशीनगर, अमृत विचार : यूपी माध्यमिक शिक्षक संघ शर्मा गुट से जुड़े शिक्षकों ने बुधवार को भारी संख्या में जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय के समक्ष जिलाध्यक्ष अनिल कुमार दूबे की अध्यक्षता में धरना दिया। धरने का संचालन जिलामंत्री गोविंद प्रसाद वर्मा ने किया। धरने के पश्चात मुख्यमंत्री को संबोधित 31 सूत्रीय मांगों का ज्ञापन जिला विद्यालय निरीक्षक के प्रतिनिधि प्रधानाचार्य विजय राय को सौंपा गया। धरने को संबोधित करते हुए जिला संरक्षक एवं एमएलसी प्रतिनिधि ओमप्रकाश सिंह ने कहा कि शिक्षकों को जो भी उपलब्धियां मिली हैं वह ओमप्रकाश शर्मा के नेतृत्व में संघर्षों की बदौलत ही मिली हैं। जिलाध्यक्ष दूबे ने कहा कि पुरानी पेंशन कोई भीख नहीं शिक्षकों कर्मचारियों का अधिकार है।

भवन जांच के बाद ध्वस्तीकरण कराएं : डीएम

संवाददाता, कुशीनगर

अमृत विचार : जिलाधिकारी महेंद्र सिंह तंवर की अध्यक्षता में सभी विभागों के अधिकारियों के साथ जर्जर/मरम्मत योग्य भवनों के संबंध में एक आवश्यक बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में संपन्न हुआ। डीएम ने सभी विभागों से एक - एक कर जानकारी लेते हुए निर्देशित किया कि तकनीकी टीम द्वारा जांच करते हुए जो भवन जर्जर हैं उनके ध्वस्तीकरण की कार्यवाही कराना सुनिश्चित करें तथा जो मरम्मत के योग्य भवन हैं उसका स्टीमेट तैयार कराकर शासन को बजट मांग हेतु प्रेषित करें। समीक्षा दौरान ग्राम विकास विभाग के भवनों के संबंध में जिला विकास अधिकारी द्वारा 14 विकास खंडों में स्थित भवनों 87 भवनों का विवरण प्रस्तुत किया गया जिसके अंतर्गत टाइप 2 एवं टाइप 3 के आवास,एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के आवास सम्मिलित हैं। जिला कार्यक्रम अधिकारी द्वारा 135 भवनों के जर्जर होने, पंचायतीराज विभाग द्वारा कुल 120 भवनों की सूची दी गई जिसके अंतर्गत 43 भवनों को ध्वस्तीकरण की प्रक्रिया में होने की जानकारी दी गई। इसी क्रम में पीडब्ल्यूडी, अल्पसंख्यक कल्याण विभाग, प्रवेशन विभाग, लघु सिंचाई, पशु पालन विभाग, होमियोपैथी चिकित्सा विभाग, कृषि, रेशम, सहित शिक्षा विभाग के अधिकारियों द्वारा अलग अलग जर्जर एवं मरम्मत योग्य भवनों की जानकारी दी गई। डीएम ने दिवाली को लेकर सभी विभागों को साफ सफाई सहित पेंटिंग कराने संबंधी निर्देश देते हुए कहा कि जनपद मुख्यालय के सभी विभागों के पेंटिंग का कलर अलग अलग है जिसे एक कलर में होना चाहिए, इस संबंध में मुख्य विकास अधिकारी को कलर का चुनाव कर लेने तथा तकनीकी टीम का गठन किए जाने हेतु निर्देशित किया।

डीएम ने पैडलेगंज गुरुद्वारे के सुरक्षा व्यवस्था का लिया जायजा

गोरखपुर, अमृत विचार : पैडलेगंज गुरुद्वारा 24 अगस्त को मुख्यमंत्री के संभावित लोकार्पण कार्यक्रम को देखते हुए जिलाधिकारी दीपक मीणा एडीएम सिटी अंजनी कुमार सिंह सिटी मजिस्ट्रेट उत्कर्ष श्रीवास्तव के साथ गुरुद्वारा कमेटी के अध्यक्ष एवं अन्य सदस्यों के साथ पैडलेगंज गुरुद्वारा का सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। बताते चले कि उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से जारी धार्मिक स्थानों के सुंदरीकरण योजना के क्रम में मुख्यमंत्री के सहयोग से महानगर के गुरुद्वारा पैडलेगंज का दो करोड़ों चौतीस लाख उन्हतर हजार के लागत से सुंदरीकरण का कार्य पूर्ण हो गया है। इसका लोकार्पण 24 अगस्त को श्रीगुरु ग्रंथ साहिब के प्रकाशपर्व के दिन मुख्यमंत्री के हाथों से गुरुद्वारा साहिब के नवीन भवन का लोकार्पण किया जाएगा।

कार्यालय, अयोध्या विकास प्राधिकरण, अयोध्या

पत्रांक 28/अयो0वि0प्रा0/2025-26 दिनांक 20.8.2025

निविदा आमंत्रण सूचना

क्र0 सं0	कार्य का नाम	आगणन धनराशि (GST अतिरिक्त)	धरोहर धनराशि	निविदा मूल्य जी एस.टी सहित	निविदा जमा करने की प्रारंभ तिथि	निविदा जमा करने की अंतिम तिथि
1	अयोध्या में 1. सूर्यकुण्ड (आर0ओ0बी0-105). 2. दर्शन-नगर (आर0ओ0बी0-107) एवं 3. उदया चौराहा (आर0ओ0बी0- 112) फ्लाईओवर के नीचे रिक्त स्थान में व्यापक सुविधा प्रबंधन सेवाएं प्रदान करने हेत	3,00,000/-	6,000/-	1,180/-	21.08.2025	28.08.2025

1. विस्तृत जानकारी E-tender Portal https://etender.up.nic.in/nicgep/app की वेबसाइट से पर प्राप्त की जा सकती है।
2. निविदा डालने से पूर्व टेण्डर फीस च अर्नेस्टमनी https://emdada.ayodhyada.in/login Withotp वेबसाइट के माध्यम से ऑनलाइन जगा किया जाना ही मान्य होगा।

सचिव
अयोध्या विकास प्रधिकरण
अयोध्या

दो नाबालिग लड़कों को चाइल्ड लाइन गोरखपुर को सौंपा

गोरखपुर, अमृत विचार: रेलवे सुरक्षा बल, पूर्वोत्तर रेलवे द्वारा, रेल सम्पत्ति की सुरक्षा, अवैध सामानों की धर-पकड़, यात्रियों को सुरक्षा प्रदान करने के साथ ही बचपन बचाओ अभियान के तहत मानव तस्करी की रोकथाम का निरंतर प्रयास किया जाता है। इसी क्रम में 19 अगस्त को रेलवे सुरक्षा बल पोस्ट गोरखपुर को निगरानी के दौरान स्टेशन के प्लेटफार्म सं0 2 पर 15 वर्ष व 13 वर्ष के दो नाबालिग लड़के लावारिस हालत में मिले, जिन्हें गोरखपुर पोस्ट पर लाया गया। पूछताछ के उपरान्त उक्त दोनों नाबालिग लड़कों को चाइल्ड लाइन गोरखपुर को सौंप दिया गया। 19 अगस्त को रेलवे सुरक्षा बल एवं राजकीय रेलवे पुलिस/छपरा के सयुक्त निगरानी के दौरान रेलवे स्टेशन, छपरा के प्लेटफार्म सं0 01 के पश्चिमी छोर से यात्रियों से चोरी किये हुए मोबाइल के साथ एक शातिर अपराधी को गिरफ्तार किया गया। रेलवे सुरक्षा बल पोस्ट मऊ द्वारा निगरानी के दौरान रेलवे स्टेशन, मऊ यार्ड से रेल सम्पत्ति चोरी के मामले में एक शातिर अपराधी को गिरफ्तार किया गया।

बेंगलूरू से गोमतीनगर तक विशेष ट्रेन सेवा बढ़ी

गोरखपुर, अमृत विचार: रेलवे प्रशासन द्वारा यात्रियों की सुविधा के लिए पूर्व से चलायी जा रही 06529/06530 सर एम. विश्वेश्वरैया टर्मिनल बेंगलूरू-गोमतीनगर-सर एम. विश्वेश्वरैया टर्मिनल बेंगलूरू साप्ताहिक विशेष गाड़ी का संचलन सर एम. विश्वेश्वरैया टर्मिनल बेंगलूरू से 3 नवम्बर तक तथा गोमतीनगर से 7 नवम्बर तक निम्नवत बढ़ाया जा रहा है। 06529 सर एम. विश्वेश्वरैया टर्मिनल बेंगलूरू-गोमतीनगर साप्ताहिक विशेष गाड़ी 03 नवम्बर, 2025 तक प्रत्येक सोमवार को सर एम. विश्वेश्वरैया टर्मिनल बेंगलूरू से 19.00 बजे प्रस्थान कर तुमकूर से 20.20 बजे, अरसीकेरे से 22.30 बजे, कडूरू से 22.55 बजे, दूसरे दिन दावणगेरे से 00.25 बजे, हावेरि से 1.40 बजे, हुब्बल्लि जं. से 4.05 बजे, धारवाड़ से 4.30 बजे, बेलगावि से 6.45 बजे, घटप्रभा से 7.37 बजे, मिरज से 10.00 बजे, सांगली से 10.15 बजे, करड से 11.15 बजे, सतारा से 13 बजे, पुणे से 17.10 बजे, दौंड कॉर्ड लाइन से 18.25 बजे, तीसरे दिन मनमाड जं. से 01.15 बजे, वाराणसी से 1.40 बजे, औंड़िहार से 02.15 बजे, भटनी से 04.42 बजे, देवरिया सदर से 05.10 बजे गोरखपुर से 06.50 बजे, बस्ती से 08.30 बजे तथा गोण्डा से 09.30 बजे छूटकर गोमतीनगर 11.30 बजे पहुँचेगी।

जयनगर-नई दिल्ली एक्सप्रेस का दो मिनट का ठहराव

गोरखपुर, अमृत विचार: रेलवे प्रशासन द्वारा यात्रियों की सुविधा हेतु 12561/12562 जयनगर-नई दिल्ली-जयनगर एक्सप्रेस का प्रायोगिक आधार पर दो मिनट का ठहराव पूर्व मध्य रेलवे के समस्तीपुर मंडल के लहेरियासराय स्टेशन पर निम्नवत प्रदान किया गया है। जयनगर से 25 अगस्त,2025 से चलने वाली 12561 जयनगर-नई दिल्ली एक्सप्रेस, लहेरियासराय स्टेशन 19.16 बजे पहुंचकर 19.18 बजे छूटेगी तथा नई दिल्ली से 24 अगस्त,2025 से चलने वाली 12562 नई दिल्ली-जयनगर एक्सप्रेस लहेरियासराय स्टेशन 17.36 बजे पहुंचकर 17.38 बजे छूटेगी।

सपा का महंगाई व भ्रष्टाचार के खिलाफ प्रदर्शन

संवाददाता,सिद्धार्थनगर

प्रदर्शन के दौरान नेता प्रतिपक्ष एवं पूर्व विधानसभा अध्यक्ष माता प्रसाद पाण्डेय व अन्य कार्यकर्ता।

महंगाई और भ्रष्टाचार को लेकर प्रदर्शन करते सपा कार्यकर्ता।

अमृत विचार: मुख्यालय में महंगाई, बिजली दर वृद्धि, खाद की किल्लत और बढ़ते अपराध के खिलाफ समाजवादी पार्टी ने बुधवार को जोरदार प्रदर्शन किया।

नेता प्रतिपक्ष एवं पूर्व विधानसभा अध्यक्ष माता प्रसाद पाण्डेय के नेतृत्व में लगभग दो हजार कार्यकर्ताओं जिला मुख्यालय पर जुटे और राज्यपाल को सम्बोधित 12 सूत्रीय ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपा। प्रदर्शन के दौरान राज्य महिला आयोग की पूर्व सदस्य इन्द्रासना त्रिपाठी भीड़ में धक्का को लेकर भड़क गई। इन्द्रासना लोगों फटकार लगाने लगी। इसके बाद नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पाण्डेय के समझाने पर बवाल खत्म हुआ। सपा नेताओं ने कहा कि भाजपा सरकार जनता को राहत देने के बजाय महंगाई और भ्रष्टाचार बढ़ाने में लगी है। ज्ञापन में कहा गया कि जिले में किसान खाद के लिए परेशान हैं, घन्टों लाइन में लगने के बाद भी खाली हाथ लौटना पड़ रहा है। खाद वितरण में भारी भ्रष्टाचार का आरोप लगाया गया। नेताओं ने प्रदेश में बढ़ती डकैती, लूट और बलात्कार की घटनाओं पर चिन्ता जाहिर की और कहा कि अपराधियों के बढ़े हौसलों से आम जनता डरी हुई है। बिजली दरों में हुई बढ़ोतरी को जनविरोधी बताते हुए तत्काल वापस लेने की मांग की गई। तहसीलों में वरासत कार्य में अवैध वसूली, जल जीवन मिशन में सड़क खुदाई के बाद मरम्मत न होने, बीज वितरण में घोटाले और पुलिस थानों में फर्जी मुकदमों के जरिये धन उगाही जैसे मुद्दे उठाये गयें। नेताओं ने चेतावनी दी कि अगर सरकार ने जल्द कदम नहीं उठाए तो सपा सड़क से सदन तक आन्दोलन करेगी। प्रदर्शन शान्तिपूर्वक रहा। वहीं अन्त में अपर जिलाधिकारी गौरव श्रीवास्तव को ज्ञापन सौंपकर नारेबाजी के साथ प्रदर्शन समाप्त किया गया। इस दौरान समाजवादी पार्टी के समस्त जिले के लगभग सभी पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहें।

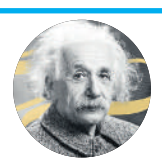

समय सापेक्ष है। इसका मूल्य केवल इस बात पर निर्भर करता है कि हम इस गुजरते समय में क्या करते हैं।

–अल्बर्ट आइंस्टीन, वैज्ञानिक

अमन के प्रयासों पर आंच

बरेली में आला हजरत के कुल शरीफ की रस्म पूरी होने के साथ उनकी याद में आयोजित 107वें उर्स का समापन हो गया। चूंकि यहां देश-विदेश से लाखों जायरीन जुटते हैं, इसलिए यह अवसर न केवल शहर बरेली बल्कि पूरे प्रदेश के लिए भी महत्वपूर्ण होता है। शासन और पुलिस-प्रशासन ने इसे सुखद एवं सफल बनाने के लिए भरपूर प्रयास किए और वे कारगर भी साबित हुए। कमी केवल उस घटना के कारण दिखी, जिसमें चादर जुलूस को लेकर हंगामा हुआ। उस एक घटना ने पुलिस-प्रशासन की बेहतरीन व्यवस्थाओं पर छोटा-सा धब्बा अवश्य लगा दिया। इससे संबंधित समाचारों ने देश भर में यह छवि निर्मित कर दी कि सब कुछ होने के बावजूद स्थिति प्रशासन के नियंत्रण में नहीं थी। दावा है कि इस उर्स में आठ लाख जायरीन ने शिरकत की। इतने विशाल आयोजन के लिए प्रशासन ने शहर की यातायात व्यवस्था नए सिरे से नियंत्रित की, सुरक्षा चाक-चौबंद रखी, आगंतुकों की सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा और स्कूलों में अवकाश घोषित किया। कुल मिलाकर, उसने इस उर्स के बेहतर इंतजाम में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। जहां तक विवाद का प्रश्न है- एक पक्ष ने दूसरे पर यह आरोप लगाते हुए हंगामा किया कि उर्स की चादर यात्रा एक नई परंपरा है और वे नई परंपरा के खिलाफ हैं, जबकि प्रशासन के पास इसके विपरीत स्पष्ट तथ्य मौजूद थे।

हकीकत यह है कि आला हजरत उर्स के दूसरे दिन इज्जतनगर के खजुरिया गांव से चादर का जुलूस वर्षों से दरगाह तक आता रहा है। इस जुलूस के कार्यक्रम को लेकर दोनों पक्षों के बीच लिखित समझौता और पूर्व सहमति भी थी। फिर यह हंगामा क्यों हुआ? संभव है कि बखेड़ा करने वाले पक्ष ने पुलिस से भिड़ने की कोशिश की हो और पुलिस को किंचित बल प्रयोग करना पड़ा हो, लेकिन इसे लाठीचार्ज बताकर बेवजह मामले को तूल दिया गया। इससे देश में यह संदेश गया कि उत्तर प्रदेश में अब भी व्यवस्था उतनी सुदृढ़ नहीं है और सामाजिक सहिष्णुता और समरसता की स्थिति कमजोर है। असल में दोनों पक्षों के जो कुछ लोग इस विवाद का कारण बने, वे मुट्ठीभर लोग हैं, जो किसी वर्ग का सशक्त प्रतिनिधित्व नहीं करते। यदि कोई वास्तविक प्रतिनिधित्व करता है तो वही वर्ग है, जिसने इस यात्रा की लिखित अनुमति पहले ही प्रदान कर दी थी। चंद लोगों ने अपनी अदूरदर्शी और अनुचित हरकतों से न केवल शासन-प्रशासन के अथक प्रयासों की चमकीली छवि को कलंकित किया, बल्कि शहर और प्रदेश की प्रतिष्ठा भी धूमिल की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की पूरे देश में इस बात के लिए सराहना होती है कि उन्होंने प्रदेश को कुशलतापूर्वक नियंत्रित कर रखा है, जहां अपराध, अशांति और दंगे-फसाद थमे हैं और विकास की गति तेज हुई है। सूबे में अमन-चैन कायम रहे इसके लिए वे निरंतर प्रयत्नशील हैं, लेकिन कुछ तत्व ऐसे हैं जो उनके इन प्रयासों में विघ्न डालने पर आमादा रहते हैं। इन तत्वों से सख्ती से निपटना समय की मांग है।

प्रसंगवश

जीवन की सांध्य बेला और जलवायु का जोखिम

जलवायु परिवर्तन अब केवल पर्यावरण की चुनौती नहीं रह गया है, बल्कि यह मानवीय स्वास्थ्य के लिए गंभीर संकट बन चुका है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनइपी) की हाल में जारी एक नई रिपोर्ट में बुजुर्गों पर मंडरा रहे जानलेवा संकट की चेतावनी दी गई है। रिपोर्ट के मुताबिक बुजुर्ग लोग खास तौर पर जलवायु परिवर्तन के कारण गंभीर स्वास्थ्य जोखिमों का सामना कर रहे हैं। यह रिपोर्ट पूरी दुनिया के बुजुर्गों पर जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों का खुलासा करती है।

अमरपाल सिंह वर्मा

स्वतंत्र पत्रकार

भारत जैसे देश में, जहां बुजुर्गों की जनसंख्या लगातार बढ़ रही है, वहां जलवायु परिवर्तन के स्वास्थ्य पर प्रभाव और भी अधिक चिंताजनक होते जा रहे हैं। बुजुर्ग न केवल शारीरिक रूप से कमजोर होते हैं, बल्कि उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी उम्र के साथ घटती जाती है। ऐसे में वे भीषण गर्मी और लू के थपेड़ों, शीत लहरी, वायु प्रदूषण और नई उभरती बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं।

जलवायु परिवर्तन के कारण गर्मी में इजाफा हो रहा है। यह बुजुर्गों के लिए प्रमुख स्वास्थ्य जोखिम है, क्योंकि लू और अत्यधिक तापमान के दौरान उनके शरीर की तापमान नियंत्रित करने की क्षमता कम हो जाती है। वर्ष 2022 की 'द लैंसेट काउंटडाउन रिपोर्ट' के अनुसार वर्ष 2000-2004 और 2017-2021 के दौरान जलवायु परिवर्तन से भारत में गर्मी से संबंधित मौतों में 55 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इनमें बुजुर्गों की संख्या अधिक है, क्योंकि उनकी शारीरिक क्षमता जलवायु बदलाव को झेलने में कम होती है।

पिछले कुछ वर्षों में उत्तरी राज्यों सहित भारत के कई हिस्सों में भीषण गर्मी और लू का प्रकोप बढ़ा है। गर्मियों में तापमान 45 से 50 डिग्री तक पहुंच जाता है। जलवायु परिवर्तन से वायु गुणवत्ता भी प्रभावित हो रही है। अस्थमा और दिल की बीमारी से जूझते बुजुर्गों के लिए यह परिस्थिति जानलेवा साबित हो जाती है, क्योंकि उनकी त्वचा और शरीर का तापमान संतुलन क्षमता कम हो चुकी होती है, जिससे लू लगने, डिहाइड्रेशन और हृदयाघात का खतरा बढ़ जाता है।

विशेषज्ञों का कहना है कि जलवायु परिवर्तन के कारण जहां गर्मी के दिन बढ़ते चले जा रहे हैं, वहीं सर्दियों में भी अत्यधिक ठंड पड़ने लगी है। शीत लहर के कारण बुजुर्गों को हाइपोथर्मियां, रक्तचाप में गिरावट तथा जोड़ों के दर्द जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। खासकर उत्तर भारत में दिसंबर-जनवरी की सर्दियां उनके लिए घातक साबित हो सकती हैं। जलवायु परिवर्तन के चलते मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया जैसे रोगों का प्रसार बढ़ा है। बुजुर्गों के लिए ये रोग अधिक घातक सिद्ध हो सकते हैं। मौसम जनित प्रभावों से उनमें तनाव, अकेलापन और अवसाद की स्थिति बनती है।

यूएनइपी की हाल में जारी रिपोर्ट में यह भी सामने आया है कि 1990 के दशक से अब तक 65 वर्ष या उससे अधिक उम्र के लोगों में तापलहर के कारण होने वाली मौतों में लगभग 85 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। रिपोर्ट के अनुसार ताप लहरें, बाढ़ और बर्फ के पिघलने जैसे जलवायु परिवर्तन के सबसे घातक प्रभावों में से एक हैं। रिपोर्ट के अनुसार बुजुर्ग लोग अकसर पुरानी बीमारियों, चलने-फिरने में कठिनाई या शारीरिक कमजोरी से जूझते हैं। वो भीषण गर्मी में जानलेवा खतरे का सामना करते हैं। ये खतरे तब और बढ़ जाते हैं, जब वो प्रदूषित, भीड़भाड़ वाले शहरों या तटीय इलाकों में रहते हैं, जहां बुजुर्गों की आबादी ज़्यादा है और समुद्र का स्तर लगातार बढ़ रहा है।

हमारे देश में पहले तो दिल्ली, पटना, लखनऊ, कानपुर, जयपुर, जोधपुर जैसे बड़े शहरों में वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यू) 'खतरनाक' श्रेणी में पहुंचता था, अब तो राजस्थान के श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ समेत विभिन्न छोटे शहर भी इस स्थिति में आने लगे हैं। जाहिर है, समस्या बढ़ती ही जा रही है। भारत में 60 वर्ष से अधिक आयु वाले लोगों की संख्या अब लगभग 14 करोड़ तक पहुंच चुकी है और यह संख्या 2050 तक दोगुनी होकर 34 करोड़ 60 लाख हो जाने का अनुमान है। एक ओर जहां बुजुर्गों की आबादी बढ़ रही है, वहीं जलवायु परिवर्तन का असर भी तेज हो रहा है। इसके दुष्प्रभावों से बुजुर्गों को बचाने के लिए जरूरी कदम उठाने ही होंगे।

नई शिक्षा नीतिः पांच वर्ष की उपलब्धियां और चुनौतियां

प्रो. रिपुदमन सिंह

पूर्व क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी

वर्ष 2020 में घोषित नई शिक्षा नीति (एनईपी) ने देश की शिक्षा प्रणाली को आमूलचूल बदलने की नींव रखी। लगभग 34 वर्षों बाद आई इस नीति में 21वीं सदी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए समावेशी, लचीली और बहुभाषी शिक्षा नीति की परिकल्पना की। इस नीति के पांच वर्ष होने पर आवश्यक हो गया है कि इसकी अब तक की उपलब्धियों और चुनौतियों का मूल्यांकन किया जाए। चूंकि देश के कई राज्यों द्वारा एनईपी के कुछ प्रावधानों को लेकर विरोध प्रकट किया जाता रहा है, अतः इसके सभी पहलुओं पर विचार किया जाना समीचीन होगा। एनईपी 2020 ने स्कूली और उच्च शिक्षा, दोनों में व्यापक बदलाव का वादा किया था, उस दृष्टिकोण का कुछ हिस्सा क्रियान्वयन तो हुआ है, लेकिन बहुत कुछ अभी कागजों पर ही है। इसमें राज्य एवं केंद्र का टकराव भी व्यवधान का कारण रहा है।

स्कूल पाठ्यक्रम धीरे-धीरे बदल रहा है, जो (5+3+3+4) प्रणाली पर आधारित है, जिसमें प्रारंभिक वर्षों को विशेष महत्व दिया गया है, तथा बाल्यावस्था में खेल आधारित और गतिविधि आधारित शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है। एनसीईआरटी ने इसी प्रणाली के आधार पर कक्षा (1-8) के लिए नई पाठ्य पुस्तकें तैयार की हैं। कक्षा (9-12) के लिए नई पुस्तकें अति शीघ्र आने की उम्मीद है। एनईपी 2020 का लक्ष्य 2030 तक पूर्व प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक बनाना है और यह शिक्षा में विषमता हटाने के लिए आवश्यक कदम है। 2021 में शुरू की गई निपुण भारत योजना का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि कक्षा-3 के अंत तक प्रत्येक बच्चा किताब ढंग से पढ़ सके और गणित का बुनियादी ज्ञान हासिल कर सके। एक सरकारी सर्वेक्षण में यह ज्ञात हुआ है कि भाषा में 64 प्रतिशत और गणित में 60 प्रतिशत बच्चे ही ऐसा करने में सफल हुए। यह शुरुआत तो सही प्रतीत होती है, किंतु सार्वभौमिक दक्षता से काफी दूर है।

इसके अतिरिक्त एनईपी 2020 के प्रावधानों में, कक्षा-5 तक मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाना भी है, इससे ग्रामीण और वंचित वर्गों के छात्रों को शिक्षा से जोड़ने में सरलता भी आई है। कक्षा-6 से व्यावसायिक शिक्षा जैसे कौशल, आधारित विषयों की शुरुआत की गई है। कोडिंग, कृत्रिम मेधा और वित्तीय साक्षरता जैसे कई विषय स्कूलों में पढ़ाए जा रहे हैं। ग्रामीण एवं वंचित वर्ग के छात्रों को दीक्षा, पीएमई विद्या जैसे डिजिटल प्लेटफार्म्स के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराई जा रही है। उच्च शिक्षा में भी एनईपी 2020 के प्रावधान अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हो सकते हैं।

2022 में शुरू की गई सीयूईटी स्नातक प्रवेश के लिए, अब प्रमुख मार्ग बन गई है। ।एबीसी (अकादमिक क्रेडिट बैंक) का क्रियान्वयन भी छात्रों के हित में एक महत्वपूर्ण कदम है, इससे संस्थानों के बीच भी क्रेडिट अर्जित करना और पुनः प्रवेश करना संभव हो गया है। यह प्रणाली छात्रों को एक वर्ष बाद प्रमाण-पत्र, दो वर्ष बाद डिप्लोमा तथा चार वर्षीय बहु-विषयक डिग्री पूरी करने की अनुमति देती है।

शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए देश में प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों को अपना कैंपस खोलने की अनुमति भी एनईपी 2020 की नीति का हिस्सा है। गुजरात के गिफ्ट सिटी में दो अन्य विदेशी विश्वविद्यालयों के बाद साउथेंपरन विश्वविद्यालय का कैंपस हाल ही में खुला है। 12 अन्य प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय अनुमति प्राप्त करने के कगार पर हैं। एनईपी 2020 के क्रियान्वयन में सभी कुछ सही नहीं चल रहा है। एनईपी 2020 के अंतर्गत तीन भाषाओं की बाध्यता है, जिसमें से कम से कम दो भाषाएं भारतीय होनी चाहिए, किंतु तमिलनाडु जो तामिल-अंग्रेजी मॉडल पर चलता है, इसे हिंदी थोपने की कोशिश मानता है। इसके अतिक्ति शिक्षक-शिक्षा के लिए राष्ट्रीय परिचर्चा की रूपरेखा जो 2021 में जारी होनी थी, अभी तक जारी नहीं हो पाई है। एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (आईटीपी) के तहत चार वर्षीय एकीकृत बीएड पाठ्यक्रम भी अभी तक लागू नहीं हो पाया है। यूजीसी को समाप्त करके भारतीय उच्च शिक्षा सेवा आयोग का गठन भी अधर में लटका हुआ है। एनईपी 2020 में मिड डे मील के साथ नाश्ते की भी सिफारिश की गई थी, किंतु वित्त मंत्रालय ने शिक्षा विभाग के इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया है।

वास्तविकता यह है कि एनईपी 2020 लागू किए जाने से हमारा ग्रामीण परिवेश भी अड़चन है। ग्रामीण क्षेत्र में इंटरनेट की समस्या, विद्युत आपूर्ति की कमी, शिक्षकों की ग्रामीण क्षेत्र में कार्य करने की अनिच्छा मुख्य कारक हैं। इसके साथ ही कुछ राज्य भी एनईपी के प्रमुख प्रावधानों का विरोध करते आ रहे हैं। केरल, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल में पीएमश्री स्कूल स्थापित करने के लिए केंद्र के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया है। तमिलनाडु, तीन भाषा फार्मूला एवं चार वर्षीय स्नातक ढांचे, दोनों का विरोध कर रहा है। केरल, तमिलनाडु का तर्क है कि चूंकि शिक्षा समवर्ती सूची में है, इसलिए केंद्र इन बदलावों को एकतरफा लागू नहीं कर सकता है। केंद्र ने भी इन राज्यों की समग्र शिक्षा निधि रोक दी है, क्योंकि केंद्र के अनुसार यह धनराशि एनईपी से जुड़े सुधारों के लिए है। तमिलनाडु ने इस रोक को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती भी दी है।

एनईपी को यदि जमीनी स्तर पर लागू किया जाए तो यह शिक्षा व्यवस्था को समावेशी बनाएगी और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए युवाओं को तैयार करेगी।

आमने

संसद में पेश बिल संविधान में निहित शक्ति-विभाजन के सिद्धांत का उल्लंघन है और चुनी हुई सरकारों के अधिकार को कमजोर करता है। इससे कार्यकारी एजेंसियों को खुली छूट मिल जाएगी। वे मामूली आरोपों और शक के आधार पर ही जज और जल्लाद दोनों बन जाएंगे। –**असदुद्दीन ओवैसी**, सांसद एआईएमआईएम

सामने

विपक्ष किसका विरोध कर रहा है नैतिकता का या भ्रष्टाचार का? भारतीय राजनीति में अगर हम नैतिकता के आधार पर और भ्रष्टाचार के खिलाफ इस्तीफा देने की बात करते हैं और फिर कानून बनाने की बात करते हैं, तो विपक्ष इसका विरोध क्यों करता है?

–**अनुराग ठाकुर**
भाजपा सांसद

स्टार्टअप्सः स्थिरता और स्थायित्व की जद्दोजहद

डॉ. शिवम भारद्वाज

असिस्टेंट प्रोफेसर, जीएलए यूनिवर्सिटी, मथुरा

पिछले एक दशक में भारत का स्टार्टअप परिदृश्य तेजी से बदला है। जहां कभी सुरक्षित नौकरी ही पहली पसंद हुआ करती थी, वहीं आज उद्यमिता भी नई पीढ़ी की आकांक्षाओं का प्रतीक बनने लगी है। देश में 1.80 लाख से अधिक स्टार्टअप्स को आधिकारिक मान्यता मिली है। सिर्फ इस साल ही 21,683 नए स्टार्टअप्स का जुड़ना इस बात का स्पष्ट संकेत है कि यह केवल करियर का विकल्प नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक प्रवृत्ति का प्रतीक बनकर उभर रहा है। आज भारत के स्टार्टअप्स क्षेत्रीय और वैश्विक परिदृश्य दोनों में तेजी से अनुकूलन कर रहे हैं। फिनटेक, डीपटेक और क्लाइमेट टेक अब अग्रिम पंक्ति में आने लगे हैं। देश में दस हजार से अधिक फिनटेक कंपनियां सक्रिय हैं, जिनमें से करीब तीस ने यूनिकॉर्न का दर्जा हासिल किया है। क्लाइमेट टेक ने तो इस साल केवल छह महीनों में ही 1.2 बिलियन डॉलर जुटाए, जो पिछले साल की तुलना में तीन गुना अधिक है।

डीपटेक को भी अब नीतिगत प्रोत्साहन मिल रहा है। ड्रोन, स्पेस-टेक और बायोटेक में ठोस प्रगति दिखाई देने लगी है। इन्क्यूबेशन हब भी अपनी भूमिका निभा रहे हैं। 72 अटल इन्क्यूबेशन सेंटर्स के माध्यम से 3,500 से अधिक स्टार्टअप्स और लगभग 42,000 नई नौकरियों को बढ़ावा मिला है। साथ ही यूनिकॉर्न (कुल मूल्यांकन एक बिलियन अमेरिकी डॉलर या अधिक) की संख्या के आधार भारत विश्व के अग्रणी ईको सिस्टम्स में से एक है और हुरुन ग्लोबल यूनिकॉर्न इंडेक्स 2025 के अनुसार तीसरे पायदान पर है।

इस क्रांति की चमक के पीछे कुछ गहरी छायाएं भी हैं। सफलताओं के साथ-साथ एक गहरा संकट भी आकार ले रहा है। मूल्यांकन की अंधी दौड़, पारदर्शिता का अभाव और दीर्घकालिक दृष्टि की कमी, जो यूनिकॉर्न कभी भारत की नवाचार-यात्रा के प्रतीक माने जाते थे, उनमें से कई आज नियामकीय जांच, निवेश में गिरावट और अस्तित्व संकट से जूझ रहे हैं। बायजूस जैसे एडटेक दिग्गज आज अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं।

तमाम रिपोर्ट्स के आंकड़े बताते हैं कि शुरू होने के पांच सालों के अंदर ही बंद हो जाने वाले स्टार्टअप्स की तादाद बहुत ज्यादा है। अधिकांश कंपनियां या तो बिना ठोस बाजार मांग समझे केवल 'आइडिया' के सहारे आगे बढ़ जाती हैं या फिर निवेशकों की पूंजी के बल पर आक्रामक विस्तार करती हैं। नतीजतन ग्राहक नहीं मिलते। राजस्व टिकता नहीं और बिजनेस मॉडल अस्थिर हो जाता है। तेज विस्तार की होड़ में कॉरपोरेट गवर्नेंस, पारदर्शिता और संस्थागत जवाबदेही जैसी बुनियादी बातें पीछे छूट जाती हैं। कई मामलों में बोर्ड की भूमिका सीमित हो जाती है। निवेशक अल्पकालिक लाभ के पीछे भागते हैं और संस्थापक अपनी कंपनियों को व्यक्तिगत संपत्ति की तरह संचालित करने लगते हैं। इसका अर्थ यह है कि विफलता केवल संस्थापकों की व्यक्तिगत भूल नहीं, बल्कि नीति, पूंजी और बाजार की संरचनात्मक कमियों का प्रतिबिंब है।

यह संकट केवल बाजार का नहीं, बल्कि नीतिगत प्राथमिकताओं की विसंगति का भी परिणाम है। सरकार एक ओर मैन्युफैक्चरिंग, डीप टेक और वैज्ञानिक अनुसंधान आधारित स्टार्टअप्स की बात करती रही, लेकिन दूसरी ओर लंबे समय तक उसके प्रोत्साहन कार्यक्रम, टैक्स स्ट्रक्चर और नियामकीय ढांचा मुख्यतः उपभोक्ता सेवाओं वाले स्टार्टअप्स के पक्ष में झुके रहे। नतीजा यह कि भारत की स्टार्टअप कहानी का बड़ा हिस्सा फूड डिलीवरी, क्विक कॉमर्स, एग्रीगेटर ऐप्स और हाइपरलोकल सेवाओं तक सीमित रह गया, जहां नवाचार की गहराई कम और स्केलिंग की लालसा अधिक रही। यही कारण है कि स्विगी और जोमेटो जैसी कंपनियां अरबों डॉलर के लेन-देन तो करती हैं, लेकिन मुनाफे के नाम पर बड़ा सवाल बना रहता है। इसके विपरीत जेरोधा या जोहो जैसी कंपनियां, जिन्होंने लाभकारी और टिकाऊ मॉडल पर ध्यान दिया, अपेक्षाकृत छोटे पैमाने पर होते हुए भी स्थिर और दीर्घकालिक सफलता का उदाहरण बन गईं। आज अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भी भारत एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। हाल ही में अमेरिका द्वारा भारतीय वस्तुओं पर लगाए गए 50% टैरिफ तत्कालिक रूप से चुनौती जरूर हैं, लेकिन दीर्घकालिक दृष्टि से यह भारत के लिए आत्मनिर्भरता और 'मेड फॉर द वर्ल्ड' जैसी रणनीति की दिशा में अवसर भी है। जब वैश्विक बाजार कठिन हो जाते हैं, तब घरेलू उत्पादन और नवाचार को नई गति मिलती है। यही वह समय है जब सरकार, उद्योग और पूंजी तीनों मिलकर ठोस दिशा तय कर सकते हैं।

स्वतंत्रता दिवस पर पीएम के 'विकसित भारत 2047' के संकल्प ने एक नई दिशा की उम्मीद जगाई है। 'मेड इन इंडिया' सेमीकंडक्टर चिप की घोषणा केवल तकनीकी उपलब्धि नहीं, बल्कि एक नीतिगत बदलाव का प्रतीक है। भारत अब सेवाओं का निर्यातक से गहरे नवाचारों का निर्माता बनना चाहता है। साथ ही एक लाख करोड़ रुपये की 'विकसित भारत रोजगार योजना' ने युवाओं को नवाचार और उद्यमिता की ओर प्रेरित करने का ठोस संकेत दिया। यदि 'नेक्स्ट जनरेशन रिफॉर्म टास्क फोर्स' कर प्रणाली और अनुपालन को सरल बनाने में सफल हुई, तो यह छोटे-बड़े तमाम व्यवसायों के लिए जीवनदायिनी साबित होगी। नवाचार और अनुशासन का संगम ही स्थायी विकास का सूत्र है। आज भारत की स्टार्टअप यात्रा का असली सवाल यह नहीं है कि कितने यूनिकॉर्न पैदा हो रहे हैं, बल्कि यह है कि क्या हमारे स्टार्टअप्स पारदर्शिता, गवर्नेंस और नवाचार के मानकों पर वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुकूल बन पा रहे हैं। स्टार्टअप्स कोई त्वरित जादू नहीं, बल्कि दीर्घकालिक धैर्य और जिम्मेदारी से चलाया जाने वाला व्यवसाय हैं।

देश में इस साल 21,683 नए स्टार्टअप्स शुरू हुए हैं। यह संकेत है कि यह केवल करियर का विकल्प नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक प्रवृत्ति का प्रतीक बनकर उभर रहा है।

सामयिकी

रैबीज से घातक है कैंसर निशाने पर कुत्ते ही क्यों!

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) के मुताबिक दुनिया में 36 प्रतिशत कुत्ते के काटने से होने वाले रैबीज से मौत के मामले भारत में होते हैं। यह संख्या 18,000 से 20,000 है। रैबीज से मौतों में से 30 से 60 प्रतिशत मामलों में पीड़ित की उम्र 15 साल से कम होती है। इस पर कोई विवाद नहीं कर सकता कि एक भी व्यक्ति की जान इस तरह जाए तो यह मानवता पर सवाल है और उसे बचाने के लिए सरकार और समाज को कड़े कदम उठाने चाहिए। विश्व स्वास्थ्य संगठन की ही रिपोर्ट के अनुसार, भारत में हर साल शराब के सेवन से लगभग दो लाख साठ हजार से ज्यादा लोगों की मौत होती है। यह आंकड़ा 2019 के आंकड़ों पर आधारित है, जिसमें बताया गया कि शराब सेवन से सबसे ज्यादा प्रभावित 20 से 39 वर्ष की आयु के युवक हैं।

शराब के सेवन से लीवर, दिल, कैंसर और दुर्घटनाओं से जुड़ी मौतें शामिल होती हैं। भारत में हर साल तंबाकू और गुटखा के सेवन से लगभग 13.5 लाख (1.35 मिलियन) लोगों की मृत्यु होती है।

पंकज चतुर्वेदी

वरिष्ठ पत्रकार

यह औसतन हर दिन 3,700 से अधिक मौतें हैं। इनमें से अधिकांश मौतें कैंसर (विशेषकर ओरल कैंसर), हृदय रोग, फेफड़ों की बीमारियों और अन्य तंबाकू जनित बीमारियों के कारण होती हैं। 90% मुंह के कैंसर के मामले भारत में तंबाकू या गुटखा सेवन से जुड़े हैं। यह आंकड़ा विश्व स्वास्थ्य संगठन का है।

सवाल उठना लाजिमी है कि जो जिम्मेदार लोग कभी शराब और गुटखे पर पूरी तरह पाबंदी के लिए सुप्रीम कोर्ट तो क्या अपने मोहल्ले की गली में खड़े नहीं हुए, उन्हें कुत्तों से अचानक इतनी नफरत क्यों हो गई! मनुष्य ने सबसे पहले कुत्ता पालना शुरू किया था। हमे पाषाण काल (नव पाषाण काल लगभग 4000 ईसा पूर्व से 2500 ईसा पूर्व) के मानव कंकाल के साथ कुत्ता दफनाने के साक्ष्य बुर्जहोम (जम्मू कश्मीर) से प्राप्त हुआ है। आदि काल में कुत्ता इंसान को शिकार करने में मदद करता था, फिर वह घर और फसल की सुरक्षा भी करता था। सबसे बड़ी बात कम भोजन में भी वफादार बने रहने के उसके गुण ने आज कुत्ते को इंसान द्वारा पाले जाने वाले सबसे विश्वस्त और सर्वाधिक पाला जाने वाला जानवर बना दिया है।

'बैलों के गले में जब घुंघरू जीवन का राग सुनाते हैं' यह गीत कोई बहुत पुराना नहीं हैं। तब बैल घर की प्रतिष्ठा और दरवाजे पर बंधी गाय पवित्रता की प्रतीक हुआ करती थी। धीरे से ट्रेक्टर आया। जब जमीन की जोत ही छोटी हो गई और ट्रैक्टर नाम का 'हाथी' दरवाजे बंध गया तो खेती घाटे का सौदा हो गई। बैल लुप्त हुए और गाय निराश्रित। जिन लोगों ने गाय को दरवाजे से हटा कर गौशाला में ले जाने को पावन कार्य बनाया, वही वर्ग अब सड़कों से कुत्ते हटाने के तर्क गढ़ रहा है। ये वही वर्ग है जो सरकार की उस योजना का समर्थक है, जिसमें प्रकृति के नियमों के विरुद्ध केवल बछिया पैदा करने के सीरम गांव-गांव बांटे जाने का समर्थन करता हैं। केवल उत्तर प्रदेश राज्य में ही 16 लाख से अधिक निराश्रित गायें मौजूद हैं। हर गांव में अनिवार्य चरागाह की जमीन कौन हड़प गया? उस पर कोई बात नहीं करता।

कहना न होगा कि गोशालाओं की संख्या इसकी तुलना में ऊंट के मुंह में जीरा है और जो हैं भी, उनमें से अधिकांश, अव्यवस्था की इस हद तक शिकार हैं कि उन्हें गायों का कब्रिस्तान कहा जाए तो अतिशियोक्ति नहीं होगा। इसी साल छह अगस्त को दिल्ली हाई कोर्ट के उस निर्देश पर भी विचार करना होगा, जिसमें जज साहब ने कहा था, 'कुत्ते दुनिया के सबसे प्यारे जानवर हैं और इंसानों के सबसे अच्छे दोस्त हैं। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि कुत्तों की सुरक्षा की जाए और उन्हें सम्मान दिया जाए। या तो कुत्ते घर पर हों या आश्रय में। सड़कों पर कचरा खाते हुए नहीं। इंसान और कुत्ते, दोनों ही परेशान हैं। न तो इंसान सुरक्षित हैं, न ही कुत्ते।'

सोशल फोरम

सेकेंड हैंड ईगो

किसी को इसी बात का अहंकार है कि किसी शक्तिशाली इंसान से उसकी घनिष्ठता हो गई है। वो second hand ego का ही मजा ले रहा है। किसी को अपनी सुंदरता पर नाज है, जबकि वो सुंदर मात्र इसीलिए है कि उसे वो सुंदरता के जीन्स अपने माता-पिता से मिल गए हैं। उसके माता-पिता को उनके माता-पिता से। किसी को अपनी बुद्धिमता का घमंड है, जबकि वो भी उसकी अर्जित की हुई नहीं है, कुछ गॉड गिफ्टेड है और कुछ संयोगवसात मिली परिस्थितियों की बदौलत है। किसी को अपनी जाति का, उच्च कुल में जन्म लेने का, अपनी जीवनशैली का, तो किसी को अपने पहनावे का तो किसी को अपने खानपान का, तो किसी को अपनी पद-प्रतिष्ठा का अहंकार है। वो ईमानदारी से देखे तो सब संयोग मात्र से उपलब्ध हुआ है, अर्जित नहीं किया गया है। अर्जित करने का उसे भ्रम हो सकता है, लेकिन वो भ्रम भी हमें हमारा अहंकार ही देता है कि अरे ऐसे कैसे 'मैं कोई मामूली इंसान थोड़े न हूं। जीवन भर मेहनत की है। अपने को शून्य होता देख घबराहट होती है।' इसीलिए मुझे मोटिवेशनल, प्रेरणादाई बातें सब फिजूल लगती हैं।

विवेक मधु

ब्लॉगर

आपकी प्रेरणा देने से बदलाहट हो रही होती तो सभी बदल जाते न, जो पहुंचते हैं आगे उन्हें पहुंचना ही था, क्योंकि वो अपने अंदर समझ का बीज लेकर ही चल रहे थे। उनकी नियति को उन्हें वहां तक ले ही जाना था। हां, यह बात भी आपको अजीब लगेगी और लगनी भी चाहिए, क्योंकि मेरा भी आज इसे जान लेने का कोई ठोस दावा नहीं है, लेकिन अंदर से एक आवाज आती है कि कुछ पा लेने का जज्बा, लगन के बीज भी कुछ लोग लेकर पैदा होते हैं कुछ नहीं। यह बीज जितने हैं उस अनुपात में उसकी उपलब्धि हो जाती है। देखिए न, एक कक्षा में अध्यापक सभी को एक सा ही पाठ पढ़ाता है, मगर सभी अपनी क्षमता अनुसार ग्रहण करते हैं और उसी अनुसार डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, व्यापारी आदि आदि बन जाते हैं।

हम कितना भी धरम-करम, ध्यान-व्यान, मौन-वौन कर लें, मगर बारीकी से इस अहंकार के खेल को नहीं समझ रहे हैं, प्रेम-करुणा और विनम्रता का उदय नहीं हो रहा है तो दिशा भटक गए हैं हम। मुझे परमात्मा की कृपा से स्थूल अहंकार की व्यर्थता तो समझ आ गई है, वो रत्तिमात्र भी नहीं बचा है, मगर कहीं न कहीं सूक्ष्म अहंकार तो है और वही मेरी पीड़ा का कारण भी है। परमात्मा से यही प्रार्थना है (नहीं-नहीं यह शब्द भी भ्रम उत्पन्न करता है, केवल प्रार्थना कहना काफी है) कि इस सूक्ष्म अहंकार का खेल भी जना दे। शायद यही मुक्ति है?

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक त्रिनाथ शुक्ला द्वारा 1224, देवकाली रोड, निकट यश पेट्रोल पंप अयोध्या-224001 (उ.प्र.) से प्रकाशित एवं प्लाट नं.-42, निकट बद्री नगर, इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज, लखनऊ-226008 (उ.प्र.) से मुद्रित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, कार्यकारी संपादक- विवेक सक्सेना***
05278-352045 (कार्यालय), ईमेल- editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2022/84450, *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी।(नोट-सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अयोध्या होगा)।

परंपरा और तकनीक का नवाचार वस्त्र प्रद्यौगिकी में सपनों का द्वार

उत्तर प्रदेश टेक्सटाइल टेक्नालॉजी इंस्टीट्यूट

111 वर्षों की गौरवशाली विरासत ▪ भविष्य के लीडर्स की पाठशाला ▪ यहां युवा बुनते हैं इनोवेशन और बनते हैं पेशेवर

मैनचेस्टर ऑफ द ईस्ट कहे जाने वाले कानपुर में स्थित "उत्तर प्रदेश टेक्सटाइल टेक्नालॉजी इंस्टीट्यूट (यूपीटीटीआई) उत्तर भारत ही नहीं, बल्कि देश के सबसे पुराने और अग्रणी टेक्सटाइल इंजीनियरिंग संस्थानों में से एक है । 1914 में स्थापित इस संस्थान ने बीते 111 वर्षों की गौरवशाली यात्रा में हजारों युवाओं को तकनीकी शिक्षा, रिसर्च और उद्योगोन्मुख प्रशिक्षण से सशक्त बनाकर टेक्सटाइल इंडस्ट्री के विकास को नई राह दिखाई है। यह संस्थान देश को तकनीकी रूप से दक्ष और उद्योग के अनुकूल प्रोफेशनल्स उपलब्ध करा रहा है।

ऑटोमोटिव और मेडिकल सेक्टर में टेक्सटाइल इंजीनियर्स की बढ़ी मांग

- तेजी से बदलती दुनिया के दौर में आज लगभग सभी क्षेत्रों में टेक्सटाइल इंजीनियर्स की जरूरत है। खासतौर पर ऑटोमोटिव और मेडिकल सेक्टर में टेक्सटाइल इंजीनियरिंग की जरूरत पिछले कुछ समय में तेजी से महसूस की जा रही है। कंप्यूटर साइंस व टेक्सटाइल इंजीनियरिंग के छात्र एक साथ मिलकर इस आवश्यकता को नई दिशा दे सकते हैं।

इसे ही भांपकर यूपीटीटीआई ने टेक्सटाइल से जुड़े पाठ्यक्रमों टेक्सटाइल टेक्नोलॉजी, टेक्सटाइल केमिस्ट्री, मैन मेड फाइबर टेक्नोलॉजी और टेक्सटाइल इंजीनियरिंग के अलावा सत्र 2024-25 से कंप्यूटर साइंस में 60 सीटों वाला बीटेक कोर्स शुरू किया है। इसके पीछे संस्थान का प्रयास है कि छात्र सिर्फ नौकरी के लिए नहीं, बल्कि उद्योग के निर्माण और नेतृत्व के लिए भी तैयार हो सकें।

देश में रोजगार का दूसरा सबसे बड़ा सेक्टर है टेक्सटाइल इंडस्ट्री

- टेक्सटाइल इंडस्ट्री करियर के लिहाज से देश का दूसरा सबसे बड़ा रोजगार देने वाला उद्योग है। इसमें नौकरी, रिसर्च, फैशन डिजाइन, प्रोडक्शन, एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट, टेक्निकल टेक्सटाइल, क्वालिटी कंट्रोल, सप्लाई चेन मैनेजमेंट, सस्टेनेबल टेक्सटाइल्स, गवर्नमेंट सेक्टर, स्टार्टअप्स, इनोवेशन, एनवायरमेंटल टेक्सटाइल जैसे क्षेत्र में काम करने के लिए राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय कंपनियों में अपार अवसर उपलब्ध हैं। टेक्सटाइल सेक्टर में इनोवेशन और रिसर्च की भी असीम संभावनाएं हैं।

शत प्रतिशत प्लेसमेंट, उद्योग जगत के लीडर

- यूपीटीटीआई ने हाल के वर्षों में लगभग शत प्रतिशत प्लेसमेंट का रिकॉर्ड बनाया है। संस्थान के छात्रों की मांग टेक्सटाइल उद्योग में हमेशा रहती है। यहां के छात्रों को देश की शीर्ष टेक्सटाइल कंपनियों में आकर्षक पैकेज पर नौकरी मिली है।यूपीटीटीआई के छात्र देश-विदेश की नामी टेक्सटाइल कंपनियों जैसे ट्राइडेंट ग्रुप, वेलस्पन, वर्धमान टेक्सटाइल्स, रिलायंस इंडस्ट्रीज, आदित्य बिड़ला ग्रुप, शाही एक्सपोर्ट्स, नाहर ग्रुप आदि में उच्च पदों पर कार्यरत हैं। संस्थान के अनेक पूर्व छात्रों ने टेक्सटाइल सेक्टर में अपना स्टार्टअप भी शुरू करके नए आयाम स्थापित किए हैं।
- संस्थान की आधुनिक लैब्स में इंडस्ट्री स्टैंडर्ड मशीनरी और उपकरण हैं, जिससे छात्रों को वास्तविक इंडस्ट्री एक्सपोजर मिलता है। टेक्नोलॉजी-सक्षम क्लासरूम और समृद्ध लाइब्रेरी में छात्रों को प्रैक्टिकल नॉलेज और रिसर्च के लिए हर सुविधा उपलब्ध रहती है।

नवाचार को नई उड़ान, संस्थान ने राष्ट्रीय स्तर पर बनाई पहचान

- संस्थान का स्टार्टअप इनक्यूबेशन सेंटर एंड इनोवेशन फाउंडेशन संस्थान के छात्रों के साथ ही बाहरी युवाओं के लिए नवाचार के सशक्त केंद्र के रूप में उभर रहा है। इसे प्रदेश सरकार के स्टार्ट इन यूपी और एकेटीयू के इनोवेशन हब से मान्यता मिली हुई है।
- सेंटर युवा उद्यमियों को उनकी स्टार्टअप यात्रा में आइडिया से स्टार्टअप तक की मेंटरशिप, सरकारी ग्रांट्स और स्कीम्स की जानकारी, लीगल व अकाउंटिंग सहायता, बिजनेस प्लान डेवलपमेंट, फंडिंग और नेटवर्किंग सपोर्ट में सहयोग और मार्गदर्शन प्रदान करता है। इसके चलते संस्थान के नवाचारों को यूपी ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट, इंटरनेशनल ट्रेड शो, स्टार्ट अप महाकुंभ-2024 एवं 25 तथा स्टार्ट अप संवाद जैसे आयोजनों में सराहना हासिल हुई है।

संस्थान में उपलब्ध पाठ्यक्रम

- बीटेक – कम्प्यूटर साइंस -60 सीटें, टेक्सटाइल टेक्नोलॉजी-40 सीटें, टेक्सटाइल केमिस्ट्री-60 सीटें, मैन मेड फाइबर टेक्नोलॉजी-60 सीटें, टेक्सटाइल इंजीनियरिंग-40 सीटें (प्रवेश प्रक्रिया जेईई मेंस, सीयूईटी तथा यूपीटैक)
- एमटेक – टेक्सटाइल टेक्नालॉजी, टेक्सटाइल केमिस्ट्री (प्रवेश प्रक्रिया गेट तथा सीयूईटी(पीजी) उत्तीर्ण, सीटें रिक्त रहने पर संस्थान स्तरीय प्रवेशपरीक्षा)
- पीएचडी – रिसर्च व इनोवेशन

लेखक– प्रोफेसर जितेन्द्र प्रताप सिंह
हेड ऑफ डिपार्टमेंट ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट
उत्तर प्रदेश टेक्सटाइल टेक्नालॉजी इंस्टीट्यूट

नई किताबें

मनोविज्ञान के बुनियादी सिद्धांतों और प्रमुख सिद्धांतों को समझाने का प्रयास

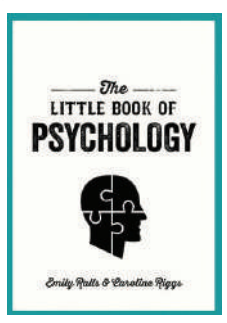

यह पुस्तक मनोविज्ञान के बुनियादी सिद्धांतों और प्रमुख सिद्धांतों को समझने के लिए एक संक्षिप्त और सुलभ परिचय प्रदान करती है। खासकर उन छात्रों के लिए जो विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान का अध्ययन शुरू करने वाले हैं। यह प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिकों, मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों, मनोवैज्ञानिक अध्ययनों और विषयों का संकलन है। यह 128 पृष्ठों की एक छोटी पुस्तक है, जो उन छात्रों के लिए एकदम सही है जिसमें मनोविज्ञान के बुनियादी ज्ञान और प्रमुख सिद्धांतों को सरल और स्पष्ट तरीके से समझाया गया है। पुस्तक : द लिटिल बुक ऑफ साइकोलॉजी

लेखक : कैरोलिन रिग्स, एमिली राल्स

मूल्य : रुपये 1,307

प्रकाशक: समर्सडेल

नगरीय समाज के विवरण पर आधारित

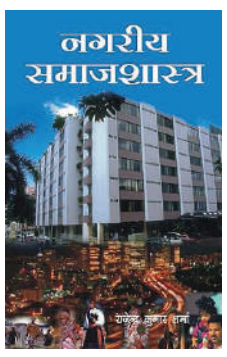

यह पुस्तक समस्त भारतीय विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर स्तर पर समाजशास्त्र के नगरीय समाजशास्त्र शीर्षक प्रश्न-पत्र के पाठ्यक्रम का पूर्णतया विवेचन करती है। इस पुस्तक में नगरीय समाजशास्त्र का परिचय, नगरीय समाज के विवरण पर ग्रामीण और नगरीय तुलना, नगर का सामाजिक प्रभाव, भारत में नगरों में वृद्धि, नगरीय समुदाय के लक्षण तथा नगरों के प्रकार शीर्षक अध्याय दिये गए हैं। इसमें प्रमुख नगरीय समस्याओं जैसे नगरीय बेकारी, भीड़भाड़ और गन्दी बस्तियां, वेश्यावृत्ति, भिक्षावृत्ति, अपराध, किशोरापराध आदि का विवेचन भी किया गया है।

पुस्तक : नगरीय समाजशास्त्र

लेखक : राजेन्द्र कुमार शर्मा

मूल्य : रुपये 495

प्रकाशक : अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स

उपलब्धता : अमेजन पर भी उपलब्ध है।

जॉब अलर्ट

एलआईसी रिक्रूटमेंट-2025

- असिस्टेंट इंजीनियर – 81 पद
- असिस्टेंट एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर – 760 पद
- अहर्ता – मान्यता प्राप्त यूनिवर्सिटी से बैचलर डिग्री, बीई/ बीटेक और लॉ में ग्रेजुएट
- आयु सीमा – 8 सितंबर 2025 को कम से कम 21 साल और अधिकतम 30/32 साल
- आवेदन – ऑनलाइन www.licindia.in
- अंतिम तिथि – 8 सितंबर

यूपी पुलिस दरोगा भर्ती

- कुल पद – 4543
- योग्यता – स्नातक
- आवेदन – वेबसाइट Uppbpb.gov.in
- अंतिम तिथि- 11 सितंबर

बिहार कर्मचारी चयन आयोग स्नातक स्तरीय पदों पर नियुक्ति

- कुल पद- 1064
- योग्यता- स्नातक
- आयु सीमा – 21 से 37 वर्ष
- आवेदन- वेबसाइट Bssv.bihar.gov.in
- अंतिम तिथि- 17 सितंबर

काम की बात

स्वयं पोर्टल पर पांच फ्री एआई कोर्स लॉन्च

- शिक्षा मंत्रालय ने छात्रों को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से जोड़ने के लिए स्वयं पोर्टल पर पांच फ्री एआई कोर्स लॉन्च किए हैं। स्कूल-कॉलेज के छात्र और नौकरीपेशा, सभी इसके लिए आवेदन कर सकते हैं।इन कोर्स को आईआईटी के प्रोफेसरों ने डिजाइन किया है। ये कोर्स बेसिक से एडवांस लेवल तक की घर बैठे पढ़ाई के लिए तैयार किए गए हैं। कोर्स पूरा करने पर छात्रों को सर्टिफिकेट दिया जाएगा। 'AI/ML Using Python' कोर्स में पाइथन प्रोग्रामिंग, डेटा विज़ुअलाइजेशन और मशीन लर्निंग की बेसिक जानकारी दी जाएगी। 'AI in Physics' कोर्स में फिजिक्स के कठिन कॉन्सेप्ट्स को AI की मदद से आसान तरीके से समझाया जाएगा। इसी तरह 'AI in Chemistry' कोर्स में ड्रग डिजाइनिंग और रिएक्शन मॉडलिंग जैसे विषयों को AI के माध्यम से सीखने का मौका मिलेगा। कॉमर्स और मैनेजमेंट के छात्रों के लिए 'AI in Accounting' कोर्स में अकाउंटिंग ऑटोमेशन और स्मार्ट एनालिसिस सिखाया जाएगा। इन कोर्स के लिए SWAYAM पोर्टल swayam.gov.in पर लॉग इन करना होगा। रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया के लिए कोई शुल्क नहीं देना है।

सैन्य कॉलेज देहरादून में एडमिशन

- राष्ट्रीय भारतीय सैन्य कॉलेज, देहरादून में जुलाई 2026 सत्र के लिए 8वीं कक्षा में प्रवेश प्रक्रिया शुरू हो गई है। 7वीं कक्षा में पढ़ रहे या 7वीं पास कर चुके लड़के या लड़कियां इस कॉलेज में एडमिशन के लिए आवेदन कर सकते हैं।
- उम्र 1 जुलाई 2026 को साढ़े ग्यारह साल से कम और 13 साल से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। प्रवेश परीक्षा 7 दिसंबर 2025 को दिल्ली में होगी।
- आवेदन की अंतिम तिथि 15 अक्टूबर है। प्रवेश परीक्षा दो स्तरीय होगी। लिखित परीक्षा अंग्रेजी, गणित और सामान्य ज्ञान की होगी। इसे पास करने वाले बच्चों का बाद में साक्षात्कार होगा।
- आवेदन फार्म डिमांड ड्राफ्ट भेजकर कॉलेज से मंगा सकते हैं या शिक्षा निदेशालय की वेबसाइट से डाउनलोड कर सकते हैं।
- राष्ट्रीय भारतीय सैन्य कॉलेज, देहरादून बच्चों को पढ़ाई के साथ अनुशासन, फिजिकल ट्रेनिंग और लीडरशिप सिखाता है। यहां कक्षा 8 से 12वीं तक की पढाई होती है।
- इस कॉलेज को राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (NDA) खडकवासला और भारतीय सैन्य अकादमी (IMA), देहरादून के लिए नर्सरी ऑफ लीडरशिप माना जाता है।
- यहां से पढ़ाई पूरी करने वाले छात्रों के लिए सेना में अधिकारी बनने का रास्ता खुलता है।

पहली प्राइवेट नौकरी पर सरकार से 15 हजार इनाम

- **प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना**
- **खुल चुका पोर्टल, इस तरह करना है रजिस्ट्रेशन**

- देश में युवाओं को अधिक रोजगार और सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से केंद्र सरकार ने Employment Linked Incentive Scheme शुरू की है। इस योजना को प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना नाम दिया गया है। इस योजना के तहत निजी क्षेत्र में पहली नौकरी मिलने पर सरकार धन देगी।
- प्राइवेट सेक्टर में पहली नौकरी पाने वाले लोगों को इस योजना का लाभ लेने के लिए UAN (Universal Account Number) फेस ऑथेंटिकेशन टेक्नोलॉजी के जरिए UMANG App पर जेनरेट करना होगा। वहीं, एंप्लॉयर pmvbry.epfindia.gov.in या pmvbry.labour.gov.in पर जाकर वन-टाइम रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं।
- यह योजना 1 अगस्त 2025 से 31 जुलाई 2027 के बीच बनने वाली नौकरियों पर लागू होगी।
- योजना का पोर्टल (https://pmvbry.epfindia.gov.in या https://pmvbry.labour.gov.in)

योजना का पहला भाग

इस योजना में दो पार्ट हैं। पार्ट ए पहली बार रोजगार पाने वालों पर केंद्रित है, वहीं दूसरा भाग नियोक्ताओं पर केंद्रित है। पार्ट ए के तहत EPFO में पहली बार पंजीकृत होने वाले कर्मचारियों को एक महीने का EPF वेतन, जो अधिकतम 15000 रुपये हो सकता है, दो किस्तों में दिया जाएगा। 6 महीने की नौकरी पूरी होने पर 7500 रुपये और बाकी 7500 रुपये 1 साल पूरा होने पर मिलेंगे 1 लाख रुपये तक के वेतन वाले कर्मचारी इसके पात्र होंगे। प्रोत्साहन राशि का एक हिस्सा एक निश्चित अवधि के लिए बचत साधन या जमा खाते में रखा जाएगा और कर्मचारी बाद में इसे निकाल सकेगा।

दूसरा भाग नियोक्ताओं के लिए

नियोक्ताओं को हर अतिरिक्त कर्मचारी (पहली बार नौकरी करने वाला या पुनः जुड़ने वाला) पर रुपये 3000 प्रति माह तक का Incentive मिलेगा।
यह प्रोत्साहन सामान्य तौर पर 2 साल तक और मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में 4 साल तक दिया जाएगा।
लाभ तभी मिलेगा जब कर्मचारी कम से कम 6 महीने तक नौकरी में बना रहे।

पात्रता की शर्तें

- जिन प्रतिष्ठानों में 50 से कम कर्मचारी हैं, उन्हें कम से कम 2 नए कर्मचारी रखने होंगे।
- जिनमें 50 या उससे अधिक कर्मचारी हैं, उन्हें कम से कम 5 नए कर्मचारी रखने होंगे।
- Exempted Establishments भी इस योजना के तहत शामिल होंगे और उन्हें अपने सभी कर्मचारियों का UAN खोलना अनिवार्य होगा।

अंग्रेजी में कमजोरी नहीं बनेगी उच्च शिक्षा में बाधा

अंग्रेजी भाषा में कमजोर होने के कारण तमाम मेधावी छात्र-छात्राओं को एमबीबीएस, बीटेक या प्रबंधन की पढ़ाई में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इस समस्या को दूर करने के लिए उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यक्रम और उससे संबंधित विशिष्ट महत्वपूर्ण पुस्तकों को भारतीय भाषाओं में डिजिटल रूप में उपलब्ध कराने के लिए सरकार 'भारतीय भाषा पुस्तक' योजना को तेजी से धरातल पर लाने में जुटी है। यह कदम उन छात्रों के लिए बेहद फायदेमंद होगा, जो हिंदी मीडियम या अपने राज्य की भाषा से शुरूआती पढ़ाई करते हैं और अंग्रेजी के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने में कठिनाई अनुभव करते हैं। इस काम के लिए शिक्षा मंत्रालय के उच्च शिक्षा विभाग ने देश की प्रमुख यूनिवर्सिटीज व उच्च शिक्षा संस्थानों में पढ़ाए जाने वाले कोर्सेज की मैपिंग पूरी कर ली है। राज्यों की भाषाओं में पाठ्यपुस्तकें तैयार करने के मिशन में वहां की यूनिवर्सिटी के विशेषज्ञों को शामिल किया गया है।

देश में हर भाषा में मिलेंगी कोर्स की किताबें

- कोर्स से जुड़ी पांच हजार किताबें भारतीय भाषाओं में होंगी तैयार
- 22 भारतीय भाषाओं में मिलेंगी इंजीनियरिंग-मेडिकल की किताबें
- जेईई 13 क्षेत्रीय भाषाओं में

हिंदी में भी शुरू मेडिकल व इंजीनियरिंग की पढ़ाई

- कई प्रमुख संस्थानों ने हिंदी में मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू भी कर रखी है, मध्य प्रदेश, बिहार, और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में एमबीबीएस की पढ़ाई हिंदी में कराने का फैसला पहले ही लिया जा चुका है। आईआईटी, जोधपुर बीटेक कोर्स को हिंदी भाषा में उपलब्ध करा चुका है।
- छात्रों को डिजिटल प्रारूप में टेक्स्टबुक और अध्ययन सामग्री मिलेगी।
- क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा और भाषा आधारित समानता सुनिश्चित होगी।
- तकनीकी, मेडिकल, लॉ और अन्य उच्च शिक्षा की किताबों का अनुवाद किया जाएगा।

बाजार	सेंसेक्स ↑	निफ्टी ↑
बंद हुआ	81,857.84	25,050.55
बढ़त	+213.45	+69.90
प्रतिशत में	0.26	0.28

सोना 1,00,020 प्रति 10 ग्राम

चांदी 1,12,500 प्रति किलो

अमृत विचार
अयोध्या, गुरुवार, 21 अगस्त 2025
www.amritvichar.com

बिजनेस ब्रीफ

दुर्लभ बीमारियों के लिए चार नई दवाएं जल्द की जाएंगी पेश

नई दिल्ली। नीति आयोग के सदस्य डॉ. वी के पॉल ने बुधवार को कहा कि दुर्लभ बीमारियों के लिए चार नई दवाएं जल्द ही बाजार में आने की उम्मीद है, जबकि सात बीमारियों के लिए पांच दवाएं पहले ही बाजार में आ चुकी हैं। इन दवाओं से मरीजों की परेशानी कम हो रही है। उद्योग मंडल फिक्की और नीति आयोग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित एक सम्मेलन में कहा कि स्थानीय कंपनियों द्वारा पेश जेनेरिक दवाओं से दुर्लभ बीमारियों से पीड़ित लोगों को भारी बचत हुई है। वर्तमान में केंद्रीय तकनीकी समिति की सिफारिश पर राष्ट्रीय दुर्लभ रोग नीति के अंतर्गत 63 दुर्लभ बीमारियां शामिल हैं।

ईपीएफओ ने 21.89 लाख सदस्य जोड़े

नई दिल्ली। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने जून महीने में शुद्ध रूप से 21.89 लाख सदस्य जोड़े जो अप्रैल 2018 में पेरोल यानी नियमित वेतन पर रखे गये लोगों की संख्या जारी होने की शुरुआत के बाद सबसे अधिक है। श्रम मंत्रालय ने बुधवार को यह जानकारी दी। मंत्रालय की तरफ से जारी आंकड़ों के मुताबिक, ईपीएफओ ने जून 2025 में शुद्ध रूप से 21.89 लाख सदस्य जोड़े जो सालाना आधार पर 13.46 प्रतिशत और मासिक आधार पर 9.14 प्रतिशत अधिक है।

ग्वारसीड वायदा कीमतों में तेजी

नई दिल्ली। हाजिर बाजार में मजबूती के रुख के बाद सटोरियों ने अपने सौदों के आकार को बढ़ाया जिससे वायदा कारोबार में बुधवार को ग्वारसीड की कीमत 9 रुपये की तेजी के साथ 5,275 रुपये प्रति 10 क्विन्टल हो गई। एनसीडीईएक्स में ग्वारसीड के सितंम्बर माह में आपूर्ति वाले अनुबंध की कीमत 9 रुपये या 0.17 प्रतिशत की तेजी के साथ 5,275 रुपये प्रति 10 क्विन्टल हो गई। इसमें 55,800 लॉट के लिए कारोबार हुआ। बाजार सूत्रों ने कहा कि हाजिर बाजार में मजबूती के रुख को देखते हुए सटोरियों द्वारा अपने सौदों का आकार बढ़ाने तथा उत्पादक क्षेत्रों से मामूली आपूर्ति होने के कारण ग्वारसीड वायदा कीमतों में तेजी आई।

जीएसटी सुधारों पर राज्यों से बनाएंगे आम सहमति

केंद्रीय वित्त मंत्री ने कहा- अगली पीढ़ी के भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण साबित होगा यह कदम

नई दिल्ली, एजेंसी

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बुधवार को कहा कि अगली पीढ़ी के जीएसटी सुधार भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक कदम हैं और केंद्र सरकार आने वाले हफ्तों में इस पर राज्यों के साथ आम सहमति बनाने का प्रयास करेगी। सीतारमण ने जीएसटी में सुधारों पर गठित राज्यों के मंत्रियों के समूहों (जीओएम) के साथ मुलाकात में कहा कि जीएसटी सुधारों पर केंद्र का प्रस्ताव संरचनात्मक सुधार, दरों को युक्तिसंगत बनाने और जीवन को आसान बनाने के तीन स्तंभों पर आधारित है।

जीएसटी दरों को युक्तिसंगत बनाने, बीमा पर कराधान और क्षतिपूर्ति उपकर पर बने मंत्री समूहों ने जीएसटी प्रणाली में व्यापक सुधारों के प्रस्ताव को लेकर सीतारमण के साथ मुलाकात की। बैठक के दौरान सीतारमण ने इस बात पर जोर दिया कि केंद्र सरकार का यह प्रस्ताव देश के आत्मनिर्भर बनने की यात्रा में अगली पीढ़ी के जीएसटी सुधारों की शुरुआत करने के दृष्टिकोण से है। तीनों मंत्री समूह

जीएसटी काउंसिल की बैठक लेतीं वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण।

दो दिन तक केंद्र के 'अगली पीढ़ी' के जीएसटी सुधारों पर विचार-विमर्श करेंगे, जिसके तहत पांच और 18 प्रतिशत की सिर्फ दो दरें ही प्रस्तावित की गई हैं। इसके अलावा विलासिता एवं नुकसानदेह उत्पादों पर 40% कर की एक विशेष दर रखी गई है।

वित्त मंत्रालय ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट में कहा, केंद्र सरकार सहकारी संघवाद की भावना के साथ जीएसटी सुधारों की अगली पीढ़ी को लागू करने के लिए आने वाले हफ्तों में राज्यों के साथ व्यापक सहमति बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। मौजूदा समय में पांच, 12, 18 और 28 प्रतिशत की दर से जीएसटी लगाया जाता है। खाद्य एवं आवश्यक वस्तुओं पर शून्य या पांच प्रतिशत कर लगता है। वहीं विलासिता एवं अहितकर वस्तुओं पर 28 प्रतिशत की दर से कर लगता है, जिसके ऊपर उपकर भी लगता है। सीतारमण ने मंत्री समूहों को लगभग 20 मिनट संबोधित किया जिसमें उन्होंने केंद्र की तरफ से रखे गए कर सुधार प्रस्ताव पर विस्तार से चर्चा की। इसमें कर दरों में कटौती और कारोबारियों के लिए अनुपालन बोझ को कम करने का प्रस्ताव है।

केंद्र व्यक्तिगत बीमा प्रीमियम पर छूट देने के पक्ष में

नई दिल्ली। बिहार के उपमुख्यमंत्री और बीमा पर गठित मंत्रियों के समूह (जीओएम) के संयोजक सम्राट चौधरी ने बुधवार को कहा कि केंद्र ने व्यक्तिगत जीवन और स्वास्थ्य बीमा पॉलिसी को माल एवं सेवा कर (जीएसटी) से छूट देने का प्रस्ताव रखा है। फिलहाल जीवन बीमा और स्वास्थ्य बीमा पॉलिसी के प्रीमियम भुगतान पर 18 प्रतिशत की दर से जीएसटी लगता है। बीमा पर गठित मंत्री समूह की यहां आयोजित बैठक में लगभग सभी राज्यों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया। हालांकि, तेलंगाना के उपमुख्यमंत्री मल्लु भट्टी विक्रमार्क ने कहा कि राज्यों ने यह सुनिश्चित करने की मांग रखी है कि कर कटौती का लाभ बीमा कंपनियों को नहीं बल्कि सीधे पॉलिसीधारकों को मिले। उन्होंने कहा, राज्य चाहते थे कि कर की दर या तो घटाई जाए या फिर इसमें छूट दी जाए। साथ ही कई राज्यों ने कहा कि कोई ऐसी व्यवस्था बनाई जानी चाहिए ताकि दरों में कटौती का लाभ लोगों तक पहुंच सके। जीएसटी परिषद इसकी एक व्यवस्था तय करेगी। विक्रमार्क ने कहा कि व्यक्तिगत बीमा पॉलिसी पर जीएसटी छूट दिए जाने से सालाना करीब 9,700 करोड़ रुपये की राजस्व क्षति होने का अनुमान है। चौधरी ने कहा कि मंत्री समूह अब अपनी रिपोर्ट जीएसटी परिषद को सौंपेगा जिसमें राज्यों की राय और चिंताएं शामिल होंगी। चौधरी ने कहा, केंद्र का प्रस्ताव स्पष्ट है कि व्यक्तिगत बीमा पॉलिसी पर जीएसटी से छूट दी जाए। सभी राज्यों ने दरों को कम करने पर अपनी रजामंदी दी है। हालांकि, कुछ राज्यों ने इस पर अपने विचार रखे हैं। इस बारे में अंतिम निर्णय जीएसटी परिषद लेगी। बीमा पर जीएसटी छूट देने का प्रस्ताव केंद्र के अगली पीढ़ी के जीएसटी सुधारों का हिस्सा है।

जीएसटी दर को युक्तिसंगत बनाने के लिए गठित मंत्री समूह को कर स्लैब एवं दरों में बदलाव और कुछ क्षेत्रों में शुल्क उलटफेर की समस्या खत्म करने का दायित्व सौंपा गया है। यह समूह 21 अगस्त को फिर बैठक करेगा। बीमा संबंधी मंत्री समूह स्वास्थ्य एवं जीवन बीमा प्रीमियम पर कर दर घटाने पर विचार कर रहा है जबकि क्षतिपूर्ति उपकर पर बना समूह ऋण भुगतान अवधि के बाद उपकर के भविष्य पर निर्णय लेगा।

कपड़ा, हीरा व रसायन क्षेत्र के एमएसएमई अमेरिकी शुल्क से सबसे अधिक होंगे प्रभावित

- क्रिसिल इंटेलिजेंस की एक रिपोर्ट में किया गया दावा

कोलकाता, एजेंसी

अमेरिका के उच्च शुल्क लगाए जाने से सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र पर काफी असर पड़ेगा, जो भारत के निर्यात में 45 प्रतिशत का योगदान करता है। कपड़ा, हीरा और रसायन क्षेत्र के एमएसएमई पर इसका सबसे गंभीर असर होने की आशंका है। क्रिसिल इंटेलिजेंस की एक रिपोर्ट में यह बात कही गई।

रिपोर्ट में कहा गया है कि अमेरिका भारतीय वस्तुओं पर 25% का शुल्क लगाता है और 25% का अतिरिक्त शुल्क 27 से प्रभावी होगा। इससे कुल शुल्क 50% होगा जिसका भारत के कई क्षेत्रों पर प्रभाव पड़ेगा। अमेरिका को भारत के निर्यात में कपड़ा, रत्न व आभूषण की हिस्सेदारी 25 प्रतिशत है और इसके सबसे अधिक प्रभावित होने की आशंका है। इन क्षेत्रों में एमएसएमई की हिस्सेदारी 70% से अधिक है और इन पर इसका सबसे अधिक असर पड़ेगा। एक अन्य क्षेत्र जिसे दबाव का सामना करना पड़ सकता है, वह है रसायन जहां एमएसएमई की हिस्सेदारी 40 प्रतिशत है।

रसायन क्षेत्र में जापान व द. कोरिया से प्रतिस्पर्धा

रिपोर्ट में कहा गया कि गुजरात के सूरत स्थित रत्न एवं आभूषण क्षेत्र, शुल्क का झटका महसूस करेगा। देश के रत्न एवं आभूषण निर्यात में हीरे की हिस्सेदारी 50% से अधिक है और अमेरिका इसका एक प्रमुख उपभोक्ता है। रसायन क्षेत्र में भी भारत को जापान और दक्षिण कोरिया से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। इन देशों में शुल्क कम है। इस्पात क्षेत्र में अमेरिकी शुल्क का एमएसएमई पर नगण्य प्रभाव पड़ने का अनुमान है क्योंकि ये इकाइयां मुख्यत: री-रोलिंग और लंबे उत्पादों में लगी हुई हैं।

शुल्क अनिश्चितताओं के बीच केंद्रीय बैंक को सतर्क रहने की जरूरत: मल्होत्रा

मुंबई, एजेंसी

आरबीआई के गवर्नर संजय मल्होत्रा ने कहा है कि शुल्क को लेकर अनिश्चितताएं अभी भी जारी हैं, इसलिए केंद्रीय बैंक को सतर्क रहने की जरूरत है। उन्होंने इस महीने के शुरू में मौद्रिक नीति समिति की बैठक में रेपो दर को यथावत रखने के पक्ष में मतदान करते हुए यह बात कही थी।

आरबीआई ने बुधवार को चार-छह अगस्त के दौरान हुई एमपीसी की बैठक का ब्योरा जारी किया। केंद्रीय बैंक के गवर्नर के साथ एमपीसी के अन्य सभी पांच सदस्यों ने रेपो दर को

- आरबीआई गवर्नर बोले- निकट भविष्य में मुद्रास्फीति लक्ष्य से कम रहने की संभावना

5.5 प्रतिशत पर बरकरार रखने के पक्ष में मतदान किया था। मल्होत्रा ने कहा, कुल मिलाकर हमारी अर्थव्यवस्था मजबूती, स्थिरता और अवसर की तस्वीर पेश करती है। भारत की मजबूत आर्थिक स्थिति, विकास को बढ़ावा देने वाली नीतियां और दूरदर्शी रणनीति देश को एक मजबूत स्थिति में रखती हैं। उन्होंने कहा कि हालांकि वृद्धि दर स्थिर बनी हुई है, लेकिन खाद्य कीमतों में नरमी के कारण मुद्रास्फीति के परिणाम अपेक्षाकृत अधिक अनुकूल रहे हैं। मल्होत्रा ने कहा, हालांकि निकट भविष्य में मुद्रास्फीति लक्ष्य से कम रहने की संभावना है और मासिक आंकड़े दो प्रतिशत के निचले संतोषजनक स्तर को भी पार कर सकते हैं, लेकिन तीसरी तिमाही से सकल (हेडलाइन) मुद्रास्फीति में थोड़ी वृद्धि होने का अनुमान है।

आठ बुनियादी उद्योगों की वृद्धि जुलाई में सुस्त पड़कर दो प्रतिशत पर

नई दिल्ली। देश के आठ बुनियादी क्षेत्रों की वृद्धि दर जुलाई, 2025 में सुस्त पड़कर दो प्रतिशत रही। एक साल पहले इसी माह में इन क्षेत्रों का उत्पादन 6.3 प्रतिशत बढ़ा था। आठ बुनियादी उद्योगों का उत्पादन जून में 2.2 प्रतिशत बढ़ा था। कोयला, कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस और रिफाइनरी उत्पादों जैसे पांच प्रमुख क्षेत्रों के उत्पादन में जुलाई में गिरावट दर्ज की गई। चालू वित्त वर्ष 2025-26 की अप्रैल-जुलाई अवधि में आठ बुनियादी ढांचा उद्योगों का उत्पादन 1.6 प्रतिशत बढ़ा है जबकि पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में बुनियादी उद्योगों की वृद्धि 6.3 प्रतिशत रही थी।

निर्यात पर अंकुश में ढील सकारात्मक संकेत लेकिन भारत को इस पर निर्भरता घटानी होगी

नई दिल्ली, एजेंसी

भारत को दुर्लभ खनिजों और उर्वरकों के निर्यात पर पाबंदियों में ढील देने का चीन का फैसला एक सकारात्मक संकेत है। हालांकि भारत को पड़ोसी देश पर अपनी निर्भरता कम करने के लिए काम करना चाहिए जिसके साथ उसका 100 अरब अमेरिकी डॉलर का व्यापार घाटा चिंताजनक है।

आर्थिक शोध संस्थान जीटीआरआई ने बुधवार को यह बात कही। ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) ने कहा कि 2014 से 2024 के बीच भारत के आयात

- जीटीआरआई ने कहा- 100 अरब डॉलर का व्यापार घाटा चिंताजनक

परिदृश्य पर चीन का प्रभुत्व और अधिक बढ़ गया है। भारत के दूरसंचार और इलेक्ट्रॉनिक आयात में इसकी हिस्सेदारी 57.2 प्रतिशत तक पहुंच गई, जबकि मशीनरी एवं हार्डवेयर में यह 44 प्रतिशत है। रसायन एवं दवा के आयात में 28.3 प्रतिशत के साथ यह दूसरे स्थान पर रहा। जीटीआरआई के अनुसार, भारत के लिए एकमात्र वास्तविक सुरक्षा उपाय, निर्भरता कम करके, गहन विनिर्माण में निवेश करके और एक सच्चा उत्पाद राष्ट्र बनकर घरेलू स्तर पर मजबूती बनाना है। जीटीआरआई के संस्थापक अजय श्रीवास्तव ने कहा, एक मजबूत एवं अधिक आत्मनिर्भर भारत, चीन के साथ समान स्तर पर बातचीत करने में बेहतर स्थिति में होगा तथा अचानक बदलावों का शिकार होने के बजाय संबंधों को स्थिर एवं व्यावहारिक बनाए रखेगा।

राष्ट्रीय

संशोधन विधेयक की प्रतियां फाड़ कागज उछाले

लोकसभा में सत्तापक्ष और विपक्ष के सदस्य हुए आमने-सामने, सदन में हुई तीखी नोकझोंक

नई दिल्ली, एजेंसी

गंभीर आपराधिक आरोपों में गिरफ्तार और लगातार 30 दिन हिरासत में रखे गए प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्रियों और मंत्रियों को पद से हटाने के प्रावधान वाले तीन विधेयक बुधवार को लोकसभा में पेश किए जाने के दौरान हंगामे की स्थिति रही और विपक्षी सदस्यों ने विधेयकों की प्रतियां फाड़ी तथा कागज फाड़कर भी उछाले। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने विपक्ष के विरोध और हंगामे के बीच सदन में 'संविधान (130वां संशोधन) विधेयक, 2025, संघ

लोकसभा में फाड़े गए कागज के टुकड़े गृह मंत्री के सामने उड़ते हुए।

राज्य क्षेत्र शासन (संशोधन) विधेयक, 2025' और 'जम्मू कश्मीर पुनर्गठन (संशोधन) विधेयक, 2025' पेश किए।

बाद में उनके प्रस्ताव पर सदन ने तीनों विधेयकों को संसद की संयुक्त समिति को भेजने का निर्णय लिया। इस दौरान सत्तापक्ष और विपक्ष के कुछ सदस्यों को आमने-सामने आते हुए देखा गया और उनके बीच तीखी नोकझोंक हुई। तृणमूल कांग्रेस के कुछ सदस्यों को इस दौरान गृह मंत्री अमित शाह की ओर बढ़ते देखा गया। दो बार के स्थगन के बाद सदन की बैठक दोपहर 2 बजे फिर शुरू हुई तो विपक्षी सदस्य पहले से ही खड़े होकर इन तीनों विधेयकों के खिलाफ नारे लगा रहे थे जिन्हें सरकार पेश करने जा रही थी। तृणमूल कांग्रेस के सदस्यों ने विधेयक की प्रतियां फाड़ दीं और कागज के टुकड़े गृह मंत्री के सामने फेंके। इस दौरान गृह मंत्री विधेयकों को संसद की संयुक्त समिति को भेजने का प्रस्ताव पेश कर रहे थे।

इसी हंगामे में, तृणमूल कांग्रेस सांसद कल्याण बनर्जी को शाह के सामने लगे माइक्रोफोन को खींचते हुए और उसके पास नारे लगाने की कोशिश करते देखा गया। उधर भाजपा के सांसद भी आसन के सामने मौजूद विपक्षी सांसदों की तरफ बढ़ने लगे। केंद्रीय मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू जहां सत्ता पक्ष के आगे वाली सीटों के सामने आ गए, वहीं संसदीय कार्य मंत्री किरेन रीजीजू को गृह मंत्री के बगल में खड़े देखा गया। कांग्रेस सदस्य जोतिमणि और प्रणीति शिंदे विपक्षी सदस्यों के बीच विधेयकों की प्रतियां बांटती नजर आईं। विपक्षी सदस्यों ने विधेयक की प्रतियों को फाड़ दिया और कागज के टुकड़े उछालने लगे। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने इस हंगामे के बीच कार्यवाही अपराह्न 3 बजे तक के लिए स्थगित कर दी, लेकिन विपक्ष और सत्ता पक्ष के सदस्यों की नारेबाजी जारी रही।

वाम दलों ने दमनकारी, लोकतंत्र पर सीधा हमला बताया

नई दिल्ली। वामपंथी दलों ने बुधवार को कहा कि गंभीर आपराधिक आरोपों में गिरफ्तार प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्रियों को हटाने का प्रावधान करने वाले नए विधेयक लोकतंत्र और संघीय ढांचे पर सीधा हमला हैं और उन्होंने इसका पूरी ताकत से विरोध करने का संकल्प लिया। इस कदम की कड़ी आलोचना करते हुए माकपा महासचिव एमए बेबी ने एक्स पर कहा, मोदी सरकार द्वारा प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्रियों और मंत्रियों को 30 दिनों की हिरासत में रखने के बाद पद से हटाने के तीन विधेयक उसके नव-फासीवादी चरित्र को उजागर करते हैं। हमारे लोकतंत्र पर यह सीधा हमला है और माकपा डटकर इसका विरोध करेगी। हम सभी लोकतांत्रिक ताकतों से इस दमनकारी कदम के खिलाफ एकजुट होने का आग्रह करते हैं। उन्होंने कहा, उच्च पदों पर अपराध से निपटने के नाम पर पेश किए गए ये विधेयक वास्तव में सरकार के असली इरादे को उजागर करते हैं क्योंकि आरएसएस-नियंत्रित मोदी सरकार का इतिहास निर्वाचित राज्य सरकारों को कमजोर करने का रहा है।

ममता ने पीएम, सीएम व मंत्रियों को हटाने संबंधी विधेयक की निंदा की

कोलकाता। बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने आपराधिक आरोपों में गिरफ्तार होने के बाद प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्रियों और मंत्रियों को पद से हटाने से संबंधित संविधान संशोधन विधेयक की बुधवार को निंदा की और आरोप लगाया कि यह भारत में लोकतांत्रिक युग को हमेशा के लिए समाप्त कर देगा। बनर्जी ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में यह भी दावा किया कि संशोधन विधेयक एक 'सुपर-आपातकाल' से भी बड़ा कदम है और यह देश की न्यायपालिका की स्वतंत्रता को समाप्त कर देगा।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने विपक्ष के विरोध और हंगामे के बीच लोकसभा में बुधवार को 'संविधान (130वां संशोधन) विधेयक, 2025', 'संघ राज्य क्षेत्र शासन (संशोधन) विधेयक, 2025' और 'जम्मू कश्मीर पुनर्गठन (संशोधन) विधेयक, 2025' पेश किए। बाद में उनके प्रस्ताव पर सदन ने तीनों विधेयकों को संसद की संयुक्त समिति को भेजने का निर्णय लिया है।

पैसा आधारित ऑनलाइन गेम गंभीर सामाजिक मुद्दा: वैष्णव

नई दिल्ली, एजेंसी

- कहा- समाज पर नकारात्मक प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा

इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बुधवार को कहा कि पैसे से जुड़ा ऑनलाइन गेम एक गंभीर सामाजिक और जन स्वास्थ्य समस्या बन गया है और इसका समाज पर नकारात्मक प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। वैष्णव ने बुधवार को लोकसभा में पैसे से खेले जाने वाले ऑनलाइन गेम पर प्रतिबंध लगाने वाले विधेयक को पारित करने के बाद कहा कि प्रस्तावित कानून ई-स्पोर्ट्स और सोशल गेमिंग को बढ़ावा देगा और भारत को ऐसे गेम के विकास का केंद्र बनाएगा।

वैष्णव ने बताया, हमारा प्रयास ई-स्पोर्ट्स और सोशल गेमिंग, ऑनलाइन सोशल गेमिंग को बढ़ावा देना है और हम चाहते हैं कि भारत एक गेमिंग विकास का केंद्र बने। इसके लिए पहले से ही कई प्रयास किए जा रहे हैं। मंत्री ने कहा कि जहां तक डिजिटल तकनीक का सवाल है, ऑनलाइन गेमिंग तीन मुख्य क्षेत्रों के साथ एक प्रमुख क्षेत्र के रूप में उभरा है। उन्होंने कहा, दो क्षेत्र, ई-स्पोर्ट्स व ऑनलाइन सोशल गेमिंग, समाज के लिए अच्छे हैं। हम तीन में से दो क्षेत्रों को बढ़ावा दे रहे हैं। इन दोनों को कानूनी मान्यता मिलेगी और इनका प्रचार किया जाएगा। यह विधेयक एक प्राधिकरण बनाएगा जो मूलरूप से ई-स्पोर्ट्स और ऑनलाइन सोशल गेमिंग को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम और योजनाएं बनाएगा। मंत्री ने कहा कि तीसरा क्षेत्र, पैसे से जुड़ा ऑनलाइन गेम है, जो समाज को नुकसान पहुंचा रहा है और यह एक प्रमुख सामाजिक और सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या के रूप में उभरा है।

दिल्ली के 50 स्कूलों को मिली बम से उड़ाने की धमकी, पुलिस ने शुरू किया तलाश अभियान

नई दिल्ली, एजेंसी

- 18 अगस्त को दिल्ली के 32 स्कूलों को इसी तरह की धमकी मिली थी

राष्ट्रीय राजधानी के स्कूलों को बम की धमकी मिलने का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। अब दिल्ली के करीब 50 स्कूलों को बुधवार को ईमेल के जरिए बम की धमकी मिली, जिसके बाद पुलिस और अन्य आपातकालीन एजेंसियों ने तलाश अभियान शुरू किया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, दिल्ली के लगभग 50 स्कूलों को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। इनमें द्वारका स्थित राहुल मॉडल स्कूल और मैक्सफोर्ट स्कूल, मालवीय नगर स्थित एसकेवी और प्रसाद नगर स्थित आंध्रा स्कूल शामिल हैं। दिल्ली अग्निशमन सेवा के अनुसार, दो स्कूलों- मालवीय नगर स्थित एसकेवी और प्रसाद नगर स्थित आंध्रा स्कूल में बम की धमकी की सूचना क्रमशः सुबह सात बजकर 40 मिनट पर और सात बजकर 42 मिनट पर मिली। अधिकारियों ने बताया कि पुलिस टीम, अग्निशमनकर्मी और बम निरोधक दस्ते तुरंत स्कूल पहुंचे। महज दो दिन पहले 18 अगस्त को दिल्ली के 32 स्कूलों को इसी तरह की धमकी मिली थी, जो बाद में झूठी निकलीं।

हाईकोर्ट को बम की धमकी वाला ईमेल मिला

चंडीगढ़। पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय को बुधवार को एक ई-मेल प्राप्त हुआ, जिसमें परिसर में बम रखे होने की धमकी दी गई थी। ईमेल मिलने के बाद, अदालत प्रशासन ने तुरंत चंडीगढ़ पुलिस को सूचित किया जिसने परिसर में तलाशी ली। अधिकारियों ने बताया कि तलाशी अभियान के दौरान परिसर में कोई संदिग्ध वस्तु नहीं पाई गयी। उन्होंने बताया कि उच्च न्यायालय को धमकी भरा ई-मेल मिलने की सूचना प्राप्त होने के बाद पुलिस ने बम निरोधक दस्ता, तोड़फोड़ निरोधक दल और श्वान दस्ते को तैनात किया।

दिल्ली के दरियागंज में इमारत ढहने से तीन मजदूरों की मौत

- निर्माण कार्य के दौरान हुआ हादसा, बचाव कार्य जारी

नई दिल्ली। मध्य दिल्ली के दरियागंज में सद्भावना पार्क के पास बुधवार को तीन मंजिला इमारत के ढह जाने से तीन मजदूरों की मौत हो गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि मृतकों की पहचान जुबैर, गुलसागर और तौफीक के रूप में हुई है जो एक निर्माण स्थल पर काम कर रहे थे, तभी वह ढांचा ढह गया। ये तीनों मलबे में दब गए और अस्पताल ले जाने पर उन्हें मृत घोषित कर दिया गया।

अधिकारी ने बताया, घटना की सूचना दोपहर 12 बजकर 14 मिनट पर मिली, जिसके बाद पुलिस की एक टीम, दमकल की 4 गाड़ियां व बचाव दल के अधिकारी मौके पर पहुंचे। घायलों को एलएनजेपी अस्पताल ले जाया गया है। जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण सहित नगर निगम के अधिकारियों को सूचित कर दिया गया है और बचाव कार्य जारी है। तथ्यों की पुष्टि के बाद कानूनी कार्रवाई की जाएगी। दिल्ली अग्निशमन सेवा के एक अधिकारी ने बताया कि निर्माण कार्य जारी था, तभी अचानक इमारत ढह गई। अधिकारी ने बताया, तीन को मलबे से निकाला गया और तुरंत अस्पताल ले जाया गया। घटना के तुरंत बाद एनडीआरएफ की कई टीम दिल्ली पुलिस, दमकल कर्मियों और डीडीएमए के कर्मचारियों के साथ मिलकर काम कर रही है।

जद्दोजहद

देश के कई राज्यों में भारी बारिश हो रही है, इसको लेकर अलर्ट जारी किया गया है। गुजरात में एनडीआरएफ के जवान बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में फंसे लोगों को बचाते हुए। एजेंसी

वर्ल्ड ब्रीफ

नासा ने यूरेनस की कक्षा में नया लघु चंद्रमा खोजा

न्यूयॉर्क। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने कहा है कि उसके वेब स्पेस टेलीस्कोप ने सौरमंडल के सातवें ग्रह यूरेनस की कक्षा में एक नया, अत्यंत छोटा चंद्रमा खोजा है। नासा द्वारा मंगलवार को जारी बयान के अनुसार, यह चंद्रमा लगभग 10 किलोमीटर चौड़ा प्रतीत होता है और इसे इसी वर्ष फरवरी में वेब टेलीस्कोप के 'नियर इन्फ्रारेड कैमरे' के माध्यम से देखा गया था। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह चंद्रमा अपनी अत्यंत क्षीण चमक और छोटे आकार के कारण अब तक छिपा रहा, यहां तक कि लगभग 40 वर्ष पहले यूरेनस के समीप से गुजरे वॉयेजर-2 अंतरिक्ष यान की निगाहों से भी यह बचा रहा। यूरेनस के अब तक 28 ज्ञात चंद्रमा हैं, जिनके नाम विलियम शेक्सपियर और अलेक्जेंडर पोप की रचनाओं के पात्रों पर रखे गए हैं।

यूक्रेन में सैनिक तैनात नहीं करेंगे ब्रिटेन, फ्रांस

मास्को। ब्रिटेन और फ्रांस यूक्रेन में अपने हजारों सैनिक तैनात करने का कोई इरादा नहीं है लेकिन तथाकथित "इच्छुक गठबंधन" यूक्रेन की सुरक्षा की गारंटी के लिये वैकल्पिक तरीकों पर विचार कर रहा है। द टाइम्स अखबार की मंगलवार को जारी रिपोर्ट में यह खबर दी गयी। जिसके अनुसार इच्छुक गठबंधन यूक्रेन को हवाई और समुद्री हमलों से बचाने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। साथ ही वह यूक्रेनी सशस्त्र बलों को फिर से मजबूत करने में मदद के लिये जमीनीस्तर पर सैन्य प्रशिक्षकों को तैनात कर रहा है।

व्हाइट हाउस ने टिकटॉक अकाउंट शुरू किया

वाशिंगटन। अमेरिका में 'व्हाइट हाउस' ने मंगलवार को आधिकारिक तौर पर अपना टिकटॉक अकाउंट लॉन्च किया। गौरतलब है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा इस सोशल मीडिया ऐप को लगभग सितंबर तक नये मालिक की तलाश करने या फिर देश में प्रतिबंध का सामना करने की समय सीमा संबंधी धमकी के बीच हुआ है। इस अकाउंट पर मंगलवार दोपहर को पहला वीडियो पोस्ट किया गया। यह 27 सेकंड की एक क्लिप है जिसमें श्री ट्रम्प को अपने समर्थकों के साथ बातचीत करते हुए दिखाया गया है।

मैक्सिको अमेरिकी सैन्य अभ्यास पर नाराज

मेक्सिको सिटी। मेक्सिको की राष्ट्रपति क्लाउडिया शीनबाम ने मंगलवार को वेनेजुएला के पास कैरेबियन सागर में अमेरिकी सैन्य अभ्यास की आलोचना की। शीनबाम ने कहा कि सभी विवादों का समाधान बातचीत के ज़रिए होना चाहिए, उन्होंने अपनी सरकार के हस्तक्षेप न करने और लोगों के आत्मनिर्णय के आह्वान को दोहराया। वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो ने कहा कि उन्होंने अपने देश के खिलाफ युद्ध की अमेरिकी धमकी विफल करने के लिए देश में 45 लाख स्वयं सेवकों को संगठित करने का फैसला किया है।

आस्ट्रेलिया: सोशल मीडिया का इस्तेमाल नहीं कर पाएंगे बच्चे

सिडनी, एजेंसी

- अगले चार महीने में लागू होगा कानून, 16 तक के बच्चों पर लगाया जाएगा प्रतिबंध

अगले चार महीनों में ऑस्ट्रेलिया में लागू होने जा रहे एक कानून के तहत 16 वर्ष से कम आयु के बच्चों के फेसबुक, स्नैपचैट, टिकटॉक, इंस्टाग्राम, एक्स, रेडिट और यूट्यूब जैसे सोशल मीडिया मंच का उपयोग करने पर प्रतिबंध लग जाएगा।

संघीय सरकार ने कहा है कि सोशल मीडिया कंपनियों को 10 दिसंबर तक इन नाबालिग उपयोगकर्ताओं के सोशल मीडिया खातों को हटाने और आयु सत्यापन सॉफ्टवेयर के माध्यम से इन्हें नए खाते बनाने से रोकने के लिए उचित कदमउठाने होंगे। इस कानून के तहत माता-पिता की अनुमति से भी बच्चों को इन सोशल मीडिया मंचों तक पहुंच नहीं दी जा सकेगी। इस फैसले पर देशभर में तीखी बहस हो रही है।

कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि सोशल मीडिया के माध्यम से युवा स्वयं को व्यक्त करते हैं, अपनी पहचान बनाते हैं और सामाजिक जुड़ाव महसूस करते हैं। एक ऐसे समाज में, जहां हर पांच में से दो बच्चे खुद को अकेला महसूस करते हैं, यह जुड़ाव काफी महत्वपूर्ण हो सकता है। वहीं दूसरी ओर, सोशल मीडिया की लत से वंचित रह जाने का अंदेशा बच्चों को इन सोशल मीडिया मंचों पर अत्यधिक समय बिताने के लिए प्रेरित करता है।

किस मुकाम पर ले जा सकती है..

चीन से नई साझेदारी

अमेरिका के भारत पर 50 प्रतिशत का बड़ा और दंडात्मक टैरिफ लगाने के घटनाक्रम से उपजी परिस्थितियों का नतीजा है कि चीन से आपसी संबंधों में लंबे समय तक खटास के बाद भारत अब एक बार फिर उसके साथ नई साझेदारी की ओर बढ़ा है। चीन के विदेश मंत्री वांग यी की यात्रा के दौरान सीमा पर शांति, सीमा व्यापार फिर खोलने और दोनों देशों के बीच सीधी उड़ान शुरू करने जैसे कई प्रमुख समझौते हुए हैं, जिनके आगे चलकर दूरगामी परिणाम सामने आने की उम्मीद है। हालांकि यह बड़ा सवाल अपनी जगह कायम है कि अमेरिका से संबंधों में तनाव का सामना कर रहे भारत को पुराने तमाम कटु अनुभवों को देखते हुए चीन के साथ नई साझेदारी से कितनी राहत मिलेगी।

दोनों देशों के बीच प्रमुख समझौते

- दोनों देशों ने व्यापार घाटे को कम करने और द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ावा देने के लिए नया समझौता किया है।
- सीमा विवादों को शांतिपूर्ण ढंग से हल करने और शांति बनाए रखने के लिए दोनों देशों ने सहमति जताई है।
- सांस्कृतिक और लोगों से लोगों के बीच संबंध मजबूत करने का फैसला, सीधी उड़ान शुरू करना इसी के तहत।

चीन के साथ नई साझेदारी से क्या हैं उम्मीदें

- भारत और चीन के बीच संबंधों को रणनीतिक साझेदारी के रूप में देखा जा रहा है, जो एक-दूसरे के हितों को मान्यता देने और सहयोग को बढ़ावा देने पर आधारित है।
- दोनों देशों की यह साझेदारी व्यापार, निवेश, सीमा प्रबंधन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के साथ कई और क्षेत्रों में सहयोग पर केंद्रित है।
- दोनों देशों के संबंधों में बीच पिछले कई वर्षों से विश्वास की कमी रही है, इसलिए इस नई साझेदारी का उद्देश्य विश्वास की बहाली और आपसी समझ को बढ़ाना भी है।

दूरगामी परिणाम

- भारत को अपने निर्यात को बढ़ाने और व्यापार घाटे को कम करने में मदद मिल सकती है।
- एक मजबूत साझेदारी से भारत को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी स्थिति मजबूत करने में मदद मिल सकती है।
- चीन की साझेदारी से अमेरिका पर दबाव बनाने में मदद मिल सकती है, खासकर अमेरिकी टैरिफ मामले में।

रहना होगा सतर्क

विशेषज्ञों के मुताबिक भारत को चीन के साथ सीमा विवादों के प्रति सतर्क रहने की जरूरत होगी, साथ ही उस पर अपनी आर्थिक निर्भरता कम करनी होगी। चीन के साथ संभावित सैन्य संघर्ष के लिए अपनी सैन्य क्षमताओं को मजबूत करना भी जारी रखना होगा।

अमेरिका पर दबाव

- भारत-चीन साझेदारी का असर अमेरिका की टैरिफ पॉलिसी पर तुरंत नहीं पड़ेगा क्योंकि टैरिफ नीतियां जियोइकॉनॉमिक-रणनीति पर आधारित होती हैं।
- चीन के साथ बेहतर पहुंच भारत को अमेरिकी बाजार के नुकसान का आंशिक प्रतिस्थापन और तीसरे बाजारों में प्रतिस्पर्धा बढ़ाने का मौका दे सकती है।
- चीन के सहयोग से विनिर्माण बढ़ने पर भारत कुछ अमेरिकी टैरिफ-प्रभावित क्षेत्रों में वैश्विक सप्लायर के रूप में उभर सकता है, मगर ये आसान नहीं होगा।
- भारत-चीन समीकरण से वैश्विक ब्लॉकों में कोई बड़ा बदलाव आता है, तो अमेरिका पर दबाव बन सकता है कि वह अपनी व्यापार नीति पर पुनर्विचार करे।

एक्सपर्ट कमेंट...

सामरिक मामलों के जाने-माने विश्लेषक ब्रह्मा चेलानी ने कहा है, भारत और चीन के के रिश्तों पर जमी बर्फ के पिघलने की संभावना तो बढ़ी है लेकिन लग रहा है कि सीमा की समस्या पर उनका नजरिया अलग है, साथ ही हाल के दिनों में जिन मुद्दों पर उनकी सहमति बनी है वो भी अलग-अलग हैं। दोनों ओर के बयानों से ऐसा लगता है दोनों देशों की सेनाएं डिसइंगेजमेंट की पहल करेंगी, तनाव कम करेंगी और आखिर में अपने-अपने क्षेत्र में लौट जाएंगी, लेकिन ये लंबी और मुश्किल प्रक्रिया होगी।

रूस ने दिलाया भरोसा, भारत पर ट्रंप के लगाए प्रतिबंधों से निपटने में सक्षम

रूस के दूत रोमन बाबुश्किन ने कहा- ट्रंप का भारत पर दबाव डालना अनुचित

नई दिल्ली, एजेंसी

रूस के प्रभारी राजदूत रोमन बाबुश्किन ने बुधवार को कहा कि रूसी कच्चे तेल की खरीद के लिए भारत के खिलाफ अमेरिका की दंडात्मक कार्रवाई से उत्पन्न होने वाली किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए रूस के पास एक विशेष तंत्र है। भारतीय वस्तुओं पर शुल्क को दोगुना करके 50 प्रतिशत करने के अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के फैसले के बाद भारत और अमेरिका के संबंध तनावपूर्ण हुए हैं।

बाबुश्किन ने यहां संवाददाता सम्मेलन में कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में नई दिल्ली के साथ अपने देश के संबंधों में तेजी से सुधार होने की उम्मीद जताई और कहा कि विभिन्न सैन्य साजोसामान व उपकरण की आवश्यकता के लिए रूस भारत का पसंदीदा साझेदार रहा है। उन्होंने रूसी तेल की खरीद बंद करने को लेकर भारत पर अमेरिका की ओर से निरंतर दबाव बनाए जाने को अनुचित बताया और कहा कि इस तरह का दृष्टिकोण और प्रतिबंध वैश्विक आर्थिक स्थिरता व ऊर्जा सुरक्षा के लिए हानिकारक है।

बाबुश्किन ने कहा, भारत के लिए यह एक चुनौतीपूर्ण स्थिति है। हमें भारत के साथ अपनी साझेदारी पर भरोसा है। हम दोनों देशों के बीच ऊर्जा संबंधों में आने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने विश्वास जताया कि भारत-रूस ऊर्जा सहयोग बढ़ता रहेगा। पिछले हफ्ते अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने चेतावनी दी थी कि अगर भारत रूसी कच्चे तेल की ख़रीद जारी रखता है तो ट्रंप प्रशासन भारत पर शुल्क बढ़ा सकता है। अमेरिका ने रूस के साथ ऊर्जा संबंधों के कारण भारत पर 25 प्रतिशत अतिरिक्त शुल्क लगाया है, लेकिन उसने रूसी कच्चे तेल के सबसे बड़े खरीदार चीन के ख़िलाफ़ ऐसी कोई कार्रवाई नहीं की है। भारत रूसी कच्चे तेल की अपनी खरीद का बचाव करते हुए यह कहता रहा है कि उसकी ऊर्जा खरीद राष्ट्रीय हित और बाजार की गतिशीलता से प्रेरित है।

जयशंकर ने मॉस्को में प्रमुख विद्वानों और थिंक टैंक के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत की।

भारतीय निर्यात का स्वागत, ब्रिक्स की शक्ति बढ़ेगी

बाबुश्किन ने कहा, प्रतिबंध का असर उन्हें लगाने वालों पर ही पड़ रहा है। हमें विश्वास है कि बाहरी दबाव के बावजूद भारत-रूस ऊर्जा सहयोग जारी रहेगा। उन्होंने कहा, रूस भारत को कच्चे तेल का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है और भारत की मांग बढ़ रही है। निस्संदेह, यह हमारी अर्थव्यवस्थाओं के बीच आपसी सामंजस्य और पूरकता का एक आदर्श उदाहरण है। बाबुश्किन ने कहा कि दोनों पक्ष 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को 100 अरब अमेरिकी डॉलर तक ले जाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। भारतीय वस्तुओं पर अमेरिकी शुल्क के बारे में पूछे गए एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि रूसी बाजार भारतीय निर्यात का स्वागत करेगा। मौजूदा वैश्विक उथल-पुथल के बीच एक स्थिर शक्ति के रूप में ब्रिक्स की भूमिका बढ़ेगी।

यूक्रेन युद्ध रुकवाने को भारत पर लगाईं पाबंदी : व्हाइट हाउस

न्यूयॉर्क। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने कहा है कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रूस और यूक्रेन के बीच संघर्ष को समाप्त करने के लिए भारत पर पाबंदियां लगाई हैं। ट्रंप ने अमेरिका आने वाली भारतीय वस्तुओं पर 25 प्रतिशत का शुल्क लगा रखा है। रूसी तेल की खरीद को लेकर 25 प्रतिशत का अतिरिक्त शुल्क 27 अगस्त से प्रभावी होगा। एक प्रश्न का उत्तर देते हुए लेविट ने कहा कि ट्रंप ने करीब चार साल से जारी युद्ध को समाप्त करने के लिए जबर्दस्त सार्वजनिक दबाव डाला है। उन्होंने कहा, जैसा कि आपने देखा है उन्होंने भारत पर पाबंदियों सहित कई कदम उठाए गए हैं। उन्होंने स्पष्ट कर दिया है कि वह इस युद्ध को समाप्त होते देखना चाहते हैं। लेविट ने कहा, 'राष्ट्रपति जल्द से जल्द इस युद्ध को समाप्त करना चाहते हैं। रूस ने फरवरी, 2022 में यूक्रेन पर हमला कर दिया था। इससे पहले 'सीएनबीसी' के साथ साक्षात्कार में अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने भारत पर रूस से तेल खरीद उसे अन्य स्थान पर फिर से बेचकर मुनाफाखोरी करने का आरोप लगाया था। भारत ने अमेरिका द्वारा लगाए गए शुल्क को अनुचित बताया है।

पाकिस्तान के बजाय अफगानिस्तान पहुंचे चीनी विदेश मंत्री

नई दिल्ली। चीन के विदेश मंत्री वांग यी अपनी प्रस्तावित पाकिस्तान यात्रा के कार्यक्रम में बदलाव करते हुए अफगानिस्तान पहुंच गए हैं। वह काबुल में छठी चीन-अफ़ग़ानिस्तान-पाकिस्तान त्रिपक्षीय विदेश मंत्रियों की वार्ता में भाग लेने वहां गए हैं।

इस वार्ता में तीनों देशों के बीच राजनीतिक, आर्थिक और क्षेत्रीय सहयोग सहित कई प्रमुख मुद्दों पर चर्चा होगी। वांग यी की बीते तीन सालों में यह पहली अफगानिस्तान यात्रा है। पाकिस्तान के उप-प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री इशाक डार इस बैठक में भाग लेने के लिए काबुल पहुंच चुके हैं। अफगानिस्तान के विदेश मंत्रालय ने काबुल में त्रिपक्षीय वार्ता के लिए वांग यी और डार के आगमन की घोषणा करते हुए कहा, इस बैठक में तीनों देशों के बीच राजनीतिक, आर्थिक और क्षेत्रीय सहयोग सहित कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर व्यापक चर्चा होगी।

कहा गया है कि चर्चाएँ विशेष रूप से राजनीतिक, आर्थिक और क्षेत्रीय सहयोग के साथ-साथ आपसी हितों, समझ और संवर्धित सहयोग के आधार पर संबंधों के भविष्य पर केंद्रित होंगी।

इजराइली सेना की गाजा में और तीव्र युद्ध की तैयारी

यरूशलम, एजेंसी

- 50 हजार रिजर्व सैनिक भेजकर दोगुनी की जाएगी तैनाती

इजराइली सेना गाजा में नए चरण के तहत और तीव्र युद्ध की तैयारी कर रही है। इसके तहत 50 हजार रिजर्व सैनिकों की तैनाती की जा रही है जिसके बाद सैनिकों की तैनाती दोगुनी हो जाएगी। इस बीच टैंक और बख्तरबंद गाड़ियों के निर्माण के लिए 1.5 अरब अमेरिकी डॉलर की योजना भी मंजूर की गई है।

इजराइली सेना के एक अधिकारी ने बुधवार को बताया कि शीर्ष सैन्य अधिकारियों ने गाजा के कुछ सबसे घनी आबादी वाले इलाकों में अभियान के एक नए चरण को शुरू करने की योजना को मंजूरी दे दी। अधिकारी ने नाम न उजागर करने की शर्त पर बताया कि सेना गाजा शहर के उन हिस्सों में अभियान चलाएगी, जहां इजराइली सेना ने अभी तक कार्रवाई नहीं की है और जहां हमास अब भी सक्रिय है।

अधिकारी ने बताया कि सैन्य अधिकारियों से मंजूरी मिलने के बाद योजना अब अंतिम चरण की ओर बढ़ेगी। हालांकि, यह अभी स्पष्ट नहीं है कि अभियान कब शुरू होगा। अधिकारी ने बताया कि आने वाले महीने में 50,000 रिजर्व सैनिकों को बुलाया जाएगा, जिससे सक्रिय रिजर्व सैनिकों की संख्या लगभग दोगुनी होकर 1,20,000 हो जाएगी।

वेस्ट बैंक को विभाजित करने वाली बस्ती परियोजना मंजूर

तेल अवीव। इजराइल ने कब्जे वाले वेस्ट बैंक में एक विवादास्पद बस्ती परियोजना को बुधवार को अंतिम मंजूरी दे दी जो इस क्षेत्र को व्यावहारिक रूप से दो हिस्सों में विभाजित करेगी। फलस्तीनियों और मानवाधिकार समूहों का कहना है कि यह योजना भविष्य में संभावित फलस्तीनी राष्ट्र की स्थापना की संभावनाओं को समाप्त कर सकती है। यरुशलम के पूर्व में खुले भूभाग 'ई-1' में बस्ती के विकास पर दो दशकों से विचार किया जा रहा है, लेकिन अमेरिका के पूर्ववर्ती प्रशासनों के दबाव के कारण इस योजना को स्थगित कर दिया गया था। बुधवार को, इस परियोजना को योजना एवं निर्माण समिति से अंतिम मंजूरी मिल गई, क्योंकि इसके खिलाफ याचिकाएं छह अगस्त को खारिज कर दी गई थीं।

महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा पर भारत की संयुक्त राष्ट्र में पाकिस्तान को खरी-खरी

संयुक्त राष्ट्र, एजेंसी

भारत ने संयुक्त राष्ट्र में एक खुली बहस के दौरान पाकिस्तान की कड़ी आलोचना करते हुए 1971 में तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान में महिलाओं के खिलाफ हुए 'यौन हिंसा के जघन्य अपराधों' की ओर ध्यान आकर्षित किया और कहा कि यह सिलसिला आज भी बिना किसी दंड के जारी है।

बहस के दौरान पाकिस्तानी प्रतिनिधि की ओर से लगाए गए 'बेबुनियाद आरोप' पर मंगलवार को संक्षिप्त टिप्पणी करते हुए भारतीय राजनयिक एल्डोस मैथ्यू पुन्नूस ने कहा कि महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा की 1971 की घटनाएं शर्मनाक रिकॉर्ड का मामला है। पुन्नूस ने संघर्ष क्षेत्रों में यौन हिंसा से बचे लोगों के लिए जीवन रक्षक सेवाओं और सुरक्षा तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए अभिनव रणनीति विषय पर खुली बहस में अपनी राय रखी।

- भारतीय राजनयिक एल्डोस मैथ्यू पुन्नूस ने कश्मीर में यौन हिंसा के आरोपों पर दिया कड़ा जवाब

उन्होंने कहा, पाकिस्तानी सेना ने 1971 में जिस तरह बेखौफ होकर पूर्वी पाकिस्तान में महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा के जघन्य अपराध किए, वह शर्मनाक है। भारतीय राजनयिक स्पष्टतः 1971 में पूर्वी पाकिस्तान (मौजूदा बांग्लादेश) में बड़े पैमाने पर हुए नरसंहार और बलात्कार की घटनाओं का उल्लेख कर रहे थे। उन्होंने कहा, यह निंदनीय प्रवृत्ति आज भी बेरोकटोक और बिना किसी दंड के जारी है। पुन्नूस ने कहा, धार्मिक और जातीय अल्पसंख्यक समुदायों के खिलाफ उत्पीड़न के हथियार के रूप में हजारों कमजोर महिलाओं और लड़कियों के अपहरण, तस्करी, बाल विवाह, घरेलू दासता, यौन हिंसा और जबरन धर्मांतरण की खबरें एवं विवरण हाल ही में जारी ओएचसीएचआर रिपोर्ट में भी दिए गए हैं।

उन्होंने आरोप लगाया कि यह विडंबनापूर्ण है कि जो लोग इन अपराधों को अंजाम देते हैं, वे अब न्याय के चैंपियन के रूप में मुखौटा पहन रहे हैं। भारतीय राजनयिक ने कहा, दोहरापन और पाखंड स्वयंसिद्ध है। पुन्नूस संयुक्त राष्ट्र में पाकिस्तान के भारत पर लगाए गए इस आरोप का जवाब दे रहे थे कि कश्मीर में समुदायों को दंडित करने और अपमानित करने के लिए लंबे समय से यौन हिंसा का सहारा लिया जा रहा है।

वैश्विक चुनौतियों से मिलकर लड़ेंगे भारत और चीन

चीनी विदेश मंत्रालय ने कहा- दोनों देशों में सीमा प्रबंधन पर साझा समझ बनी

बीजिंग, एजेंसी

विदेश मंत्री वांग यी की नयी दिल्ली यात्रा के दौरान भारत और चीन के बीच सीमा प्रबंधन और नियंत्रण पर एक साझा समझ बनी है। चीन के विदेश मंत्रालय ने बुधवार को यह घोषणा की।

वांग ने 18 और 19 अगस्त को भारत की यात्रा की, जिस दौरान उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल और विदेश मंत्री एस जयशंकर के साथ व्यापक वार्ता की। वांग की यात्रा के परिणामों के बारे में जानकारी देते हुए, चीनी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता माओ निंग ने यहां प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि दोनों पक्ष विभिन्न क्षेत्रों में वार्ता तंत्र को बहाल करने, पारस्परिक रूप से लाभकारी सहयोग को गहरा करने, बहुपक्षवाद को कायम रखने, वैश्विक चुनौतियों से मिलकर निपटने और धमकाने वाली एकतरफा कार्रवाइयों का विरोध करने पर भी सहमत हुए।

उन्होंने कहा, सीमा के मुद्दे पर, दोनों पक्षों के बीच नई साझा समझ बनी है, जिसमें सामान्य प्रबंधन एवं नियंत्रण, सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति एवं सौहार्द बनाए रखने और उन क्षेत्रों में सीमा वार्ता शुरू करने पर सहमति व्यक्त की गई है जहां शर्तें पूरी होती हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की शुल्क घोषणाओं का स्पष्ट संदर्भ देते हुए निंग ने कहा कि अपनी बैठकों में, वांग ने यह भी कहा, मौजूदा परिस्थितियां चीन-भारत संबंधों के रणनीतिक महत्व और द्विपक्षीय सहयोग के रणनीतिक मूल्य को रेखांकित करती हैं।

शरीफ की चीन यात्रा के दौरान सीपीईसी का दूसरा चरण

इस्लामाबाद। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की इस महीने के अंत में निर्धारित चीन यात्रा के दौरान चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) के दूसरे चरण की औपचारिक शुरुआत होगी। योजना मंत्री अहसान इकबाल ने मंगलवार को सीपीईसी के दूसरे चरण की संयुक्त सहयोग समिति के आगामी सत्र और प्रधानमंत्री की निर्धारित बीजिंग यात्रा की तैयारियों की समीक्षा के लिए एक उच्च स्तरीय बैठक के दौरान इसकी आधिकारिक घोषणा की। 'डॉन' अखबार ने मंत्री इकबाल के हवाले से कहा, प्रधानमंत्री की आगामी चीन यात्रा के दौरान सीपीईसी के दूसरे चरण की औपचारिक शुरुआत होगी।

बांग्लादेश : फरवरी 2026 में आम चुनाव कराने की घोषणा

ढाका। बांग्लादेश के कानूनी मामलों के सलाहकार आसिफ नजरुल ने कहा है कि देश की अंतरिम सरकार अगले साल फरवरी में आम चुनाव कराने की अपनी प्रतिबद्धता पर "अडिग" है।

सरकारी संस्था बांग्लादेश संगबाद संस्था ने नजरुल के हवाले से कहा, सरकार चुनाव की सभी तैयारियां करते हुए आगे बढ़ रही है। मंगलवार को कैबिनेट विभाग में एक बैठक के बाद उन्होंने कहा, चुनाव फरवरी में होंगे और इस पर सरकार का रुख अटल है। कानूनी सलाहकार की यह टिप्पणी चुनावों को लेकर बढ़ती अटकलों के बीच आई है।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 21 अगस्त, गुरुवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास-भाद्रपद, पक्ष-कृष्ण पक्ष त्रयोदशी 13.44 तक तत्पश्चात चतुर्दशी।

आज का पंचांग

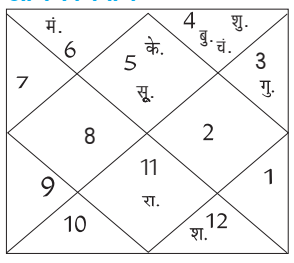

दिशाशूल- दक्षिण, ऋतु- वर्षा। चन्द्रबल-मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, धनु, मकर।

ताराबल अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती। चन्द्रबल वृषभ, कर्क, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ।

मेष — विवादों से दूर रहें। कार्यक्षेत्र में विपरीत परिस्थिति उत्पन्न होने पर शांत रहने की सलाह है। वाणी पर संयम रखना होगा। किसी भी विवाद में पड़ने से परेशानी खड़ी हो सकती है। आपको किसी से अहम सहयोग मिल सकता है। कार्य स्थल पर विरोधी पस्त रहेंगे।

वृष — आज धन और पद में वृद्धि के योग हैं। आज आर्थिक मामलों में लाभ होने की उम्मीद है। नौकरी करने वालों को प्रमोशन मिलने की आशा है। छात्र अगर किसी परीक्षा के लिए मेहनत कर रहे हैं तो उन्हें शुभ समाचार मिल सकता है। वैवाहिक जीवन में भी खुशियां रहेंगी।

मिथुन — आज हर मामले में आपका दिन बेहतरीन रहने वाला है। कार्य क्षेत्र में लाभ के योग बन रहे हैं। आपके पराक्रम में भी वृद्धि होने की आशा है। धन लाभ के शुभ योग बन रहे हैं। धन में वृद्धि होने से मन प्रसन्न रहेगा। रुके काम भी पूरे हो सकते हैं। सत्ता का सहयोग मिल सकता है।

कर्क — आज आपको कोई बात परेशान कर सकती है। कोई भी फैसला सोच-समझकर लें। व्यवसाय के मामले में योजना आगे बढ़ने के संकेत हैं। स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है। कार्यक्षेत्र में कुछ कठिनाइयां आने की संभावना है।

सिंह — आपको आज आर्थिक मामलों में सावधान रहना चाहिए। पैसों के लेन-देन के समय सतर्क रहें और जल्दबाजी में कोई फैसला न लें वरना नुकसान हो सकता है। अधीनस्थ कर्मचारी तनाव की वजह बन सकता है। धैर्य के साथ काम करें।

कन्या — कार्य क्षेत्र में कोई निर्णय लेने से उलझन हो सकती है। आर्थिक मामलों में दिन अच्छा होने के संकेत हैं। आज आपको सफलता मिल सकती है। मधुर वाणी और व्यवहार के कारण प्रतिष्ठा में वृद्धि हो सकती है। ससुराल पक्ष से लाभ मिल सकता है।

तुला — नौकरी की तलाश में लगे लोगों को शुभ समाचार मिल सकता है। पराक्रम में वृद्धि के योग हैं। आर्थिक मामलों में किए गए प्रयासों से उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। कार्यक्षेत्र या पास-पड़ोस में विवाद या झगड़े में पड़ने से बचना होगा।

वृश्चिक — लंबे समय से चले आ रहे कर्ज से छुटकारा मिलने की संभावना है। व्यापार के मामले में सफलता के योग हैं। स्वास्थ्य भी बेहतर होता जाएगा। खानपान पर ध्यान जरूर दें। आर्थिक मामलों में आपको कुछ अनावश्यक खर्चे करने पड़ सकते हैं। सफलता मिलने के योग हैं।

धनु — आज आपको विरोधियों से सावधान रहना होगा। आर्थिक मामलों में सफलता प्राप्त हो सकती है। वाणी और व्यवहार के चलते आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। धन के मामले में ससुराल पक्ष से सहयोग और लाभ मिलने के संकेत हैं। स्वास्थ्य पर ध्यान दें।

मकर — धैर्य के साथ काम करने से आपके जरूरी काम समय पर पूरे होंगे। नौकरी करने वालों को भी सफलता मिलने के संकेत हैं। कोई उपहार या विशेष सम्मान भी प्राप्त हो सकता। दूसरों से सहयोग मिलने से भी मन प्रसन्न रहेगा।

कुंभ — राजनीति के क्षेत्र में किए गए प्रयासों से आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। कार्यक्षेत्र में पद और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आर्थिक मामलों में बजट बनाकर खर्चे करना बेहतर रहेगा। आपकी मुलाकात किसी घनिष्ठ मित्र से भी हो सकती है।

मीन — आज व्यवसाय के मामले में दिन अच्छा रहने के आसार हैं। लाभ कमाने के मौके मिल सकते हैं। प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। किसी समस्या या विवाद से भी छुटकारा मिल सकता है। कार्यक्षेत्र में किसी कार्य के पूरे होने से आपकी सराहना की जाएगी।

सुडोकू-75

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

	7	1				4		3
			2			7		
5	6			1		9		
9		6		3				8
		4				6		
1				7				5
		7		4			2	
		2			5			
8					1	3	9	

सुडोकू - 74 का हल

7	8	3	4	2	9	6	1	5
5	1	2	7	6	8	4	3	9
9	4	6	3	5	1	8	2	7
6	9	5	1	4	2	3	7	8
4	3	1	8	7	6	5	9	2
8	2	7	5	9	3	1	6	4
3	5	4	9	1	7	2	8	6
2	7	8	6	3	5	9	4	1
1	6	9	2	8	4	7	5	3

यह अधिनियम अब भारतीय खेलों को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए ठोस ढांचा प्रदान करता है। इस अधिनियम में कई सकारात्मक तत्व हैं जिनमें खेल पंचाट भी शामिल है।
–अभिनव बिंद्रा, पूर्व ओलंपिक चैंपियन

स्टेडियम

अयोध्या, गुरुवार, 21 अगस्त 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

जम्पा को आईसीसी ने लगाई फटकार

दुबई। ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी एडम जम्पा को मंगलवार को केर्न्स में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले वनडे के दौरान आईसीसी आचार संहिता के लेवल 1 के उल्लंघन के लिए फटकार लगाई गई है। जम्पा को खिलाड़ियों और खिलाड़ी सहयोगी स्टाफ के लिए आईसीसी के अनुच्छेद 2.3 का उल्लंघन करते पाया गया, जो अंतर्राष्ट्रीय मैच के दौरान सुनाई देने वाली अश्लीलता के प्रयोग से संबंधित है। जम्पा के अनुशासनात्मक रिकॉर्ड में एक डिमेरिट अंक जोड़ा गया है, जो 24 महीने की अवधि में उनका पहला अपराध था।

अमेरिकी लीग व सऊदी क्रिकेट के बीच करार

ह्यूस्टन। सऊदी अरब क्रिकेट महासंघ (एसएसीएफ) और डलास स्थित राष्ट्रीय क्रिकेट लीग (एनसीएल) ने 2028 में लॉस एंजिल्स में होने वाले ओलंपिक खेलों को ध्यान में रखते हुए जमीनी स्तर पर क्रिकेट को मजबूत करने और खिलाड़ियों के लिए सुगम राह तैयार करने के लिए साझेदारी की घोषणा की है। लॉस एंजिल्स ओलंपिक खेलों से क्रिकेट 128 वर्ष बाद इस खेल महाकुंभ में वापसी करेगा। यह साझेदारी स्कूल और सामुदायिक कार्यक्रमों, कोचिंग और अंपायरिंग प्रमाणन, तकनीकी विशेषज्ञता के आदान-प्रदान और उत्तरी अमेरिका में एनसीएल कार्यक्रमों के माध्यम से सऊदी अरब के खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर केंद्रित होगा। इनमें कॉलेजिएट क्रिकेट लीग और पाथ टू क्रिकेट प्रो टैलेंट हंट शामिल हैं, जिनका उद्देश्य अगली पीढ़ी के पेशेवर खिलाड़ियों को तैयार करना है।

सिनर यूएस ओपन मिश्रित युगल से हटे

न्यूयॉर्क। इटली के दिग्गज टेनिस खिलाड़ी जैनिक सिनर बीमारी का हवाला देते हुए सिनसिनाटी ओपन के फाइनल मैच से रिटायर होने के बाद यूएस ओपन मिश्रित युगल से अपना नाम वापस ले लिया है। यूएस ओपन 2025 ने मंगलवार को पुष्टि की कि जैनिक सिनर ने कैटरीना सिनियाकोवा के साथ अपने निर्धारित मिश्रित युगल के पहले दौर से नाम वापस ले लिया है। सिनर और सिनियाकोवा की जोड़ी को लुई आर्मस्ट्रांग स्टेडियम में बेलिंडा बेनसिक और अलेक्जेंडर ज्वेरेव की मिश्रित युगल जोड़ी से मुकाबला करना था लेकिन सिनर के इस टूर्नामेंट से हटने के बाद अब उनकी जगह वैकल्पिक टीम में डेनियल कॉलिन्स और क्रिश्चियन हैरिसन को जगह दी गई है।

महिला चैंपियनशिप में भारत ने नेपाल को हराया

थिम्पू। भारत ने नीरा चानू लोंगजैम, अभिष्टा बेसनेट और अनुष्का कुमारी के दो-दो गोल की मदद से सैफ अंडर-17 महिला चैंपियनशिप के अपने पहले मैच में नेपाल को 7-0 से रौंद दिया। भारत की ओर से नीरा (25वें और 56वें मिनट), अभिष्टा (16वें और 41वें मिनट) और अनुष्का (37वें और 62वें मिनट) ने दो-दो गोल दागे जबकि कप्तान जूलन नोंगमेथेम ने पहले हाफ के इंजरी टाइम में एक गोल किया। भारतीय टीम मध्यांतर तक 5-0 से आगे थी।

कोचिंग में हाथ आजमाना चाहते हैं पूर्व गेंदबाज ब्रॉड

लंदन, एजेंसी

इंग्लैंड के पूर्व तेज गेंदबाज स्टुअर्ट ब्रॉड कोच की भूमिका निभाने की योजना बना रहे हैं जहां वह एक दिन जोफ्रा आर्चर और जिमी एंडरसन जैसे गेंदबाज तैयार कर सकें।

टेस्ट क्रिकेट में एंडरसन के बाद सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले ब्रॉड ने कहा कि उन्होंने इंग्लैंड क्रिकेट टीम के प्रबंध निदेशक रॉब की से बात की और अंडर-17-19 खिलाड़ियों को तैयार करने की इच्छा व्यक्त की है। टेस्ट क्रिकेट में 604 विकेट लेने वाले ब्रॉड ने कहा, निश्चित रूप से मैं कोचिंग से जुड़ना चाहता हूं। मैंने रॉब से बात की कि जब कार्यक्रम अनुकूल हो तो मैं इंग्लैंड की टीम में युवा गेंदबाजों के साथ काम करना चाहता हूं। उन्होंने कोचिंग में कदम रखने के लिए कोई समयसीमा तय नहीं की है, लेकिन उम्मीद है कि वह अगले साल की शुरुआत में कोचिंग से जुड़ सकते हैं। ब्रॉड के लिए कोचिंग नई चीज नहीं है। वह लॉर्ड्स में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल से पहले दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेट टीम के गेंदबाजी सलाहकार थे।

प्रस्तावित प्रतिबंध से हो सकता है क्रिकेट उद्योग को नुकसान

नई दिल्ली, एजेंसी

ऑनलाइन गेमिंग विधेयक

लोकसभा में पेश ऑनलाइन गेमिंग संवर्धन एवं विनियमन विधेयक वास्तविक धन वाले ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म का अंत कर सकता है, जिनकी भारतीय खेलों, विशेषकर क्रिकेट के प्रायोजन बाजार में हिस्सेदारी है। इसका उद्देश्य तेजी से बढ़ते उद्योगों में से एक को विनियमित करना है जो ई-स्पोर्ट्स जगत के लिए सुखद खबर है। लेकिन अरबों डॉलर के फैंटेसी गेमिंग उद्योग के राजस्व में भारी गिरावट देखी जा सकती है, जिसमें क्रिकेट के प्रायोजन में बड़ी रकम खर्च करने वाली कंपनियां हैं।

एक शृंखलाबद्ध प्रतिक्रिया के रूप में यह खेल प्रायोजन बाजार को भी प्रभावित कर सकता है जिसमें व्यक्तिगत खिलाड़ियों का प्रायोजन और कबड्डी तथा फुटबॉल जैसे खेलों की फ्रैंचाइजी आधारित घरेलू लीग शामिल हैं। विधेयक में एक नियामक संस्था बनाने की बात है जो ई-स्पोर्ट्स, एजुकेशनल गेमिंग, सोशल और कैजुअल गेमिंग और पैसे के वास्तविक लेनदेन की गेमिंग चार विविध क्षेत्रों को देखेगी। दस्तावेज के अनुसार इनमें से 'ऑनलाइन मनी गेम्स' पर प्रतिबंध लगेगा। 'प्रतिबंध' अनुच्छेद के अनुसारः कोई व्यक्ति ऑनलाइन मनी गेम और गेमिंग सेवा की पेशकश में सहायता, प्रोत्साहन, प्रेरित करने या अन्यथा इसमें शामिल नहीं होगा। कोई भी बैंक, वित्तीय संस्थान, या वित्तीय लेनदेन या धन के प्राधिकरण की सुविधा देने वाला कोई व्यक्ति किसी भी ऑनलाइन मनी गेमिंग सेवा के भुगतान के लिए धन के किसी भी लेनदेन या प्राधिकरण में संलग्न नहीं होगा, सहायता नहीं करेगा, प्रेरित नहीं करेगा या अन्यथा सुविधा नहीं देगा। सरकार स्पष्ट करती है कि वास्तविक धन वाले ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म से कई सामाजिक समस्याएं पैदा हो रही हैं और इसके लिए किसी प्रकार के नियमन की आवश्यकता है।

विधेयक से सिकुड़ सकता है व्यक्तिगत प्रायोजन बाजार

क्रिकेट ऐसा खेल है, जिसमें वास्तविक धन की गेमिंग का चलन काफी बढ़ गया है और भारतीय टीम का टाइटल प्रायोजक ड्रीम 11 है। वहीं इंडियन प्रीमियर लीग का आधिकारिक फैंटेसी स्पोर्ट्स भागीदार वास्तविक धन वाला ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म 'माई11 सर्कल' है। ड्रीम 11 ने भारतीय टीम के टाइटल अधिकार 44 मिलियन डॉलर (358 करोड़ रुपये) में खरीदे। माई11 सर्कल ने आईपीएल फैंटेसी गेमिंग अधिकार पांच वर्षों के लिए 625 करोड़ रुपये (125 करोड़ रुपये प्रति वर्ष) में खरीदे। शीर्ष क्रिकेटरों (पूर्व और वर्तमान) के कई वास्तविक धन वाले गेमिंग प्लेटफार्म के साथ विज्ञापन करार हैं। खेल वकील विदुषपत सिंघानिया ने कहा कि भारतीय क्रिकेट और उसकी संपत्तियों के लिए प्रायोजकों की कमी नहीं होगी। इस विधेयक से व्यक्तिगत प्रायोजन बाजार सिकुड़ सकता है। फैंटेसी गेम्स सब्सक्रिप्शन आधारित मॉडल हैं। आप गेमिंग ऐप के लिए 100 रुपये का भुगतान करते हैं और फैंटेसी गेमिंग में अपने कौशल को देखते हैं। लेकिन वास्तविक धन वाली गेमिंग इस विधेयक के अनुसार प्रतिबंधित है जिसमें पैसे देकर कमाई की जाती है।

वनडे रैंकिंग में तीसरे स्थान पर खिसके कुलदीप

यादव के अलावा रविंद्र जडेजा एकमात्र ऐसे भारतीय जो गेंदबाजों की सूची में शीर्ष 10 में शामिल

दुबई, एजेंसी

भारत के कलाई के स्पिनर कुलदीप यादव बुधवार को जारी गेंदबाजों की नवीनतम आईसीसी एकदिवसीय रैंकिंग में तीसरे स्थान पर खिसक गए जबकि दक्षिण अफ्रीका के स्पिनर केशव महाराज शीर्ष पर हैं। महाराज ने केर्न्स में तीन मैच की शृंखला के पहले एकदिवसीय मैच में अपनी टीम को ऑस्ट्रेलिया पर 98 रन से जीत दिलाने के बाद शीर्ष स्थान हासिल किया।

मैच के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुने गए बाएं हाथ के 35 वर्षीय स्पिनर महाराज ने 33 रन देकर पांच विकेट चटकाए। उन्होंने कुलदीप और श्रीलंका के महेश तीक्षणा को पीछे छोड़ते हुए शीर्ष स्थान हासिल किया। महाराज इससे पहले नवंबर और दिसंबर 2023 में कुछ समय के लिए शीर्ष पर थे। कुलदीप के अलावा रविंद्र जडेजा एकमात्र भारतीय गेंदबाज हैं जो गेंदबाजों की सूची में शीर्ष 10 में शामिल हैं। भारतीय टीम ने चैंपियन्स ट्रॉफी में खिताबी जीत के बाद से कोई एकदिवसीय मैच नहीं खेला है। वेस्टइंडीज के तेज गेंदबाज जेडन सील्स भी गेंदबाजी रैंकिंग में बड़ी छलांग लगाने में सफल रहे।

784 अंक के साथ शीर्ष पर काबिज शुभमन गिल

पुरुषों की बल्लेबाजी रैंकिंग में शुभमन गिल 784 अंक के साथ शीर्ष पर बने हुए हैं। श्रेयस अय्यर छठे स्थान के साथ शीर्ष 10 में शामिल अन्य भारतीय बल्लेबाज हैं। पाकिस्तान के खिलाफ आखिरी वनडे में नाबाद 120 रन बनाने वाले वेस्टइंडीज के कप्तान शाई होप दो पायदान ऊपर चढ़कर नौवें स्थान पर हैं जबकि एडेन मार्करम (चार पायदान ऊपर चढ़कर 21वें स्थान पर), तेम्बा बावुमा (पांच पायदान ऊपर चढ़कर 23वें स्थान पर) और मिचेल मार्श (छह पायदान ऊपर 48वें स्थान पर) को भी रैंकिंग में फायदा हुआ है।

टी-20 में अभिषेक और तिलक शीर्ष दो स्थानों पर

पुरुषों की टी-20 अंतर्राष्ट्रीय रैंकिंग में भारत के अभिषेक शर्मा और तिलक वर्मा शीर्ष दो स्थानों पर बने हुए हैं। कप्तान सूर्यकुमार यादव छठे और यशस्वी जायसवाल 10वें स्थान पर हैं। दक्षिण अफ्रीका के डेवाल्ड ब्रेविस सुधार जारी रखते हुए नौ स्थान की छलांग लगाकर 12वें स्थान पर पहुंच गए हैं जबकि ऑस्ट्रेलिया के मार्श और ग्लेन मैक्सवेल क्रमशः चार और 10 स्थान की छलांग लगाकर 25वें और 30वें स्थान पर हैं। टी-20 अंतर्राष्ट्रीय गेंदबाजी रैंकिंग में ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज नाथन एलिस (तीन स्थान ऊपर चढ़कर नौवें स्थान पर) और जोश हेजलवुड (दो स्थान ऊपर चढ़कर 18वें स्थान पर) ने महत्वपूर्ण सुधार किया है जबकि दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाज कागिसो रबाडा 44वें स्थान से 37वें स्थान पर पहुंच गए।

- कप्तान सूर्यकुमार छठे व यशस्वी 10वें स्थान पर काबिज

उन्होंने पाकिस्तान के खिलाफ तीन मैच की श्रृंखला के आखिरी मैच में 18 रन देकर छह विकेट लिए थे। वह 15 पायदान ऊपर चढ़कर 18वें स्थान पर पहुंच गए। पाकिस्तान के लेग स्पिनर अबरार अहमद (15 पायदान के फायदे से 39वें स्थान पर) और वेस्टइंडीज के ऑफ स्पिनर रोस्टन चेस (पांच पायदान के फायदे से 58वें स्थान पर) भी रैंकिंग में आगे बढ़ने वाले गेंदबाजों में शामिल हैं।

गुकेश ने अब्दुसत्तोरोव पर जीत से की वापसी

सेंट लुई (अमेरिका), एजेंसी

सिंकफील्ड कप:

विश्व चैंपियन डी गुकेश ने शुरुआती दौर की असफलता को पीछे छोड़ते हुए सिंकफील्ड कप शतरंज टूर्नामेंट के दूसरे दौर में उज्बेकिस्तान के पूर्व विश्व रैपिड चैंपियन नोडिरबेक अब्दुसत्तोरोव पर जीत दर्ज की। गुकेश को हराने वाले आर प्रज्ञाननंदा ने दूसरे दौर में अमेरिका के फैबियानो कारूआना के साथ अंक बांटे।

एक अन्य मैच में फ्रांस के अलीरेजा फिरोजा ने पोलैंड के डूडा जान-क्रिज़्सटॉफ़ को हराया। अमेरिका के लेवोन अरोनियन ने हमवतन सैमुअल सेवियन के साथ ड्रॉ खेला और संयुक्त बढ़त बनाए रखी। एक अन्य अमेरिकी वेस्ली सो ने 10 खिलाड़ियों के 3,75,000 डॉलर इनामी टूर्नामेंट में फ्रांस के मैक्सिम वाचियर-लाग्रेव के साथ ड्रॉ खेला। अभी सात दौर का खेल बाकी है तब प्रज्ञाननंदा, अरोनियन और फिरोजा 1.5 अंकों के साथ संयुक्त बढ़त पर हैं। गुकेश, कारूआना, वेस्ली सो, सेवियन व वाचियर-लाग्रेव संयुक्त चौथे स्थान पर हैं। डूडा आधे अंक के साथ नौवें, जबकि अब्दुसत्तोरोव दूसरी बाजी हारने के बाद खाता नहीं खोल पाए हैं।

क्लच शतरंज : आनंद कास्पोरोव में मुकाबला

नई दिल्ली। भारत के महान खिलाड़ी विश्वनाथन आनंद अमेरिका के सेंट लुईस में अक्टूबर में होने वाले क्लच शतरंज नुमाइशी मैच में अपने चिर प्रतिद्वंद्वी रहे रूस के गैरी कास्पोरोव से खेलेंगे जबकि विश्व चैम्पियन डी गुकेश की टक्कर मैग्नस कार्लसन से होगी। कास्पोरोव और आनंद की टक्कर आखिरी बार 2021 में क्रोएशिया रैपिड और ब्लिट्ज टूर्नामेंट में जगरेब में हुई थी, जिसमें भारतीय खिलाड़ी ने जीत दर्ज की। दोनों के बीच 82 मुकाबले हो चुके हैं, जिनमें से 30 ड्रॉ रहे और जीत के मामले में कास्पोरोव का दबदबा रहा। सेंट लुईस शतरंज क्लब ने कहा कि दो पूर्व विश्व चैंपियन गैरी कास्पोरोव और विश्वनाथन आनंद विशेष क्लच शतरंज (लीजैंड्स) नुमाइशी मैच (7-11 अक्टूबर) में आमने सामने होंगे।

सौरभ और सुरूचि की जोड़ी ने जीता कांस्य

- चीनी ताइपै को 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम वर्ग में हराया
- भारतीय जोड़ी ने क्वालीफाइंग दौर में पांचवां स्थान किया हासिल

शिमकेंट (कजाखस्तान), एजेंसी

एशियाई निशानेबाजी चैंपियनशिप

सौरभ चौधरी और सुरूचि इंदर सिंह की भारतीय जोड़ी ने एशियाई निशानेबाजी चैंपियनशिप में बुधवार को चीनी ताइपै को हराकर 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम वर्ग का कांस्य पदक जीता। दोनों ने लियू हेंग यू और सियेह सियांग चेन को 17 .9 से हराया।

इससे पहले मनु भाकर ने महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में व्यक्तिगत वर्ग में कांस्य पदक जीता था। भारतीय जोड़ी ने क्वालीफाइंग दौर में पांचवां स्थान हासिल किया जब सुरूचि ने 292 और सौरभ ने 286 स्कोर किया। दोनों का कुल स्कोर 578 रहा और आठ टीमों के पदक दौड़ में प्रवेश के समय वे पांचवें स्थान पर थे। स्वर्ण पदक के लिए प्रतिस्पर्धा शीर्ष दो टीम चीन और दक्षिण कोरिया के बीच थी। इसमें चीन ने 16-12 से जीत हासिल कर पहला स्थान हासिल किया। अन्य चार टीमों ने दो कांस्य पदक के लिए प्रतिस्पर्धा की जिसमें भारत ने पहले कांस्य पदक के मुकाबले में चीनी ताइपे को हराया और दूसरे मुकाबले में ईरान ने वियतनाम को 16-8 से मात दी। इस साल चार विश्व कप पदक जीत चुकी सुरूचि ने क्वालीफिकेशन दौर में परफेक्ट 100 के साथ शुरूआत की। दूसरे में 94 और तीसरे में 98 स्कोर किया। चौधरी का स्कोर 95, 96 और 95 रहा। कांस्य पदक के लिए हुए मुकाबले में पहले 16 अंक तक पहुंचने वाली टीम जीत जाती है।

वंशिका और गेविन ने भी जीता कांस्य

जूनियर 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम स्पर्धा में वंशिका चौधरी और गेविन एंथनी की भारतीय जोड़ी ने किम येजिन और किम डूयोन की कोरियाई जोड़ी को 16-14 से हराकर कांस्य पदक जीता। भारतीय टीम क्वालीफिकेशन में 578 अंक के साथ दूसरे स्थान पर रही थी जिसमें वंशिका ने 282 और गेविन ने 296 अंक बनाए।

डाइमंड लीग फाइनल्स में जगह पक्की होने से ब्रसेल्स में नहीं खेलेंगे चोपड़ा

नई दिल्ली, एजेंसी

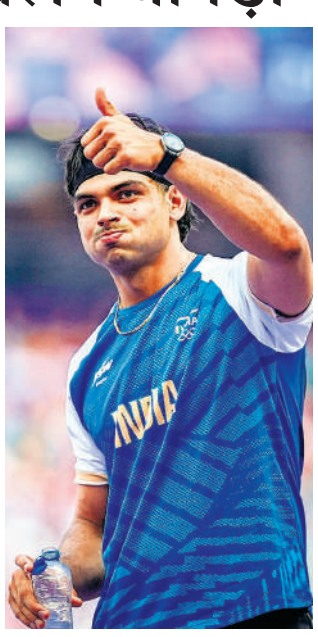

डाइमंड लीग फाइनल्स में जगह पक्की करने के बाद स्टार भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा इस प्रतिष्ठित सीरीज के शुक्रवार को बेल्जियम के ब्रसेल्स में होने वाले अंतिम चरण में हिस्सा नहीं लेंगे। डाइमंड लीग की 14 प्रतियोगिताओं में से चार में पुरुष भाला फेंक को जगह मिली है।

नीरज ने सिर्फ दो प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया, लेकिन स्विट्जरलैंड के ज्यूरिख में 28 अगस्त को होने वाले डाइमंड लीग फाइनल्स के लिए क्वालीफाई करने में सफल रहे। भारतीय खिलाड़ी ने 16 अगस्त को सिलेसिया चरण में भी हिस्सा नहीं लिया था। नीरज ने मई में दोहा डाइमंड लीग में 90.23 मीटर के प्रयास के साथ 90 मीटर का जादुई आंकड़ा पार किया था लेकिन जर्मनी के जूलियन वेबर के बाद दूसरे स्थान पर थे। उन्होंने 88.16 मीटर के प्रयास से पेरिस डाइमंड लीग का खिताब जीता। ब्रसेल्स चरण के बाद शीर्ष छह खिलाड़ी ज्यूरिख में होने वाले डाइमंड लीग फाइनल्स में जगह बनाएंगे। नीरज ने पिछला टूर्नामेंट पांच जुलाई को बेंगलुरु में एनसी क्लासिक के रूप में खेला था जहां उन्होंने 86.18 मीटर के साथ अपनी मेजबानी में टूर्नामेंट जीता था। नीरज ने मौजूदा सत्र में छह प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया जिसमें से चार में उन्होंने खिताब जीता। चोपड़ा तोक्यो में 13-21 सितंबर तक होने वाली विश्व चैंपियनशिप में अपने खिताब का बचाव करेंगे।

एमबाप्पे ने पेनल्टी को गोल में बदला, रियाल मैड्रिड जीता

मैड्रिड, एजेंसी

काइलियन एमबाप्पे ने रियाल मैड्रिड के साथ अपने दूसरे सत्र की शानदार शुरुआत करते हुए पेनल्टी को गोल में बदला, जिससे उनकी टीम ने मंगलवार को स्पेनिश फुटबॉल लीग ला लिगा के अपने पहले मैच में ओसासुना पर 1-0 से जीत दर्ज की।

पिछले सत्र में रियाल मैड्रिड से जुड़ने वाले एमबाप्पे ने 51वें मिनट में पेनल्टी किक को गोल में बदलकर मेज़बान टीम को जीत दिलाई। एमबाप्पे ने इस तरह से रियाल मैड्रिड के साथ अपना अच्छा प्रदर्शन जारी रखा। उन्होंने पिछले सत्र में क्लब की तरफ से सर्वाधिक गोल किए थे।

रियाल मैड्रिड ने इस तरह से अपने चिर प्रतिद्वंदी बार्सिलोना की तरह नए सत्र की जीत से शुरुआत की। बार्सिलोना ने शनिवार को मालोर्का पर 3-0 की आसान जीत दर्ज की थी। पिछले सत्र में रियाल मैड्रिड स्पेनिश लीग में बार्सिलोना के बाद दूसरे स्थान पर रहा था। ओसासुना नौवें स्थान पर रहा था।

सालाह-कैल्डेन्टी को इंग्लिश फुटबॉल के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी

लंदन। लिवरपूल के फॉरवर्ड मोहम्मद सालाह और आर्सेनल की मिडफील्डर मैरियोना कैल्डेन्टी को मंगलवार को प्रोफेशनल फुटबॉलर्स एसोसिएशन पुरस्कारों में पिछले सत्र के लिए इंग्लिश फुटबॉल में वर्ष का सर्वश्रेष्ठ पुरुष और महिला खिलाड़ी चुना गया। इस पुरस्कार के लिए इंग्लैंड में खेलने वाले पेशेवर खिलाड़ी मतदान करते हैं। सालाह ने रिकॉर्ड तीसरी बार यह पुरस्कार जीता है। मिस्र के इस अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी ने प्रीमियर लीग में 29 गोल किए, जिसकी बदौलत लिवरपूल ने रिकॉर्ड 20वीं बार चैंपियनशिप जीती। महिला वर्ग में 29 वर्षीय कैल्डेन्टी ने आर्सेनल के साथ अपने पहले सत्र में शानदार प्रदर्शन किया और सभी प्रतियोगिताओं में 19 गोल किए।

भारतीय हॉकी | **बिहार में होगा टूर्नामेंट, विजेता को मिलेगा एफआईएच पुरुष विश्व कप में सीधा प्रवेश**

एशिया कप के लिए टीम में लाकड़ा और दिलप्रीत

नई दिल्ली, एजेंसी

बिहार में होने वाले एशिया कप के लिए 18 सदस्यीय भारतीय टीम का ऐलान बुधवार हुआ, जिसमें फॉरवर्ड शिलानंद लाकड़ा और दिलप्रीत सिंह को जगह दी गई है। टूर्नामेंट 29 अगस्त से 7 सितंबर तक होगा, जिसके विजेता को एफआईएच पुरुष विश्व कप में सीधे प्रवेश मिलेगा जो 14-30 अगस्त तक नीदरलैंड और बेल्जियम में होना है।

ड्रैग फ्लिकर हरमनप्रीत सिंह टीम के कप्तान होंगे। राजिंदर सिंह, लाकड़ा और दिलप्रीत आस्ट्रेलिया दौरे पर भारतीय टीम का हिस्सा थे। राजिंदर को शमशेर सिंह की जगह चुना गया जबकि लाकड़ा ने हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय हॉकी को अलविदा कहने वाले ललित उपाध्याय की जगह ली है। दिलप्रीत को गुरजंत सिंह पर तरजीह मिली है। स्ट्राइकर ललित उपाध्याय ने जून में एफआईएच प्रो लीग के यूरोप चरण के बाद अंतर्राष्ट्रीय हॉकी से संन्यास ले लिया था। भारत को एशिया कप में जापान, चीन और कजाखस्तान के साथ पूल ए मिला है।

भारतीय टीम 29 अगस्त को चीन के खिलाफ पहला मैच खेलेगी। इसके बाद 31 अगस्त को जापान और एक सितंबर को कजाखस्तान से खेलना है। गोलकीपिंग का दारोमदार कृशन बी पाठक और सूरज करकेरा पर होगा। डिफेंस में हरमनप्रीत और अमित रोहिदास के साथ जरमनप्रीत सिंह, सुमित, संजय और जुगराज सिंह हैं। मिडफील्ड में मनप्रीत सिंह, विवेक सागर प्रसाद, राजिंदर, राज कुमार पाल और हार्दिक सिंह होंगे। फॉरवर्ड पंक्ति में मनदीप सिंह, अभिषेक, सुखजीत सिंह, लाकड़ा और दिलप्रीत जिम्मा संभालेंगे। नीलम संजीप सेस और सेल्वम कार्ति को रिजर्व में रखा गया है। टीम चयन के बारे में मुख्य कोच क्रेग फुल्टोन ने कहा कि हमने अनुभवी टीम चुनी है। विश्व कप क्वालीफिकेशन को देखते हुए एशिया कप हमारे लिये महत्वपूर्ण है लिहाजा हमें दबाव में अच्छा खेलने वाले खिलाड़ी चाहिए।

भारतीय हॉकी टीम

गोलकीपर : सूरज करकेरा, कृशन बी पाठक
डिफेंडर : हरमनप्रीत सिंह, अमित रोहिदास, जरमनप्रीत सिंह, सुमित, संजय और जुगराज सिंह **मिडफील्ड :** मनप्रीत सिंह, विवेक सागर प्रसाद, राजिंदर, राज कुमार पाल और हार्दिक सिंह **फॉरवर्ड :** मनदीप सिंह, अभिषेक, सुखजीत सिंह, शिलानंद लाकड़ा और दिलप्रीत सिंह **रिजर्व खिलाड़ी :** नीलम संजीप सेस और सेल्वम कार्ति।